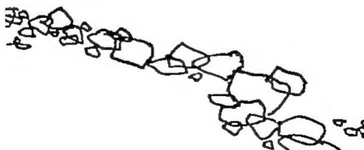
ঘরণী





ेन्द्र कुमार भट्टाचार्य



प्रकाशक
नेशनल पब्लिशिंग हाउस
२१-ए, 'चन्द्रलोक' जवाहरनगर, दिल्ली-७
विक्रय-केन्द्र नई सड़क, दिल्ली ६

प्रथम संस्करण, नवम्बर, १९६५

मूल्य : पाँच रुपये

मुद्रक :
पुरी प्रिंटर्स,
करोल बाग,
नई दिल्ली-५



पहला भाग

मैं तैयार हो रहा था। विमला अभी-अभी बता गई थी कि वर के पिता को नये वस्त्र पहन कर जाना चाहिये। पत्नी द्वार पर आम के पत्तों की वन्दनवार सजा रही थी। कोई पड़ोसिन नहीं आई थीं। मंगलकार्य के लिए उन्हें बुलावा भेजा गया था। वे नहीं आईं। कारण—हम व्रात्य जो हैं।

जोरण[1] के लिए विमला का पति मेरा विदेशी दामाद आर्थेई वस्त्र अलंकार आदि जुटा कर लाया था। उनको स्टेशन से लाने के लिए आर्थेई ने एक मोटर की व्यवस्था की थी। गाड़ी आने में अभी चार घंटे शेष थे। समधी को कहला दिया था कि जोरण दोपहर को भेजा जायगा। मेरा विचार था जोरण के लिए मैं और विमला ही जायें। गिनती के लोग थे। गाँव के घर से कोई समाचार नहीं मिला था, और न ही मित्रों और कुटुम्ब के लोगों से। मेरे विवाह के समय से ही उन्होंने हमारा बहिष्कार कर दिया था। ऐसा क्या हुआ—आप यह जानने को उत्सुक होंगे। धीरज धरिये। पहले यह संस्कार सम्पन्न हो जाने दीजिये।

इसी समय दूसरे कमरे में मैंने आर्थेई और विमला की आवाज

१ जोरण—वरपक्ष की ओर से कन्या के लिए वस्त्र और अलंकार देने की प्रथा।

सुनी। पहले काम में बात करते रहे फिर स्वर में हल्की तीव्रता आ गई। दीवार के सहारे खड़े होकर मैंने उनकी बात पकड़ने की चेष्टा की लेकिन कुछ भी नहीं पकड़ पाया। अनमना-सा होकर नहाने चला गया। मैं गरम पानी से नहाता हूँ विशेष कर जाड़े में। गरम पानी नहीं रखा था। रोष से तो नहीं कहूँगा हाँ विक्षुब्ध मन से पत्नी को आवाज़ दी—

'गरम पानी कहाँ है?

क्षण भर के लिए आम के पत्ते टाँगने का काम रोककर पत्नी ने वहीं द्वार से कहा—

'क्यों टेंटुए पर ज़ोर दे रहे हो? सतराम लकड़ी फाड़ रहा है। सबर कर लो। पानी दे जायेगा।

मुझे पिताजी का स्मरण हो आया, और पितामह का भी। उन दिनों जब मैं छोटा था, देखता था कि नहाने के लिए गरम पानी देने में ज़रा भी देर हो जाती तो बस फिर क्या था गालियाँ बरस जाती थीं, माँ पर और मातामही पर भी। भाग्य से गालियाँ देना मैंने उनसे उत्तराधिकार में नहीं पाया। मन का क्षोभ मन में ही दबाकर, धोती लपेट, बिना नहाये मैं बाहर निकल आया और बैठक में चला गया।

मैंने देखा विमला अकेली है। आषेई वहाँ नहीं था। एक अख़बार पड़ा था। मैंने उठा लिया। बड़ी-बड़ी सुर्खियों में लिखा था—चीनी आक्रमण की संभावना। कौतूहल हुआ। आगे पढ़ा। उत्तर-पूर्वी सीमा पर और लद्दाख में चीनियों की सरगर्मियों में कठिनाई बढ़ती जा रही है। उन्होंने सैन्य-संख्या बढ़ा ली है। मैक-महोन सीमा रेखा के साथ-साथ ऐसी सड़कें बनाई हैं जिन पर

भारी ट्रकें और सम्प्ररवत गाड़ियाँ आ जा सकती हैं। सारे तिब्बत में हवाई अड्डों का जाल बिछा दिया है। विश्वास नहीं हुआ। अखबार फेंक दिया।

"चीनी बढ़ान के लिए यों ही झूठे भगवत्कृत खबर छापते हैं। छि !"

विमला ने मेरी ओर देखा और बोली—

'सच बात है पिताजी। झूठ क्या होगी ?"

मैं आरामकुर्सी पर बैठ गया। विमला उठ खड़ी हुई। उसका मुँह कुछ उतरा हुआ था। आश्चर्य हुआ, ऐसा क्यों ? यह तो है सदा की प्रसन्नचित्त। शरद् के आकाश की तरह निर्मल उजला रंग। प्रभात की सुनहरी धूप की तरह चमकते, हंसते होंठ। उसके मुखमण्डल पर यह मलिनता कैसी ? एक चपल तितली जैसे सहमी किसी फूल पर निस्पंद हो कर बैठ जाये।

मैंने पूछा— 'विमला खड़ी क्यों हो गई ? कुछ काम है ?

'हाँ पिताजी आंगन के कपड़ों को सहेजकर बक्स में रखना है।'

"अच्छी बात है बेटी जाओ।"

विमला चली गई।

बैठक में पिताजी का एक मनोज्ञ चित्र टँगा था। सौम्य-शान्त निष्कपट व्यक्ति। दाढ़ी-मूँछ मंडित रौबदार चेहरा। सदा मुँह से स्मित झरती रहती। एक टिपोनी[1] बाँधते और गरमी हो या सरदी शरीर पर एक गम्छे के अतिरिक्त दूसरा कोई वस्त्र नहीं

[1] टिपोनी—छोटी घुटनों तक की धोती जो घर में विशेषकर स्नान के समय पहनी जाती है।

खाते। अत्यन्त निष्ठावान् भक्त थे, तीन बार प्रसंग[1] करके ही जलपान या भात ग्रहण करते। तीन बार शादी की। दो को अपने सामने ही गंगा में प्रवाहित कर दिया। अन्त में अपनी बराबर की आयु के एक बंधु की पुत्री से गठबंधन कर लाये। ऐसी षोडशी 'माही'[2] के घर में आने के बाद पिताजी उन पर ऐसी निर्लज्जता से आसक्त हुए कि हम भाई-बहनों को कटु अनुभव हो गया कि सौतेली माँ क्या होती है। दिन भर हमें निर्दयता से हाँकती। मैं ही बड़ा और समझदार था। बाकी तीन अभी छोटे थे। मैं पढ़ता भी था और बिना अलसाये घर का कामकाज भी करता था। एक दिन बासी झाड़ू[3] को पाकघर[4] में ले जाने के अपराध में माही ने छोटे भाई बापुकण को ऐसा पीटा कि मैं सह न सका। माही को गालियाँ देकर बापुकण को छुड़ा लाया। गोधूली की बेला घर में बड़ा कोहराम मचा। तिल का ताड़ बनाकर पिताजी को कथा बताती गई। सुन कर वह मुझ पर बिगड़े बहुत बिगड़े बिगड़े ही क्या आपा खो उठे। एक नयी फाड़ी लकड़ी से मुझे धुन दिया। उसके बाद, जब मैं कुछ कहने गया तो मेरे पीछे कुल्हाड़ी लेकर लपके।

---

१ तीन बार प्रसंग—तीन बार नामकीर्तन। असम के महापुरुषिया सम्प्रदाय में जिसके प्रवर्तक श्री शंकरदेव थे दिन में तीन बार नामकीर्तन करने की प्रथा है। सवेरे, दोपहर और सूर्यास्त के समय।

२ माही—सौतेली माँ और मासी दोनों के लिए प्रयुक्त होता है।

३ बासी झाड़ू—वह झाड़ू जिससे घर का आँगन और बाहर साफ करते हैं। उसे भीतर, विशेष कर रसोई में नहीं लाते हैं।

४ पाकघर—रसोई।

उस दिन जो मैं घर से दौड़ा तो दौड़ ही गया। थोड़े दिन बाद मैं सेना में भरती हो गया।

बरसों बीत गये। मैं घर नहीं लौटा। छुट्टी भी आता तो तिनसुकिया में रह जाता गाँव नहीं आता।

पिताजी का साँस का रोग हो गया। बूढ़े होने के साथ-साथ हाथ-पाँव से भी निढाल हो गये। ऐसी अवस्था में एक दिन माँ ही घर छोड़कर महा पलायन कर गई। छोटे भाई अब तक सयाने हो गये थे। वे ही पिताजी की देखभाल करते थे। हाँ मैंने अवश्य एक काम किया। हर महीने दस-पाँच रुपये घर भेज देता।

पिछले महायुद्ध तक मैं नायक बन गया था। बरमा के घने जंगलों में अचानक छापा मारकर एक जापानी दस्ते को बन्दी बनाने के उपलक्ष्य में मुझे पुरस्कार मिला। शत्रु की गोली लगने के कारण मेरी एक टाँग में हल्की-सी लँगड़ाहट आ गई थी।

मैं मारगरीटा के हस्पताल में भरती हो गया। वहीं अकस्मात् विमला की माँ से सम्पर्क हुआ। नर्स थी बिचारी। ब्राह्मण की बेटी और बाल-विधवा। सुहाग-कली खिलने से पहले ही उजड़ गई थी। वैधव्य की निष्ठुर यंत्रणा न सह सकने के कारण डिब्रूगढ़ के नर्सों के स्कूल में भरती हो गई थी। लड़ाई छिड़ने पर हस्पताल में काम मिल गया।

जब मैं स्वस्थ होकर हस्पताल से निकला तो प्रमिला मेरे साथ थी। उसका घर तिनसुकिया के निकट था। बूढ़ी माँ का छोटा-सा घर में और कोई प्राणी नहीं था। मैं घरजँवाई

बनकर रहने लगा। एक दिन माँ ने आपत्ति की। प्रमिला ने आपत्ति को अमान्य कर दिया तो बुढ़िया अपनी बड़ी बेटा के घर चली गई।

इस तरह यहाँ धीरे-धीरे मेरा एक छोटा-सा संसार बस गया।

अब तक मैं अधेड़ हो चुका था।

एक दिन बैलगाड़ी में बैठकर पिताजी यहाँ आये। साथ में भाई भी थे। बैलगाड़ी से उतरते समय आड़ी मछली का आकार धारण करती हुई उनकी झुकी कमर और उनके रोग ग्रस्त शरीर को देखकर मेरा हृदय व्याकुल हो उठा। प्रायः बीस साल बाद उन्हें देख रहा था। मैंने चरण-स्पर्श किया। उन्होंने मेरे मस्तक पर हाथ रखा और नामोच्चार करते हुए आशीर्वाद दिया। बोले—

"बधुराम, मैं तुम्हारा घर नहीं बसा सका। तुमने अपने आप ही बसा लिया। अच्छा किया। मैं आशीर्वाद देता हूँ। बहू कहाँ है?"

प्रमिला बाहर आई। अपने अलग संस्कारों में पली वह एक स्वतंत्र विचारों वाली नारी थी। पिताजी को देखकर अभिवादन किया न आदर दिया। अविनीत भाव से दूर खड़ी रही।

यह अवहेलना मेरे भाई न देख सके।

"चलिये पिताजी। आपकी बहू ने मनुष्य के नाते भी आपका आदर-सत्कार नहीं किया। यहाँ और नहीं ठहर सकते।

पिताजी फफक-फफककर रोने लगे। मेरी आँखें भी झरने लगीं। हमारे रुदन ने प्रमिला को तनिक भी न छुआ।

निर्विकार भाव से वह घर के भीतर चली गई। पिताजी मुझे आशीर्वाद देकर गाड़ी में बैठ गये लेकिन भाइयों ने अत्यन्त तिरस्कार से कहा—

"घरजनिया"।[1]

बैलगाड़ी चली गई। मुझ में उन्हें वापस बुला लाने का साहस नहीं हुआ। बहुत दिन तक हृदय दुखता रहा। फिर पिताजी हमें छोड़ गये। उससे कुछ पहले एक फोटोग्राफर को गाँव भेजकर उनका चित्र खिंचवाया था। कलकत्ते भेजकर उसे बड़े आकार का बनवाया और यहाँ, इस बैठक में, टाँग दिया। यह चित्र आज भी ज्यों का त्यों उसी स्थान पर टँगा है। मेरे अतिरिक्त उसका मूल्य कोई नहीं समझता है।

मैं उसी चित्र के सामने खड़ा था।

पिताजी प्रशान्त मुद्रा में तम्बाकू पी रहे हैं। हठात् ऐसा लगा जैसे मुझ से कह रहे हैं—

'मुझे छोड़कर तुम्हें क्या सुख मिला मधुराम? तुम ऐसे ही गये? छोनीराम भगत का बेटा घरजँवाई बन गया!'

आँखों से ढलकी दो बूँदों को मैंने धोती के छोर से पोंछा। चित्र को प्रणाम किया और कहा—

'पिताजी एक चिलम और भर लाऊँ? पियेंगे? पी लीजिये पिताजी। आज आपके बड़े नाती रमेश की शादी है। उसे अच्छा ओहदा मिला है। मैंने तो नायब ही बनकर सब मान प्राप्त किया उसने शुरू ही सेकण्ड लेफ्टिनेन्ट से किया

१ घरजनिया—जनमिया में घरजँवाई के लिए अत्यन्त तिरस्कार सूचक शब्द।

है। हाँ पिताजी।'

इसी समय वहाँ प्रमिला आ गई। वह बोली—

"वाह, यह उसके सामने फिर पूजा शुरू हो गई? हटाइये आज आँसू भरने का दिन है? ओरण के लिए तैयार हो जाइये। नहाने का पानी रख दिया गया है।"

मुझे कोप आ गया। मैंने कहा—

'तुमने किसी दिन भी पिताजी का सेवा-सत्कार नहीं किया, प्रमिला। बेटा-बेटी तक को नहीं बताया कि उनके कोई दादा भी था। उसका जो परिणाम हुआ वह तुम्हारे सामने है। दोनों लड़के परदेसी हो गये और लड़की एक चीनी के साथ चली गई। विवाह के दिन हमारे यहाँ भी पुरखों का श्राद्ध करने की प्रथा चली आई है। हमारी सन्तान अपने दो पुरखों को भी नहीं जानती है।

अच्छा ही तो है। प्रमिला के व्यंग में चुभन थी। 'इस से उनकी कोई क्षति नहीं हुई है। सन्तान के लिए अपने माँ बाप को जानना ही पर्याप्त है। क्या आप स्वयं मुझे नौ पुरखों का नाम लेकर लाये थे? कचहरी जाकर ही तो हमारा विवाह सम्पन्न हो गया था। बस रजिस्टर करके।"

"तुम क्या कहती हो प्रमिला? जिससे यह हाड़-मांस पाया जिसका रक्त मेरी धमनियों में है जिससे यह प्राण पाये उसे मैं बिसार दूँ? कभी नहीं।'

प्रमिला चुप रही। आज विशेष दिन जो था। नहीं तो वह कहती—'सदा यही सब सोचते रहते हो, इसीलिए तो रक्त-चाप बढ़ जाता है। जो चला गया उसके पीछे इतना सिर

सपाना क्या जरूरी है ?'

ठीक है, किन्तु जो जीवित हैं क्या उनका मृत के प्रति कोई कर्तव्य नहीं है ? तो फिर क्यों वश गोष्ठी गोत्र पितृ पितामह-प्रपितामह—मनुष्य इन सब का क्यों स्मरण करते हैं ? क्या ये सब निरर्थक हैं ? मिथ्या है ? समाज का गठन कैसे होता है ? क्या वह उस माला की तरह नहीं है जिसे स्मृतियों के अदृश्य सूत्र में बाँध रखा है ? किन्तु—ऐसा मैं बराबर कहता मानता आया हूँ—प्रमिला एक राक्षसी है। अपनी सन्तान के अतिरिक्त उसे और किसी के लिए मोह-ममता नहीं है। पीहर के परिवार के साथ वह कोई सम्पर्क नहीं रखती। बस समाज के विरुद्ध एक भयानक प्रतिघात का भाव अपने अन्तर में पालती रहती है। क्या इसी समाज ने उसे विधवा नहीं बनाया था ? उसके माथे का सिंदूर नहीं पोंछ दिया था ? ब्राह्मण-कुल में जन्म लेकर वह ब्राह्मणों के समाज का बन्धन नहीं मानती है। उसकी अवज्ञा, अवहेलना करने में उसे सुख-सन्ताप मिलता है। हमारा तो हिन्दू कहारियों का समाज है। इसमें किसी स्त्री को विधवा होने पर जीवन भर वैधव्य की यंत्रणा नहीं भोगनी पड़ती है। वह दूसरी बार हाथ पीले कर सकती है।

मैं स्नान करने चला गया। निवाया पानी था। हम कहते हैं—'कुकुमिया'—अंडे की जरदी जितना गरम। खिड़की से अनूवर की शीत-सनी हवा का झोंका आया। मुँगे यौस जसा मेरा शरीर हो गया था। टूटी टाँग में मांस का एक लोथड़ा सटक आया था। गाँव के एक कच्चे, मिट्टी के घर में मेरा जन्म हुआ था। जब बड़ा हुआ तो मिट्टी का दरस-परस

मेरा जाना-पहचाना था। उसकी सौंधी गंध मेरी नाक में बसी हुई थी।

मैं विचारों में खो गया।

शैशव के चित्र उभरने लगे। वही रंग वही गंध। मुझे याद आया वह जुहाल-बाम[1] जहाँ आग जलाई जाती थी और जलती रहती थी। वह हमारे जीवन का केन्द्र-बिन्दु था। जहाँ मैं पिताजी के लिए चिलम भरता था जहाँ माँजी मुझे गालियाँ देती थी—'तू हैजे से मरे'। जहाँ पिताजी हमें कहानियाँ सुनाते थे—बूढ़ा-बूढ़ी की कछारी कहानी, बाणेश्वर अनिरुद्ध की कहानी। कितनी बातें जानते थे पिताजी! अपने नगर की और समाज की बातें। यहाँ, इस प्रदेश में कभी बारहभुइयाँ, भटक, चेतिया कछारी लोगों का राज्य था। उनके अवशेष भूगर्भ में छिपे हैं। उन्हें कौन खोदेगा कौन देखेगा कौन समझेगा? पिताजी और उन जैसे लोगों से ही तो हम उस युग का इतिहास जान सकते हैं।

वह जुहाल-बाम जहाँ एक दिन हमारे पूर्वज शराब बनाते थे और सूअर का मांस भूनते थे, वहाँ आज सवेरे से साँझ तक तीन बार नाम-कीर्तन होता है। विवाहादि के अवसर पर बड़े बूढ़े एकत्र होते हैं। कितनी मधुर स्मृतियों का आदान प्रदान होता है। इन्हीं सब बातों में तो जीवन का रस है। ऐसे मधुर बंधन ही तो देहात के जीवन को एक सूत्र में बाँधते हैं।

---

१ जुहाल-बाम—असम के देहात में, विशेषकर वहाँ के पहाड़ी क्षेत्रों में हर घर में एक स्थान होता है जहाँ आग जलती रहती है। वहाँ के समाज का जीवन इसके चारों ओर केन्द्रित होता है।

और वह गाँव का घर—जो मेरा जन्मस्थान था, जिसके साथ हमारे पूर्वजों की स्मृतियाँ जुड़ी हुई थीं जहाँ वे रहे-बसे जहाँ उनका अन्तिम संस्कार हुआ—वहीं उसी घर में तो मेरी जड़ें हैं।

मैं अपने ऊपर पानी डालना भूल गया।

दरवाज़े पर आघात हुआ। पत्नी का स्वर सुनाई दिया।

"कहा सुने !"

मैं चुप रहा।

"वालिम, क्या हुआ है आपको ?"

"कुछ नहीं।

प्रमिला ने फिर दरवाजा पीटा। रोज वह ऐसे ही दरवाजा पीटती है। स्नान के समय को मैं सदा अपना, निजी मानता हूँ। एकान्त। स्नानघर मेरा चिन्तनघर है। वहाँ मैं अतीत के साथ योगायोग करता हूँ। कपड़े पहनकर मैं ऐसा करने में अपने को असमर्थ पाता हूँ।

इस बार दरवाज़े पर प्रबल प्रहार हुआ।

"सुनते हैं, प्रशान्त का पत्र आया है।"

"क्या लिखा है ?'

"बाहर आयें तो बताऊँ। बिना श्रीमुख देखे नहीं बताऊँगी।"

शान्ति भंग हो गई थी।

जल्दी जल्दी शरीर पर पानी डाला। अब तक ठंडा हो गया था। स्नान के समय पिताजी जो पाठ करते थे वही मैंने सीखा था। आज उसमें बीच में विघ्न पड़ गया। मुँह में एक

मेरा जाना-पहचाना था। उसकी सौंधी गंध मेरी नाक में बसी हुई थी।

मैं विचारों में खो गया।

शैशव के चित्र उभरने लगे। वही रंग वही गंध। मुझे याद आया वह जुहाल-घर[1] जहाँ आग जलाई जाती थी और जलती रहती थी। वह हमारे जीवन का केन्द्र-बिन्दु था। जहाँ मैं पिताजी के लिए चिलम भरता था जहाँ माँही मुझे गालियाँ देती थी—'तू हैजे से मरे'। जहाँ पिताजी हमें कहानियाँ सुनाते थे—बूढ़ा-बूढ़ी की कछारी कहानी ऊषकर अनिरुद्ध की कहानी। कितनी बातें जानते थे पिताजी! अपने नगर की और समाज की बातें। यहाँ इस प्रदेश में, कभी बारहभुइयाँ, मटक, चेतिया कछारी लोगों का राज्य था। उनके अवशेष भूगर्भ में छिपे हैं। उन्हें कौन खोदेगा, कौन देखेगा कौन समझेगा? पिताजी और उन जैसे लोगों से ही तो हम उस युग का इतिहास जान सकते हैं।

वह जुहाल-घर जहाँ एक दिन हमारे पूर्वज शराब बनाते थे और सूअर का मांस भूनते थे वहाँ आज सवेरे से साँझ तक तीन बार नाम-कीर्तन होता है। विवाहादि के अवसर पर बड़े-बूढ़े एकत्र होते हैं। कितनी मधुर स्मृतियों का आदान प्रदान होता है। इन्हीं सब बातों में तो जीवन का रस है। ऐसे मधुर बंधन ही तो देहात के जीवन को एक सूत्र में बाँधते हैं।

---

१ जुहाल-घर—असम के देहात में विशेषकर वहाँ के पहाड़ी लोगों में हर घर में एक स्थान होता है जहाँ आग जलती रहती है। वहाँ के समाज का जीवन इसके चारों ओर केन्द्रित होता है।

और वह गाँव का घर—जो मेरा जन्मस्थान था, जिसके साथ हमारे पूर्वजों की स्मृतियाँ जुड़ी हुई थीं, जहाँ वे रहे-बसे, जहाँ उनका अन्तिम संस्कार हुआ—वहीं उसी घर में तो मेरी जड़ें हैं।

मैं अपने ऊपर पानी डालना भूल गया।

दरवाज़े पर आघात हुआ। पत्नी का स्वर सुनाई दिया।

'नहा चुके ?

मैं चुप रहा।

'बोलिये, क्या हुआ है आपको ?'

'कुछ नहीं।'

प्रमिला ने फिर दरवाज़ा पीटा। रोज़ वह ऐसे ही दरवाज़ा पीटती है। स्नान के समय को मैं सदा अपना, निजी मानता हूँ। एकान्त। स्नानघर मेरा चिन्तनघर है। वहाँ मैं अतीत के साथ मेलजोल करता हूँ। कपड़े पहनकर मैं ऐसा करने में अपने को असमर्थ पाता हूँ।

इस बार दरवाज़े पर प्रबल प्रहार हुआ।

"सुनते हैं, प्रशान्त का पत्र आया है।"

"क्या लिखा है ?"

'बाहर आयें तो बताऊँ। बिना श्रीमुख देखे नहीं बताऊँगी।'

शान्ति भंग हो गई थी।

जल्दी-जल्दी शरीर पर पानी डाला। अब तक ठंडा हो गया था। स्नान के समय विचारों को पाठ करते थे वहीं मैंने खोया था। आज उसके बीच में विघ्न पड़ गया। मुँह से एक

हाइ-लग[1] गीत आया। वैष्णव चोले के भीतर मन मेरा अब भी निश्चय ही कछारी था। बदन अगोछ कर कपड़े पहने और बाहर आया। स्नानघर से निकलते ही लगा जैसे कि संसार के सारे संतापों ने मुझे आ घेरा हो। कैसी राक्षसी मूर्ति हैं, ये संताप। सोने के कमरे में जाकर कंघी की। आज प्रमिला ने कमरे को नये ढंग से सजाया था। बीच में एक छोटी-सी मेज पर बुद्ध की प्रतिमा रखी थी। आप बुद्ध को मानते हैं? मैं नहीं मानता हूँ। कोई सैनिक नहीं मानता है। किन्तु बुद्ध की प्रतिमा से आज मुझे ईर्ष्या नहीं हुई। वह शान्त, समाहित मूर्ति मुझे बहुत प्रिय लगी। बुद्ध के समान बनने के लिए स्नानघर म मुझे कितने दिन बिताने होंगे किन्तु क्या फिर भी मैं उन जैसा बन सकूँगा? कह नहीं सकता।

"तैयार हो गये? प्रशान्त ने बड़ी भयानक बात लिखी है।"

मद्दी का कुर्ता पहनकर मैं बठक में आया। एक सोफ़े पर बैठ गया। नीची गोल मेज पर तीन बेलि[2] के फूल रखे थे। इतने सुन्दर, जैसे कह रहे हों—

'हमें देखो हमें देखो हमें देखते ही रहो।

मैंने एक को उठाया और सूँघ लिया।

प्रमिला तमक उठी। "क्या मुसीबत है। आप जानते हैं कितने जतन से ये फूल आये हैं बिमला के घर से। रजत को बेलि के फूल बहुत अच्छे लगते हैं।

मैंने हँसकर कहा—

१ हाइ-लंग—एक कछारी गीत।
२ बेलि—सूरजमुखी।

"सच है, ज्यादा को अच्छे लगते हैं। क्या मुझे अच्छे नहीं लगते हैं ? उसने यह गुण मुझ से ही तो पाया है।

"तब ही तो हमारी बगिया में एक भी बेलि के पेड़ पर फूल नहीं मिलता है। आप पहले ही तोड़ लेते हैं। जब आपके हाथ में बेलि का फूल देखती हूँ तो मुझे नहीं सुहाता है।"

'क्यों ?'

'आप को बेलि का फूल देखकर किसी और की याद आ जाती है। आप मुझे भूल जाते हैं। यह मुझे असह्य है।'

फिर वही अकारण संदेह। जवानी की पहली उमंग में एक लड़की से प्रेम किया था। उसका नाम था बेलि। वह विवाहिता थी। किसी बात पर पति से अनबन हो गई। वह घर चली आई। हम में कुछ परस्पर आकर्षण हुआ। सहसा मुझे गाँव छोड़ना पड़ा। पीछे उसने एक बिहारी के साथ घर बसा लिया। एक कन्या के जन्म के बाद यह आदमी लापता हो गया। खोजबीन पर मालूम हुआ कि देश में उसके एक पत्नी थी। कारबार के निमित्त असम आया था। जो भी हो यह बेलि के लिए घर-द्वार, धन-दौलत काफी छोड़ गया था।

फूल से खेलते हुए मैंने कहा—

'बूढ़ी हो गई, बेलि तुम्हारी समधिन होने जा रही है। फिर भी तुम्हारे मन से संदेह नहीं गया है।"

प्रमिला लज्जित हो गई। मुझ से ऐसा आश्वासन पाकर उसे संतोष होता है। यह संदेह का भाव मुझे अच्छा नहीं लगता है। पिता की तरह बेलि भी मेरे लिए एक मधुर स्मृति बनकर रह गई है।

नौकर सतराम चाय रख गया। साथ दो रसगुल्ले। वह जानता है रसगुल्ले मुझे बहुत भाते हैं। रखते ही दोनों गले से उतार गया।

पत्नी ने प्रश्न किया—

'छोटे बेटे की चिट्ठी नहीं सुनोगे ?'

चाय का घूँट भरते हुए मैंने कहा— 'कहो।'

'कहो या पढ़ो ?' श्रीमती ने चुटकी ली।

घर की लक्ष्मी को संतुष्ट देखकर मैंने सुख अनुभव किया। कहा—"पढ़ो।"

प्रशान्त सीमांचल के एक छोटे-से हस्पताल में नियुक्त था। डाक्टरी पास किये अधिक दिन नहीं हुए थे। काम की दृष्टि से यदि रजत मेरा उत्तराधिकारी हुआ था तो प्रशान्त अपनी माँ का। नायब का बेटा बना था सेकंड लैफ्टिनैंट तो नर्स का डाक्टर। देखने-सुनने में भी रजत मेरी प्रतिमूर्ति था। मीठा वर्ण भरे उभरे गाल। डीलडौल भी बिलकुल मेरा जैसा था। रूप और आकृति में प्रशान्त स्त्रीवत् था तो रजत एकदम मर्द। विचार और व्यवहार में भी रजत मेरे अनुरूप था और प्रशान्त माँ के।

पत्नी ने पत्र पढ़ना आरम्भ किया—

प्रिय स्नेहमयी माँ

यहाँ बर्फ़ पड़ रही है। कभी-कभी उत्तर से चीन की सेना के कूच के समाचार मिलते हैं। कोई कहता है चीन युद्ध के लिए तयार है, कोई कहता है चीन युद्ध नहीं करेगा। कह नहीं सकता क्या होगा।

पास ही हवाई जहाजों के उतरने-उतरने की पट्टी है। सीमा पर तनात हमारे सैनिकों से सम्पर्क रखने के लिए हवाई जहाज और हेलिकोप्टर ही मात्र साधन हैं। बर्फ की चोंत से जली हुई दूब को देखकर मदानों की बहुत याद आती है। यहाँ हर चीज ऊँचाई को ध्यान में रखकर बनाई जाती है। हवा और तूफान के डर से लोग नीची छतों के मकानों में रहते हैं। नदियाँ बिफर रही हैं। १६५० के भूकम्प के बाद धरती अस्थिर-सी हो गई। एजिनियर एम कायर हो गये हैं। कहते हैं कि अगर सड़कें बनाई भी गई तो स्थायी नहीं होंगी।

माँ तुमने मुझे घर बुलाया है। मैं नहीं आऊँगा। बड़े भाई की शादी है फिर भी मैं नहीं आ सकूँगा। क्यों, यह तुम्हें जानने की जरूरत नहीं है। बस भगवान् जानता है। या फिर मैं। बहुत दिन हुए घर से निकला हूँ। मन में बहुत शान्ति है। घर आकर अपनी और तुम्हारी शान्ति नष्ट नहीं करना चाहता हूँ।

आप दोनों मेरा प्रणाम स्वीकार करें। पिताजी से कहना रक्तचाप के बारे में विशेष सावधान रहें।

आपका—

प्रशान्त।

पत्र पढ़कर मैं विस्मित हो गया। मैंने पत्नी की ओर देखा। उसकी आँखें मेरी ओर लगी थीं। मैंने कहा—

"लड़के की बात मैं बिलकुल नहीं समझा, प्रमिला। यह प्रशांत बड़ा उड़नियाँ है। उसका मन उड़ान भरता रहता है, भाव उड़ान भरते हैं, काम भी उड़ान भरते हैं। बड़े भाई की शादी में न

आना उसके लिए अच्छी बात नहीं है।'

प्रमिला का मुख म्लान हो गया। आँखें छलछला आईं। स्पष्ट था, छोटे लड़के के पत्र से उसे गहरी ठेस पहुँची थी। किन्तु उपाय क्या था? हमारा परिवार अपने सात पुरखों के संस्कारों की परिधि के परे था। हमारी कोई निर्दिष्ट गति नहीं थी। किसी के मार्ग आपस में नहीं मिलते थे। सब की दिशाएँ अलग थीं। जैसा रजत सोचता था प्रशान्त के विचार उससे मेल नहीं खाते थे।

मैंने उठना चाहा। रजत को लेने जाने का समय हो रहा था। आयेई अभी तक नहीं लौटा था। उत्कण्ठा से मन में उथल-पुथल मची हुई थी। प्रमिला जड़वत् बैठी थी। आँसू सूख चले थे। किसी प्रकार की चेष्टा का लक्षण नहीं था। मैंने कभी उसे इस तरह अचल बैठे नहीं देखा था। बेटे के विवाह के दिन उसकी यह अवस्था! अचरज हुआ।

'क्या बात है प्रमिला? ऐसे कैसे बैठी हो? कोई काम नहीं है। विमला को बुलाओ। उससे पूछो आयेई अभी तक क्यों नहीं आया।

आप नहीं समझ सकेंगे मैं क्या सोच रही हूँ। इस विवाह के लिए राजी होकर मैंने भारी भूल की है। केवल आपकी बात रखने के लिए मैं मान गई। येलि की लड़की सुनकर आपकी सारी विचार-बुद्धि लोप हो गई। एक बार भी आपने यह नहीं पूछा, लड़की कैसी है?'

इस आक्षेप का मैंने विरोध किया।

"नारी-जाति सदा संदेही होती है। येलि की लड़की देखने

सुनने में अच्छी है और घर के कामकाज में पारंगत है। बेलि की प्रबल कामना है कि हमारे घर के साथ सम्बन्ध हो जाये। रथन भी बहुत दिनों से लड़की को पसन्द करता आया है। सब दृष्टि से अनुकूल मानकर ही मैंने इस विवाह के लिए हामी भरी थी। तुमने भी तो कहा था सब ठीक होगा।"

"किन्तु लड़की कैसी है, यह आपने नहीं देखा।"

"देखने को क्या था। जब से गोद म खेलती थी तब से ममता को मैंने देखा है।"

"आप अब तक निरे बालक ही हैं। क्या आप नहीं जानते उसने बड़े और छोटे, दोनों भाइयों को एक साथ फाँसने की कोशिश की है ?"

"क्या ?"

"हाँ।"

मेरे लिए नारी-चरित्र एक दुगम रहस्य है। मैं वहाँ से भाग जाना चाहता था। जीवन के अवसर पर यदि स्वयं पत्नी के मुँह से कन्या के चरित्र के बारे म ऐसे शब्द सुने जायें तो उन्हें कौन सदाशय, भद्र पुरुष निर्विकार चित्त से ग्रहण कर सकता है। प्रमिला कब, कहाँ क्या कहना चाहिये, यह भी नहीं जानती है। एक लड़की दो पुरुषों के प्रति आकर्षित हो तो भी यह निश्चित है कि वह घर तो एक ही के साथ बसा सकती है। पुराणों की तिलोत्तमा ने सुंद और उपसुंद, दोनों भाइयों से भले ही समान रूप से प्रेम किया हो किन्तु आज के युग में तिलोत्तमा का नाटक रचना सरल नहीं है।

क्या हुआ, प्रमिला ने टोका, "एकदम गुमसुम हो

गये ?"

"अब नये सिरे से सोच-विचार का समय नहीं है, प्रमिला। जैसा लड़के-लड़की का भाग्य।"

"लेकिन यह सब क्या हो रहा है, मैं नहीं समझ सकती। अगर इस लड़की को लेकर दोनों भाइयों में मनमुटाव हो गया तो उसका दायित्व मुझ पर नहीं, आप पर होगा।'

सारा दोष मुझ पर लादकर निश्चिन्त होना प्रमिला का स्वभाव है। मुझ में भी नीलकण्ठ की तरह गरल पीने की असीम क्षमता है। प्रस्तुत कार्य पूरा करने के लिए सारे संशय दूर करना मैंने अपना पहला कर्तव्य समझा। व्यक्ति और समाज के सामने हम जगहँसाई का पात्र नहीं बन सकते थे। मैंने निश्चय किया यदि बलि की बेटी तिलोत्तमा की भूमिका खेलना चाहती है तो उसे विफल करना होगा।

मैं उठ खड़ा हुआ। हाथ में लिये बेलि के फूल की एक पखुड़ी धरती पर गिर पड़ी।

"प्रमिला वे अब समझदार हैं। स्त्री और सम्पत्ति के कारण उनमें झगड़ा नहीं होगा।

स्त्री और सम्पत्ति में समानता कम होती है भेद अधिक। लड़की सच्चरित्रा न हो तो सर्वनाश हो जाता है।

मेरे माथे पर बल पड़ गये। दृढ़ता से कहा—

"यदि प्रशान्त अपने को सँभाल कर चले तो कुछ नहीं होगा।

मेरे तेवर देखकर पत्नी चुप हो गई। मैंने ज़ोर से विमला को आवाज़ दी। उस समय मैं दुनिया-जहान से नाराज़ था।

भरमा हुआ भीतर गया। सारे कमरे छान डाले। कहीं बिमला नहीं दिखाई दी। नौकर लड़के से पूछा। उसने कहा बिमला को घर से गये देर हो गई। मेरा क्रोध चोटी तक पहुँच गया। इस घर में कोई व्यवस्था नहीं है, कोई किसी की आज्ञा आदेश नहीं मानता है। मैंने पोरण का कक्ष देखा। खुला पड़ा था। गहने-कपड़े बाहर रखे थे। बहुत ही लापरवाह है बिमला और प्रतिमा भी। अगर चीज़ों को ऐसे सामने छोड़ दिया जाये तो चोरी भी हो सकती है। आरम्भ के सामान पर पूरा दो हजार खर्च हुआ था। लगता है हमारे परिवार में हर व्यक्ति एक ग्रह के समान है जो केवल अपनी कक्षा में घूमता रहता है। संयोग से मैं और प्रतिमा एक ही कक्षा में पड़ गये और हमारा स्थायी सम्बन्ध हो गया।

बुढ़ापे में परिवार को समेटकर मैं अपने लिए जितना एक सुसंगठित आश्रय बनाना चाहता था वह उतना ही विच्छिन्न होता जा रहा था। न जाने कब इस इमारत की दीवारें और छतें ढह जायेंगी और मैं दब जाऊँगा।

कमरे की चीज़ें ठिकाने से रखकर मैंने ताला लगा दिया। गाड़ी आने में केवल आधा घंटा रह गया था। जमाई पर बहुत क्रोध आ रहा था। समय का इतना ज्ञान होते हुए भी वह अभी तक क्यों नहीं आया। कुछ देर और प्रतीक्षा की। बैठक में गया। वहाँ प्रतिमा एक पत्री पढ़ रही थी। मेरे आगे कर दी।

पढ़िए।

"मुझ में पढ़ने का धीरज नहीं है। किसने, किसे, क्या लिखा है? तुम्हीं बता दो।"

"आवेई की है। उसे किसी विशेष काम से मासुम जाना पड़ा है। लिखा है, तुम स्वयं टैक्सी लेकर स्टेशन चले आयें। वह ओरण में नहीं आ सकेगा।'

'उसका सिर। सब गड़बड़ कर दिया। अनाज्ञाकारी कहीं का। ये सब मुझे पेड़ पर चढ़ाकर जड़ काटेंगे।'

मुझे शान्त करने की कोशिश करते हुए प्रमिला ने कहा—

'इस बकबक में क्यों अपने को परेशान करते हैं? आप तैयार होएँ मैं टैक्सी बुलवाती हूँ।

प्रमिला चली गई। शीशे में देखकर मैंने अपनी वेशभूषा ठीक की। चन्दन के बटन लगे कसे जामे में मेरा सीना समा नहीं रहा था। युद्ध के समय इस सीने में अनन्त साहस था। लेकिन आज इसमें यह कम्पन कैसा? कदाचित् जो बाहर के शरीर धारी शत्रु से डटकर मोर्चा ले सकता है वह अन्तर के अमूर्त शत्रु के समक्ष अपने को असमर्थ अनुभव करता है। यह वह चक्रव्यूह है जिसमें अभिमन्यु प्रवेश कर सकता है बाहर नहीं निकल सकता।

हठात् लगा कि शीशे में से झाँकती प्रतिच्छाया का अंग अंग मुझ से कुछ कह रहा है।

हाथ की उँगलियों ने कहा—'हम उपवासिन हैं, असक्त हैं।'

सिर के सफेद बालों ने कहा—'फल पक चुका है। हम उसके प्रतीक हैं।'

लँगड़ी टाँग ने कहा—'बस अब और नहीं। यह समय

समाप्त हो, यंत्रणा का अन्त हो।'

माथे की रेखाओं ने कुटिल मुस्कराहट से कहा—'दिन का अवसान निकट है।'

हृदय ने कहा—'मैं यह चाहता हूँ मैं यह चाहता हूँ।'

बुद्धि ने कहा—'संयत हो संयत हो।'

मैं खोया हुआ शीशे के सामने खड़ा रहा।

फिर लकड़ी टेकता हुआ बाहर आया। फ़र्श पर नये जूते चरमरा रहे थे। मैंने अपने से प्रश्न किया—मैं कौन हूँ!

'मैं!'

'हाँ।'

सायास, विश्वास भरकर उत्तर दिया—

'मैं, बघुराम मजुमदार—वर का पिता। अवकाश प्राप्त सैनिक और भद्र पुरुष।'

ठंडी बयार का एक झोंका आया और खेत के वक्ष को सिहरा गया। राजमार्ग पेड़ों की ओट के परे था। हाँ, सर्प रेखा-सी एक पगडंडी सामने थी।

सहसा खेत के एक कोने में मैंने सैनिकों के एक दस्ते को दौड़ते हुए देखा। मन में चिन्ता जगी—'यह कहाँ से आये? क्या कहीं युद्ध छिड़ गया?' इतने में नौकर लड़का भागता आया। मेरे सामने न आकर, वह पीछे के द्वार से घर के भीतर चला गया। हो सकता है उसने मुझे देखा न हो। एक विशाल जटी-वृक्ष के नीचे खड़ा मैं एक बौना-सा लग रहा था। प्रकृति के उस प्रहरी की तुलना में कितना क्षुद्र! थोड़ी देर में सुना प्रमिला ससुर की भर्त्सना कर रही थी। मैं निर्विकार भाव से अपनी

मढ़ी देखता रहा।

गाड़ी स्टेशन पर पहुँचने में केवल दस मिनट रह गये थे। इतने में प्रमिला बाहर आई। बोली—

'सुना आपने, एक भी टैक्सी नहीं है।

'क्यों कहाँ गईं सब ?

'लड़ाई शुरू हो गई है।

तो वे सैनिक अभ्यास कर रहे थे ? अखबार ने तो लिखा था मुझे ही विश्वास नहीं हुआ। बिमला ने कितनी दृढ़ता से कहा था—युद्ध होने वाला है मेरे ही मन ने स्वीकार नहीं किया। कदाचित् उसे आयोर्ड से कोई संकेत मिला हो। अब मेरी सैनिक की सुप्त अन्तर्दृष्टि सजग हो उठी। यदि चीन के साथ युद्ध आरम्भ हो गया है तो हमारे गुप्तचर निश्चय ही इस क्षेत्र में रहने वाले चीनियों पर कड़ी निगाह रखेंगे। बिमला को बुलाकर चेताना होगा।

मैंने प्रमिला से पूछा— 'क्या बिमला आई है ?

'नहीं।

'तो उसे बुला भेजो।

प्रमिला तिनक उठी।

'बिमला आ जायेगी। आप रिक्शा पकड़कर स्टेशन जाइए। रजत की गाड़ी का समय हो गया है।

''अच्छा मैं चलता हूँ।

मैं सड़क पर आया। भाग्य से सवारी छोड़कर एक रिक्शा सामने से आ रही थी। उसे रोक सवार होते हुए मैंने अपनी पश्तो हिन्दी में आदेश दिया— "चलो स्टेशन।" हमारे मस-

मियां भाई रिक्शा पर चढ़ते समय हिन्दी में बोलने की चेष्टा
करते हैं। मैं भी हिन्दी बोल लेता हूँ। मेरी हिन्दी सुना में र
कर मीठी हुई है।

नयी बस्ती होते हुए रिक्शा आगे बढ़ने लगी। नगर के मध्
तक पहुँचने से पहले मैंने कोई असाधारण हलचल नहीं देखी
फिर उत्तेजना के लक्षण नजर आने लगे। स्टेशन के पास चौरा
पर भीड़ जमा थी। सामने की दुकान से बाबू मुरलीधर बाह
निकल रहे थे। उनके चेहरे पर गहरी चिन्ता व्याप्त थी। बग
में शर्मा का जलपान-गृह था। चाय का ऑर्डर देकर ग्राहक भी
में समाविष्ट हो गये थे। शर्मा के बैरा उन्हें आवाजें दे-दे
हार गये थे। वे भीड़ से बाहर नहीं निकल रहे थे। रिक्शा
सड़क की पटरी से सटी खड़ी थीं। उनके चालक भीड़ के छो
पर खड़े गर्दना मचकाते हुए उचक-उचककर भीड़ के बीच
किसी वस्तु को देख रहे थे और उसे सुनने की कोशिश क
रहे थे।

मैं जैसे ही भीड़ के पास पहुँचा मैंने सुना—

'ढाका हमारे हाथ से निकल गया।'

मैंने रिक्शा रुकवाई और पैसे चुकाकर उतर गया। कि
कह रहा था—

बोमा की चौकी का पतन हो चुका है। चीनी सेना आ
बढ़ रही है।

'यह खबर कहाँ से मिली है?' मैंने कठोर भाव से प्रश्
किया।

'रेडियो से। आकाशवाणी से।'

घड़ी में देखा। डेढ़ बज रहा था।

इतने में गाड़ी की सीटी सुनाई दी। रजत की गाड़ी आ गई। तेजी से भीड़ चीरता हुआ, रेल का पुल पार कर मैं प्लेट-फॉर्म पर पहुँच गया।

गाड़ी रुकी। एक-एक करके सारे डिब्बे देखे। रजत नहीं दीखा। 'चूक गया होऊँगा।' एक बार फिर एक छोर से दूसरे छोर तक घूम गया। नहीं रजत नहीं आया था। हृदय धक रह गया। 'रजत नहीं आया, क्यों?

उस गाड़ी से और बहुत सैनिक आये थे। चेहरे थकान से मुरझाये हुए लेकिन आँखों में चमक। शरीर छरेरे और स्वस्थ। उन्हें देखकर हृदय आत्मीयता के भाव से भर आया और करुण हो गया। उन सैनिकों में मैंने अपना अतीत देखा और वर्तमान भी। उनमें प्राय सभी रजत की आयु के थे। अन्तरतम से उन्हें आशीर्वाद दिया—

'विजयी हो सदा विजयी हो मेरे बेटो!

मेरे बेटो!!

मेरा बेटा!!!

एक टीस हृदय को बेध गई।

मेरी आँखों के सामने आया—

बर्फ से मंडित एक क्रूर, ठंडा सीमान्त।

एक अजेय शक्ति जो युगयुग से मनुष्य का आवाहन करती रही है।

वह पवित्र भूमि,

किन्तु वह मात्र भूमि ही तो नहीं है।

यह तो भूमि पर रचा एक जाति की सभ्यता का, उसकी साधना का मन्दिर है

उसका मूल स्रोत है—

पिताजी जो हरिनाम का पद गाते थे उसकी—

कुमार असमिया बरगीत[1] की तरह

पवित्र और गम्भीर।

उस भूमि उस मन्दिर की रक्षा के निमित्त ही मेरा रजत

रेल ने सीटी दी।

लौटने की इच्छा हुई। मेरा हृदय शून्य था। ढोला चौकी का पतन हो गया। क्या रजत जीवित है? कौन उत्तर देगा। इतने में किसी ने पुकारा—

"पिताजी!

'कौन, बिमला?'

"हाँ पिताजी।

"रजत नहीं आया।"

मैं जानती हूँ।

"ढोला चौकी का पतन हो गया।'

सिर्फ ढोला ही नहीं, खिंजमाने का भी पतन हो गया और बिदीपू का भी।"

"क्या? तुम्हें कैसे मालूम?'

"मुझे आयेई ने बताया है।'

"आयेई ने कहाँ से सुना?"

---

१ बरगीत—महापुरुषिया सम्प्रदाय के भक्ति-पद।

विमला ने मेरे कान के निकट आकर फुसफुसाया—पीकिंग रेडियो से।'

'झूठी खबर है। शत्रु का रेडियो तुम लोग क्यों सुनते हो?

विमला ने सहज भाव से कहा—'इसके बारे में आपसे बात करूँगी। माँ ने मुझ से आपको वापस ले आने को कहा है। रजत का तार आया है।

'रजत का तार? क्या लिखा है?

लड़ाई के कारण छुट्टी रद्द हो गई है। विवाह पीछे हटाने को लिखा है।

हूँ।"

धीरे-धीरे रेल का पुल पार किया। उन महाशय का भाषण अभी जारी था। ऐसे बोल रहे थे मानो तत्काल युद्ध क्षेत्र से आये हों। जब अफ़वाह का बाज़ार गरम हो तो कान कब तक बन्द रह सकते हैं। सच को झूठ और झूठ को सच बनाकर हृदय में आतंक पैदा करने वाली इस डायन से संकट के समय यदि मनुष्य दूर न रह सके तो महाविपत्ति निश्चित है। मेरे सैनिक हृदय ने मन ही मन ऐसे लोगों को अभिशाप दिया।

मैं घर पहुँचा। मुझे देखते ही प्रमिला सिसकने लगी। "जैसे भी हो मेरे रजत को बचा लो।' पिछले पखवाड़े बराबर उसकी आँख फड़कती रही थी। शुक्ल पक्ष में दाहिनी आँख का फड़कना अशुभ होता है। रात रात वह दुःस्वप्न देखती रही है। मारकाट और रक्तपात।

मैंने कहा—

'बेसि को खबर भेज दो। विवाह टल गया है।'

'टल गया या पीछे छूट गया?'' आँसू पोंछते हुए प्रमिला ने प्रश्न किया।

'टल गया यानी पीछे छूट गया एक ही बात है। चलो प्रमिला बेसि से कह आयें।'

प्रमिला ने उत्तर दिया—

'मैं नहीं जाऊँगी। आप ही जायें। घर का सारा काम पड़ा है।'

'अच्छा विमला तुम माँ के पास रहो। मैं बेसि के यहाँ हो कर आता हूँ।'

सूरज ढल रहा था। आकाश में काले बादल छाये थे। ऐसा प्रतीत हुआ मानो उनके पीछे से चाँदनी की जैसी दो छोटी, तिरछी आँखें पृथ्वी को घूर रही हैं। मेरी चाल में तेज़ी आ गई। पैर की ठोकर से सड़क के कंकड़ उछलते और साथ के नाले में जा गिरते घटनाओं के आघात से चोट खाये व्यक्ति के समान। भयंकर समय आ गया था। मैंने युद्ध महायुद्ध देखा था किन्तु यह युद्ध उससे कहीं अधिक अनिष्टकर होगा। यह ऐसा था जैसे एक ही माहात्म्य में दो घरों में भीषण उत्पात हो जाये। वे बरबाद हो जाते हैं।

बेसि का घर काफ़ी दूर था। चाय बागान के बीच से निकल कर, दक्षिण दिशा में छोटा टिगराई के निकट वह रहती थी। पड़ोस में दो चार परिवार बसते थे। रास्ते में बागान के कुछ बाबू और मज़दूर मिले। वे काम से लौट रहे थे। घर के दर-वाज़े पर पहुँचकर मैंने सुना कि भीतर कोई 'सिसक-सिसककर

रो रहा है।

मैंने पुकारा—"वेसि वेसि।

घर से कोई उत्तर नहीं आया। मेरी आवाज दीवारों से टकराकर एकाकी लौट आई। किवाड़ को धीरे से ठेलकर घर में प्रवेश किया। मन में बेचैनी थी। सामने एक सुन्दर सलोनी लड़की मुट्ठी से माथा ठोक रही थी। मैंने उसे आँख भरकर देखा। इतने में मुझे खाँसी आ गई। मैं उसे दबा नहीं पाया। लड़की ने चौंककर मुझे देखा और रोना बन्द कर उठ खड़ी हुई।

मैंने पूछा—"वेसि कहाँ है ?

"स्नान को गई है।'

मैं कुछ देर मौन रहा। फिर जब उससे कुछ पूछना चाहा तो मैंने देखा उसकी आँखें एक चित्र पर लगी थीं। समझने मे देर नहीं लगी कि वह क्या देख रही थी। हाथ की लकड़ी पर अपना पूरा भार डालकर, मैं ठूठ-सा खड़ा रहा। मेज पर रजत का चित्र रखा था। वह वर्दी में नहीं था, किन्तु एक आध्यात्मिक आभा से उसका मुख उद्दीप्त था।

अमला चित्र को देखती रही, एकटक देखती रही।

फिर बोली—

'बैठिये।'

उसके स्वर म इतनी करुणा और मिठास थी कि मेरा हृदय द्रवित हो गया।

अमला को सांत्वना देते हुए मैंने कहा—

"रोती क्यों हो बेटी ? मैं मूका भी धीरज धरे हूँ। रोओ मत



दूसरा भाग

और फिर अकस्मात् एक दिन सारा नगर एक भयानक आशंका से भर गया।

रेडियो पर और समाचारपत्रों में उत्तर-पूर्वी सीमांचल में हमारी सेनाओं के अनेक चौकियाँ छोड़ने के समाचार आये। हमारे सैनिकों के पीछे हटने के समाचार मेरे और परिवार के लिए असह्य थे। कारण, हमारे दो पुत्र मोर्चे पर थे। उनसे या उनकी कोई सूचना कई दिन से नहीं मिली थी।

देखते-देखते रजत का विवाह स्थगित हुए एक महीना बीत गया।

जाड़े के दिनों में मेरा खाँसी का कष्ट और बढ़ गया था। फिर भी, उसे भुलाकर, घर-द्वार छोड़कर नगर में आने वाले अपने पर्वतीय भाइयों के सेवा-सत्कार में मैं जी-जान से लग गया। डेमि के घर के निकट अवस्थित एक कैम्प में प्रमिला, विमला, अमम्मा और मैं—हम चारों नियमित रूप से काम करने लगे।

नवम्बर के एक दिन, ठीक तिथि मुझे स्मरण नहीं, सवेरे उठकर मैंने मिक्चर[1] का डिब्बा निकाला था। प्रमिला चाय

[1] मिक्चर—असम में यह शब्द प्रायः तम्बाकू के लिए प्रयुक्त किया जाता है। उत्पत्ति शायद कैप्स्टेन टुबैको मिक्चर के अन्तिम शब्द से है। मिक्चर और तम्बाकू पर्यायवाची बन गये हैं।

जमा रही थी। इतने में बेलि भागती हुई आई। साँस चढ़ रही थी। अन्तर का उद्वेग चेहरे पर अंकित था। कपड़े भी मसे-भुम थे। जो घर में पहन थी उन्हीं में चली आई थी।

‘क्या हुआ बेलि ?

बेलि की आदत है वह मेरे सामने बैठती नहीं है। बरसों चेष्टा करके भी मैं उसकी यह आदत बदलने में असमर्थ रहा हूँ। लेकिन उस दिन बिना कहे आप ही मोढ़ा खींचकर वह धम्म से बिखर गई। मैं समझ गया अवश्य ही कोई गम्भीर बात है।

मैंने मिक्चर को लपेटकर सिगरेट बनाया और मुँह से लगाया। मैं जानता था बेलि मेरा तिरस्कार करेगी। वह नहीं चाहती है कि मैं सिगरेट पीकर अपने दमे के विकार को उग्र बना दूँ। अपने हृदय के एक छोटे से कोने में मेरे प्रति बेलि ने अब भी स्नेह सँजो रखा है। यह रहस्य मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं जानता है।

साँस थमने पर बेलि ने कहा—‘कोई सूचना संकेत मिला ?’

‘कैसा ?"

‘आर्येई के बारे में।

‘क्या बात है ? स्पष्ट कहो।

‘सबको आर्येई पर संदेह है। हमारे पड़ोस के नौजवान रोष से भरे हैं।’

‘क्यों ?"

"कहते हैं वह चीनियों का गुप्तचर है।

"यह मिथ्या आरोप है। आर्थर को मैं बरसों से जानता हूँ। उसका जन्म यहीं हुआ है।

"अभी थानेदार उधर गया था। मैंने कैम्प में सुना है, आर्थर के नाम परवाना है।

"सच ?

"हाँ।

"यह तो हो सकता है कुछ झपट पड़ गया हो। विमला भी चार-पाँच दिन से नहीं आई है।'

"उसी ने मुझे यह संदेश देकर भेजा है। उसने आपको एक बार बुलाया है।

"मुझे बुलाया है ? निश्चय ही कोई गम्भीर बात होगी।

मैंने प्रमिला को पुकारा। वह चाय लेकर आ रही थी। बेसि को देखकर चौंकी। मन में खीझी भी होगी। मैंने प्रगट किया है वह मुझे एकान्त में बेसि के साथ बात करते नहीं देख सकती है। स्त्री-सुलभ ईर्ष्या है, और क्या।

"कहो समधिन इतने सवेरे-सवेरे।" उसके स्वर में तीखा-पन था।

बेसि ने विनम्रता से उत्तर दिया—

"हाँ, आप लोगों के ही काम से आना हुआ है।

चाय का प्याला लेते हुए मैंने कहा—"प्रमिला गरम पानी मिलेगा ? मुझे आर्थर के जाना है। विमला ने बुलाया है।

प्रमिला ने प्रतिवाद किया। 'इतने सवेरे नहाकर ठंड लग जायेगी। विमला ने बुलाया है तो कैम्प जाते समय होते आयें।

बना रही थी। इसने म बेसि भागती हुई आई। सांस चढ़ रही थी। अन्तर का उद्वेग चेहरे पर अंकित था। कपड़े भी मैले-मुस थे। जो घर में पहन थी उन्हीं में चली आई थी।

"क्या हुआ बेसि ?

बेसि की आदत है वह मेरे सामने बढ़ती नहीं है। बरसों चेष्टा करके भी मैं उसकी यह आदत बदलने में असमर्थ रहा हूँ। लेकिन उस दिन बिना कहे आप ही मोढ़ा खींचकर वह धम्म से बिखर गई। मैं समझ गया अवश्य ही कोई गम्भीर बात है।

मैंने सिक्चर को लपेटकर सिगरेट बनाया और मुंह से लगाया। मैं जानता था बेसि मेरा तिरस्कार करेगी। वह नहीं चाहती है कि मैं सिगरेट पीकर अपने वर्ग के विकार को उत्पन्न करूँ। अपने हृदय के एक छोटे से कोने में मेरे प्रति बेसि ने अब भी स्नेह संजो रखा है। यह रहस्य मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं जानता है।

सांस थमने पर बेसि ने कहा—"कोई सूचना संकेत मिला ?

"कैसा ?"

'आर्थेई के बारे में।

"क्या बात है ? स्पष्ट कहो।

"सबको आर्थेई पर संदेह है। हमारे पड़ौस के नौजवान रोष से भरे हैं।

"क्यों ?"

"कहते हैं, वह जीमिया का गुप्तचर है।

"यह मिथ्या आरोप है। मार्पई को मैं बरसों से जानता हूँ। उसका जन्म यहीं हुआ है।

"अभी थानेदार उधर गया था। मैंने कम्प में सुना है मार्पई के नाम परवाना है।'

'सच?

'हाँ।'

"यह तो हो सकता है कुछ अघट घट गया हो। विमला भी चार-पाँच दिन से नहीं आई है।'

"उसी ने मुझे यह संदेश देकर भेजा है। उसने आपको एक बार बुलाया है।"

'मुझे बुलाया है? निश्चय ही कोई गम्भीर बात होगी।

मैंने प्रमिला को पुकारा। वह चाय लेकर आ रही थी। बेनि को देखकर चौंकी। मन में खीझी भी होगी। मैंने प्यार किया है वह मुझे एकान्त में बेनि के साथ बात करते नहीं देख सकती है। स्त्री-सुलभ ईर्ष्या है और क्या।

"कहो समभिन, इतने सवेरे-सवेरे।" उसके स्वर में खीझा-पन था।

बेनि ने विनम्रता से उत्तर दिया—

"हाँ, आप लोगों के ही काम से आना हुआ है।"

चाय का प्याला लेते हुए मैंने कहा—"प्रमिला गरम पानी मिलेगा? मुझे मार्पई के जाना है। विमला ने बुलाया है।

प्रमिला ने प्रतिवाद किया। 'इतने सवेरे नहाकर ठंड खा जाओगे। विमला ने बुलाया है तो कम्प जाते समय होते जायें।

आप भाग मात करें। समझिए, चाय के लिए अबर आओगी ?"

प्रमिला के कटाक्ष पर बेसि मुस्कराई और भीतर आने को प्रस्तुत हुई। मैंने कहा— 'प्रमिला, तुम भी खूब हो। बेटे की बहू लाने योग्य हो गईं और इतना धीरज नहीं कि बात भी पूरी सुन सको।"

'तो क्या हुआ है ? कहते क्यों नहीं ?"

'आर्चेई के नाम वारंट निकला है। इसलिए बिमला ने बुलाया है। अब समझीं बेसि इतने सबेरे क्यों भागी आई है।"

प्रमिला सुनकर स्तब्ध रह गई। फिर व्याकुल भाव से बोली—

'तो फिर देर क्यों कर रहे हैं ? तैयार क्यों नहीं होते ? जल्दी आइये।'

प्रमिला बेसि को लेकर भीतर चली गई।

मुख्य द्वार से प्रवेश करके युद्ध हमारे घर में आ गया था।

मैंने जल्दी से चाय पी। और दिनों की अपेक्षा, समय से पहले पिताजी के चित्र के सामने खड़ा हो उसे प्रणाम किया। पिछली रात चित्र के ऊपर एक जाला तन गया था। हल्के हाथ से उसे हटाया। स्नान-घर में अपने ऊपर तपता पानी उँडेला। महीने भर की भाग-दौड़ से शरीर में थकान हो आई थी। अंग प्रत्यंग में शिथिलता भर गई थी। इस देह के साथ यह वंश भी समाप्त हो जायेगा यह विचार मन में कौंध गया। मैं जड़ से हिल उठा। कौन जाने ? एक महीना हो गया था। रजत का कोई समाचार नहीं मिला था। जो सैनिक उस क्षेत्र से बचकर आये थे उनसे भी नहीं। किसी ने रजत को नहीं

देखा था। तो क्या—तो क्या वह मारा गया ? छि: छि: मैं क्या सोचता हूँ ? नहीं, वह मरा नहीं है। मरता तो अवश्य सूचना दी जाती। मैंने सैनिक विभाग को भी लिखा था। अब तक कोई उत्तर नहीं मिला था। यही आशा मैं प्यार से हृदय में सँजोये था कि वह लौट आयेगा। लड़की को अँगूठी पहनाई जा चुकी है। विवाह होगा। धूम भी होगी। यह [illegible] नहीं सकता है।

प्रमिला दिन-रात प्रशान्त की चिन्ता करती है। प्रशान्त के मरने का मुझे कोई भय नहीं है। वह भी माँ का बेटा है। उसमें मेरी सैनिक प्रवृत्ति नहीं है। उस पर वह डाक्टर है, पहली पंक्ति से बहुत दूर। सुना है कामेंग के आसपास घमासान युद्ध हो रहा है। हमारी सेना ने कई बार चीनियों का मुँह फेर दिया है। प्रशान्त गोली के सामने नहीं पड़ेगा। उससे पहले ही उसके पैर उखड़ जायेंगे। किन्तु रमेश निर्भीक है, दृढ़-संकल्प है, साहसी है—जैसा हमारे फ़ौजी जवानों को होना चाहिए। वह जान हथेली पर लिये फिरता है। इसीलिए मुझे उसकी अधिक चिन्ता है।

प्रमिला ने दरवाज़ा खोलते हुए पूछा—"अभी तक लिखने का समय नहीं हुआ ?"

"हाँ-हाँ, हो गया। आया।"

"इस युद्ध का [illegible] कब तक समाप्त ?"

मैंने सुना, बाहर बैठे वह कह रहे थे—'[illegible] भार सा शूल है। क्या कोई ऐसे कहता है ?'

तो क्या हम ? स्नानघर में जाते हैं तो न जाने [illegible] क्या

हो जाता है। यहीं के हो रहते हैं।

प्रमिला की चुटकी मुझे मीठी लगी। यह असत्य नहीं है कि मुझे अपने आप से बहुत अनुराग है। साथ ही संसार के प्रति मुझ में एक गहरी वितृष्णा है।

स्नानघर ही मेरा नामघर[1] है।

मैं बाहर निकला। धोती-कुर्ता पहना और छड़ी लेकर चलने को उद्यत हुआ। बेसि ने प्रस्ताव किया—

"मैं भी चलूँ आपके साथ?

पर-स्त्री के साथ रिक्शा पर बैठकर निकलना विपत्ति को न्यौता देना है। छोटे-से कस्बे में अफ़वाह डायन एक दिन में सहस्र सन्तान जनती है। ऐसी डायन से नेह लगाने का मेरे मन में कोई चाव न था।

मैंने उत्तर दिया— 'तुम ठहरो बेसि। इनके साथ आ जाना। और हाँ प्रमिला सुनो।'

क्या?'

'इन लोगों को किसी दिन मास खाने न बुलायें?'

'हाँ सोचती हूँ लक्ष्मी का भी घर में पाँव पड़ जायेगा। इतवार को न कह दें?

'ठीक है।

मैंने बेसि को आँख भर के देखा। तन में पुलक की एक लहर दौड़ गई। क्षण भर को नई जवानी के बीते दिन स्मरण हो आए। उन दिनों बैसागु[2] पर बेसि चुनी मछली रात के

1 नामघर—कीर्तन या पूजा का स्थान।
2 बैसागु—बाहाग बिहू असम का एक बड़ा त्यौहार।

बासी भात और लाओ-पानी[१] से भूमि पर आसन बिछाकर, मेरा सत्कार करती थी।

प्रमिला ने यद्यपि एक कछारी से विवाह किया था लेकिन अपने खानपान में वह ब्राह्मणी संस्कारों से बंधी रही थी।

नगर में जहाँ-तहाँ सेना का समावेश था। उसी के साथ ट्रकों और लारियों का अधिग्रहण किया जा रहा था। ड्राइवर लोग शर्मा के जलपान-गृह में विश्राम कर रहे थे। भाग्य पर भरोसा कर वे तेजू आये थे। तेजू के उत्तर में सेना को कुमक पहुँचाने की व्यवस्था की जा रही थी। उनके चेहरों पर सन्नाटा था। देश के लिए वे मन वचन और कर्म से आत्म-समर्पण कर चुके थे। उनकी सफलता के लिए मैंने मन ही मन प्रार्थना की। ऐसी भावना हमारे नगर और देश का हर व्यक्ति कर रहा था।

इतने में लाउडस्पीकर पर सुना कोई सदर्न कमान का आदेश दे रहा था। नागरिक प्रतिरक्षा समिति का कोई सदस्य होगा। कुछ और शब्द भी कान में पड़े

चीजों की कीमतें न बढ़ाइये। व्यापारी वर्ग से अनुरोध था।

शत्रु के गुप्तचरों से सावधान रहें। जिन पर सन्देह हो उन पर कड़ी निगरानी रखें। पञ्चम वाहिनी से सतर्क रहें। ऐसे भाइयों के विरुद्ध सचेत करने की घोषणाएँ हो रही थीं।

मैंने रिक्शावाले से जल्दी चलने का आग्रह किया। फिर

---

१ लाओ-पानी—चावल की शराब जो लौकी के तुम्बे में भरकर बनाई जाती है। लौकी को असमिया भाषा में पानी-लाओ कहते हैं।

मी आयेर्ड के घर पहुँचने तक सूरज काफ़ी चढ़ आया था। घड़ी देखी। पूरे नौ बजे थे। चाय बागान में छोकरियों ने पत्तियाँ तोड़ना आरम्भ कर दिया था। कारखानों में मशीनें चलने लगी थीं। बाबू लोग काम पर पहुँचने के लिए घर छोड़ चुके थे।

बागान से कुछ परे आयेर्ड की लकड़ी काटने की दुकान थी। दुकान के पास ही बासा था—बल्लियों पर बना हुआ फूस की छत का एक नीचा बँगला। मन देखा, फाटक के भीतर पुलिस थी। पास में, पड़ौस के नौजवानों का एक झुण्ड घर पर उत्सुकता से नजरें जमाये था।

जसे ही मैंने फाटक में प्रवेश किया पुलिस के सिपाहियों और नौजवानों ने कुतूहल से मुझे देखा। मेरी आँखें नीची हो गईं। मुझे भय हुआ, आयेर्ड से कोई गुरुतर अपराध हो गया है।

'मैं सीधा बैठक में गया। वहाँ कोई नहीं था। खाने का कमरा देखा। वह भी खाली था। उसे पार कर सोने के कमरे में बन्द दरवाजे के सामने खड़ा होकर मैंने सुनने की चेष्टा की। ऐसा आभास हुआ कि भीतर कोई है। फिर हल्का-सा शब्द कानों में पड़ा। दरवाजे पर धीमे से दस्तक देकर कहा—

'विमला, दरवाजा खोलो।

पहली बार उत्तर न पाकर अधिक आग्रह से कहा—

"विमला!"

'कौन?'

'मैं तुम्हारा पिता।

दरवाजा खुला। विमला सामने खड़ी थी। चेहरा पीला हो गया था बहुत पीला। आँखें लाल थीं और भारी। शायद रात भर नहीं सोई थी।

"क्या बात है विमला ?"

"सवेरे से पुलिस ने पहरा डाल रखा है। कल कुछ लड़के आये थे। उन्होंने हम पर खूब तान कस अपशब्द कहे।

"क्यों ?"

"चीन के विरुद्ध अपना क्रोध प्रकट करने उनके पास आये थे।"

"छि. ये लोग देश के नाम पर कलंक लगायेंगे। क्योंकि भाभी चीनी हैं इसलिए चीनी सरकार का सारा दोष उन पर मढ़ा जाय। यह अनुचित है।"

विमला उद्दीप्त हो उठी। बोली— इसका अपना भी दोष है।

"क्या दोष ?"

"कौरव का नाश गाते हैं और पाण्डव का गुन गाते हैं।

मैंने कुछ नहीं कहा। अन्दर गया। भाई बिस्तर पर लेटा था। बाल-बाल उसके बढ़ गये थे और धीरे उलझन बन। सिर बड़ा और भव्य, शरीर दोहरा भरा-भरा किन्तु छाती गढ़ी हुई और पुष्ट। कुल मिलाकर एक शानदार व्यक्तित्व।

वह शान्त निश्चल भाव से लेटा था। मैंने कमरे में चारों ओर दृष्टि डाली। दीवार पर चीनी ढंग से एक हिरनी का चित्र था। मेज पर शराब की छोटी बोतल और सूअर के मांस का डिब्बा। तश्तरी में काँटा-छुरी। पास की कुर्सी पर दो

चीनी पत्रिकायें। मैं अक्षर नहीं पहचानता। एक और कुर्सी पर ऊन और बुनाई का सामान।

"क्या बुनाई हो रही है?"

"जर्सी।

किस के लिए?

जवानों के लिए।"

विमला का उत्तर कानों को प्रिय लगा। एक चीनी के साथ रहकर भी उसने अपने देश को नहीं भुला दिया था। हाथ में उठाकर उसी की जाँच करते हुए मैंने कहा—

"क्या और मोटा नहीं होना चाहिये था? जवान आदि बहुत ऊँचाई पर लड़ रहे हैं। हिमालय की शीत में हड्डियाँ तक ठिठुर जाती हैं। और मोटा ऊन होता नहीं तो दोहरी बुनाई।

विमला ने सहसा प्रश्न किया—

पिताजी क्या सच हमारी सेना चीनियों के सामने खड़ी नहीं हो सकी है?

"कौन कहता है?

"आमेई।

मेरी आँखों के डोरे लाल हो गए। "डाकू अचानक धोखे से घर में घुस आए तो उसे निकाल भगाने के लिए घर वाले को तैयारी करने में कुछ समय लग सकता है। आमेई झूठ बोलता है। पीछे हटने का अर्थ लड़ाई से मुँह मोड़ना नहीं है कभी नहीं।

"मैंने भी यही कहा था लेकिन पिताजी

"रुक क्यों गई विमला? लेकिन क्या?

"यदि सच कहूँ तो आपको चोट पहुँचेगी।"

"नहीं जी विमला। यह व्यक्तिगत भावनाओं के सुख-दुःख की चिन्ता करने का समय नहीं है। हमें कठोर यथार्थ से दो चार होना है।"

"आजकल ये रोज़ मालूम आते-जाते हैं। कामकाज करना छोड़ दिया है। बागान के साहब ने एक दो बार तगादा भी किया लेकिन वे इनसे काम निकलवा नहीं सके। क्या करने जाते हैं, मैं नहीं जानती। देर रात गए आते हैं।

"हो सकता है उसे भीतर कोई डर खा रहा है।

"पहले तो मैं भी ऐसा ही सोचती थी पिताजी लेकिन उनके हावभाव इसके विपरीत हैं।

सन्देह का लाभ आयेई को देते हुए मैंने कहा—

"हो सकता है किसी दुश्चिन्ता के कारण ऐसा हो गया है। इस समय चीनियों पर कोई विश्वास नहीं करता है। अब तक आयेई गिरफ्तार नहीं हुआ है यही बड़े भाग्य की बात है।

विमला ने निकट जाकर सोते हुए आयेई को देखा। उसकी आँखें बंद थीं। शायद सो रहा था। मैं असमंजस में था कि पति पत्नी के बीच ऐसा अविश्वास कैसे पैदा हो गया।

आश्वस्त होकर विमला मेरे पास आई। उसने कहा—

"पिताजी आइये, कमरे में चलें। आपसे बात करनी है।

हम कमरे में आये। विमला सामने की कुर्सी पर बैठ गई, मैंने माथे पर पड़ा पसीना पोंछा और जेब से सिगार की पुड़िया निकाली। उस समय मैं महाराष्ट्र हो या फारसी पुराण[1]—गम्भीरतम हो या सम्पूर्ण उपहासास्पद किसी की बात सुनने का

१ महाराष्ट्र हो या फारसी पुराण—एक असमिया मुहावरा।

तयार था।

विमला बोली—

विश्वास मानिए पिताजी वे इस देश का नागरिक नहीं होना चाहते हैं। इतने दिन बाद आज उन्होंने बिलकुल स्पष्ट और अन्तिम रूप से कह दिया है।'

मैंने सिगरट सुलगाते हुए पूछा—

'उसका जनम यहाँ असम में हुआ है। वह यहाँ का न हो कर कहाँ का नागरिक होगा ?'

'मुझे बहुत लाज आती है पिताजी। साम्यवादी चीन ने उसी साल जन्म लिया था जिस साल हमारी शादी हुई थी। उसी समय से उनका मन बदल गया है।

हूँ।

आप जानते हैं अब तक आपको किसी नाती का मुँह देखना क्यों नसीब नहीं हुआ ?

बात कहते-कहते विमला की आँखों से आँसू छलकने लगे।

विमला के सन्तान न होने की चर्चा प्रायः हमारे घर में होती रहती थी। मैंने सोचा था आज के परिवार नियोजन के युग में इस आधुनिक दम्पति का जल्दी सन्तान की वांछा न होगी। लेकिन माँ के मन म आशंका थी।

मैंने पूछा—"क्यों ?

वे कहते हैं मैं जब तक चीन का नागरिक नहीं बन जाऊँगा सन्तान न होगी।'

"आपने ऐसा होगा इतनी मैंने कभी कल्पना न की थी। विवाह करने से पहले मुझे सावधान होना चाहिये था।"

विमला कुछ क्षण चुप रही। फिर संयत होकर बोली—

"रजत के कारण एक दिन ही मुझे इनके असली रूप का ज्ञान हुआ।"

"क्या? हाँ-हाँ उस दिन तुम में दबे दबे कुछ कहा-सुनी सी हो रही थी।"

"उस दिन दादा और किवीपू के पतन की चर्चा करते हुए इन्होंने कहा था कि शायद बिना बोले गए यहीं चीन का नागरिक बन जायेंगे। मैंने बहुत बुरा भला कहा था।"

"भूल।"

"भूल नहीं पिताजी, शत्रु।"

"इसके बारे में और कुछ भी पता चला है?"

विमला उठी और आयेई को झाँका। उसने अभी तक करवट भी न बदली थी। मेरे पास कुर्सी खींचकर बैठते हुए धीमे स्वर में उसने कहा—

"थानेदार कह गया है कि आज या कल में इनकी गिरफ्तारी होगी।"

"युद्ध-काल में प्रतिपक्ष के नागरिक को गिरफ्तार करना वैध माना गया है। संदेह होने पर आयेई को पकड़ा जा सकता है।"

"पिताजी यदि अन्ततः यह चीनी गुप्तचर निकले तो मुझे कोई आश्चर्य न होगा।"

मेरा शरीर गरम पानी की तरह उबल रहा था। आयेई के गुप्त कार्य के बारे में जानने को मैं व्यग्र हो उठा। पूछा—

"क्या तुम्हें उनके गुप्तचर होने का कोई विश्वसनीय

प्रमाण मिला है ?"

"चार दिन हुए ये बहुत पीकर घर आए। पहले तो खूब हँस-हँसकर चीन की विजय की बात करते रहे फिर एकदम ठहाका मारकर बोले—विमला तुमने सुना मालुम में एक ट्रान्समिटर मिला है। मैंने कहा—मालुम के ट्रान्समिटर का समाचार तो अखबार में भी छप चुका है। उससे क्या हुआ ? आप तो रोज उस आदमी के घर जाते हैं। उस दिन भी वहीं से लौटे थे।

भ्रम का धुंध मिटने लगा था। मैंने चुपचाप सिगरेट खत्म की। बचे हुए टुकड़े को धरती पर फेंक पैर से मसलते हुए कहा—

'पुलिस को खबर देनी होगी। ऐसा आचरण विपत्ति जनक है।

एक फीकी मुस्कराहट विमला के चेहरे पर खेल गई।

'मैं थानेदार को सब बता चुकी हूँ। जहाँ देश की रक्षा और उसके सम्मान का प्रश्न है वहाँ मैं कुछ नहीं छिपा सकती थी।'

हल्की-सी आहट हुई। हमने देखा आचार्य दरवाजे में खड़ा था। उसकी आँखें लाल थीं—नींद के अभाव से या मदिरा के प्रभाव से ? या दोनों ही कारण थे ?

उसने पूछा—"आप कब आए ?

'कुछ देर हुए।

वितृष्णा से मैंने आचार्य की ओर से आँखें हटा लीं। विमला को देखा। उसका मुख काला पड़ गया था। वह एकदम उठकर

अंदर चली गई। अपनी इकलौती बेटी की इस अवस्था पर मेरा हृदय करुणा और अवसाद से भर गया। इस विदेशी के प्रेम में फँसकर उसने अपना घर-द्वार, अपना कुल-कुटुम्ब सब कुछ त्याग दिया था। उसकी कच्ची बुद्धि यह मूल तथ्य नहीं ग्रहण कर सकी थी कि स्थायी आधार पर अपना अलग संसार बसाने के लिए प्रेम के अतिरिक्त और कुछ भी चाहिये। और कुछ क्या? मन का मेल सुमति। यदि सुमति न हो तो दुनिया का घर हो या बाहर कोई कारोबार नहीं चलता है। विमला सन्तान चाहती है आयेई सन्तानहीन रहना चाहता है। विमला को स्वदेश से प्रेम है आयेई को विदेश से। चालिया के जन्म के बाद उनमें विषम स्थिति पैदा हो गई है। आयेई और विमला में उतना ही अन्तर हो गया है जितना चीन और भारत में है।

आयेई ने मेरे सामने कुर्सी पर बैठते हुए कहा—

"गजन का कोई पता चला?"

"नहीं।"

"और प्रशान्त का?"

"नहीं।"

हम दोनों कुछ देर मौन रहे। समझ में नहीं आता था क्या बात करें। आयेई निर्विकार भाव से दीवार पर टँगे चीनी बन-माला सरणी के चित्र को देखता रहा।

हठात् मैंने कहा—

"आजकल कहाँ घूमते फिरते हो? दिखाई नहीं देते।"

"शायद विमला अब तक भारत भाग चुकी है।"

उसके स्वर में विरक्ति और व्यंग्य का गमन सामा

मिश्रण था।

"तुमसे जो प्रश्न किया है उसका उत्तर क्यों नहीं देते ?"

आर्थर ने कठोर दृष्टि से मुझे देखा। उसमें असन्तोष से अधिक आक्रोश था। मैंने आर्थर को कभी बिना हँसते नहीं देखा था। आज दुर्योग और अविश्वास के क्षण में उसका असली रूप मेरे समक्ष था। मैं कुर्सी पर तनकर बैठ गया। फिर उठ खड़ा हुआ। अपनी उत्तेजना पर नियन्त्रण करने में मैं अपने को असमर्थ पा रहा था। लगता था मेरी आँखें आग बरसा रही थीं। मैंने छड़ी उठाई आर्थर के निकट आया और कड़ककर कहा—

आर्थर सैनिक की नजर से कोई चीज चूक नहीं सकती है। सच कहो इन दिनों क्या करते रहे हो ?

आर्थर निश्चल बैठा रहा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया। मेरा पारा और चढ़ गया। मेरी हथेलियों और तलुओं में जलन होने लगी। शिरा-उपशिरा से चिनगारियाँ निकलने लगीं। निश्चय ही मेरा रक्तचाप बढ़ गया था। मैंने उसकी कमीज को मजबूती से पकड़कर कहा—

'बताओगे या नहीं ?

आर्थर ने मेरा हाथ झटका मुझे पकड़कर कुर्सी पर बैठा दिया।

"आप बहुत बूढ़े हो गए हैं। आप में इतनी शक्ति नहीं है कि मुझे मार सकें। और मैं हूँ—एक बलशाली जाति की सन्तान।

उसकी बोली में तिरस्कार था, उपहास था—और था मुझे विवशता को और हम सबको हीन समझने का पुष्ट भाव। मेरा ताप टीप के सुर तक पहुँच गया। मैंने छड़ी उठाकर आर्थर के

सिर पर प्रहार किया। सम्भवतः मैंने बहुत प्रबल प्रहार किया था। आह कहकर, आयेई वहीं बैठ गया।

विमला भीतर भात पकाने में लगी थी। छड़ी की आवाज और आयेई की आह सुनकर वह दौड़ी आयी। आयेई के सिर पर हाथ फेरकर देखा। गुमड़ा पड़ गया था। जिस स्थान पर चोट लगी थी वहाँ चमड़ी फट गई थी और रक्त छलक आया था।

"पिताजी यह आपने क्या किया ?

मेरे अन्तर का क्रोध अभी निःशेष नहीं हुआ था। मैंने क्या अविचार किया ? विमला का प्रश्न मैं नहीं समझा। भाव-शून्य दृष्टि से मैंने उसे देखा और देखता रहा। वह आयेई को सहारा देकर भीतर सोने के कमरे में ले गई और बिस्तर पर लिटा दिया।

मैंने अपने लिए एक सिगरेट बनाया। विधि की कैसी विडम्बना है एक ही जामाता और वह भी शत्रु के पक्ष का। दो पुत्र, दोनों मोर्चे पर—देश की रक्षा के निमित्त समर्पित। जिस देश में जन्म लिया है, जिसका भात खाया है संकट की घड़ी में उस देश की सहायता के लिए आगे न आकर आयेई ने भयानक भूल की है। यदि कोई भारतीय होनोलुलु में जन्म लेता है और वहीं रह-बस जाता है, तो उसे भारतीय कहना-मानना हमारी नीति नहीं है। वह होनोलुलु का ही नागरिक हो जाता है। किन्तु चीन की नीति ही उल्टी है। वहाँ की सरकार प्रवासी चीनियों का, जहाँ कहीं भी वे रहते हैं, विदेशों में रहने के लिए बढ़ावा देती है, उकसाती है। जहाँ तक मैं जानता हूँ चार-पाँच साल पहले तक आयेई ऐसा नहीं था। हो सकता है इस बीच उसका विचार परों

'इसलिए कि विमला ने मुझ पर जासूस होने का संदेह किया। पुलिस को बुलाया आपसे कहा।'

"और तुम कहना चाहते हो कि विमला का संदेह निराधार है।"

आवेई कुछ न बोला। मैंने प्रश्न किया—

"माकुम में पकड़ा जाने वाला गुप्तचर तुम्हारा मित्र है?'

"था।'

"सच बताओ। क्या तुम वास्तव में गुप्तचर नहीं हो? यह निश्चय है कि तुम बंदी बनाए जाओगे। मैं विमला के कारण पूछ रहा हूं। क्या तुम इस दल के शत्रु हो?

"मैं कुछ नहीं जानता। किन्तु माओ-त्से-तुंग एक महान् नेता है। वह न ग़लत बात कहेगा न ग़लत काम करेगा। पीकिंग रेडियो ने कहा है कि भारत ने आक्रमण किया है। और, और-

"और क्या?

जलते हुए स्टोव की दिशा में देखते हुए आवेई ने कहा— चीनी भाषा में कुछ समाचार-पत्र थे मैंने जला दिए हैं। उनमें कहा गया था कि सीमांचल चीनियों का है।

"कौन-सा भाग?

"यही स्थान, जहाँ हम लोग हैं।'

"और तुमने विश्वास कर लिया?

'हाँ। मेरे पिता ने भी यही बात कही थी।

उसका पिता? आसाम म वह मिस्त्री था। पिछले महायुद्ध के समय एक बार भेंट हुई थी। उन दिनों भारी

संख्या में चीनी सेना, यहाँ जापानियों के विरुद्ध मोर्चा स्थापित करने आई थी। मिस्त्री ने मुझसे कहा था कि मंचू राजाओं के शासन-काल में समस्त दक्षिण-पूर्वी एशिया पर चीनियों का आधिपत्य था। मेरा इतिहास का ज्ञान बहुत गहरा नहीं है लेकिन जब यह कहा गया कि असम भी चीनी राज्य के अन्तर्गत था तो [illegible] रिस व्याप गई थी। पर राज्यलोलुप चीनी नेताओं का यह नितान्त झूठा प्रचार था।

मैंने कहा— 'तुम अब हमारे देश के शत्रु हो।'

'मैं तो सच कहते हैं। सारा नक्शा अचल हमारा है। उन दोनों नक्शों में यह साफ दिखाया गया है।'

आर्थई [illegible] ने यह प्रदेश हमारा रहा है। अपराधी चीनियों के कुल आन से यह उनका नहीं बन जायगा।'

आर्थई चुप रहा। मैं कहता गया—

'जिस देश में तुमने जन्म पाया, जिसकी मिट्टी-हवा से तुम पल कर बड़े हुए, उसकी रक्षा के लिए हथियार उठाना तो अलग रहा, तुम उसे गुलाम बनाना चाहते हो। तुम गुप्तचर हो, तुम इस देश के शत्रु, अनार्य हो।'

'मैंने चीन का नागरिक बनने के लिए आवेदन-पत्र दे दिया है। यह देश मेरा नहीं है।'

'तो फिर मिसमा ने ठीक ही किया। पुलिस को खबर देकर उसने बहुत अच्छा किया। तुम उसे भी चीनी बनाना चाहते थे।'

आर्थई का चेहरा पीला पड़ गया। क्या कहे क्या न कहे, यह निश्चय नहीं कर पाया।

कैसी आश्चर्यजनक मनोवृत्ति है इन चीनियों की विशेषकर आज की दुनिया में। इसी तरह एक दिन हिटलर और तोजो ने दूसरों की धरती हथियाने के लिए दूसरा महायुद्ध रचा था। उसका क्या परिणाम निकला ? जर्मनी और जापान को मुँह की खानी पड़ी। वे धराशायी हो गए। आज चीनी भी अगर पर राज्य की लालसा में तीसरा महायुद्ध रचना चाहते हैं तो उनका विनाश भी निश्चय है। चीन आहों से गूँजता एक भयंकर श्मशान हो जायेगा विधवाओं और अनाथों का देश और उसकी गलती के कारण दूसरे देशों को भी इस नरमेध में अपने सपूतों की आहुति देनी होगी। चापई भी यही चाहता है। मूर्ख यह नहीं जानता कि वह मात्र माओ-त्से-तुंग की बन्दूक है लक्ष्य पूर्ति का एक साधन और कुछ नहीं।

मैंने उससे और तर्क नहीं किया। वहीं कुछ देर खड़ा रहा फिर बाहर चले जाना चाहा। इतने में चापई बोला—

'क्या आप समझते हैं भारत चीन के सामने खड़ा हो सकेगा ?

'क्यों नहीं खड़ा हो सकेगा ? मैं क्रोध से काँप रहा था। 'कौन भारत को हरा सकेगा यह चीन के गुप्तचर के अतिरिक्त और कोई मान सकता है न सोच सकता है। जैसे भी हो अन्त में जीत हमारी होगी। हँसी-ठट्ठा है, अपनी धरती औरों को भोग देंगे ?

मैंने सोचा था आप लोग अपने हित की चिन्ता करके हमारी सेना का स्वागत करेंगे।

मैं अपने को संयमित नहीं रख सका। चापेई के गाल पर

बलकर एक थप्पड़ रसीद किया। एक भद्दी की यह गुस्ताखी! गाल पर हाथ रखकर, मार्था ने अंगारे भरी आँखों से मुझे देखा। शायद मुझ पर हमला करना चाहती थी। पुलिस को देखकर रुक गया।

मैं वहाँ से चला आया। बाहर बिमला मूर्तिवत् खड़ी थी—अवाक् और अडोल। वह एकटक दूर कहीं देख रही थी। उसकी टूटी जिन्दगी का ध्यान कर मेरा मन ग्लानि से भर गया। निकट जाकर मैंने कहा—

दुःखी न हो बिमला। तुम जैसी बेटी का पिता होकर मैं अपने को धन्य मानता हूँ। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मार्था एक गुलाम है, हम सब की बेटी है।

बिमला ने मेरी ओर देखा और सिर झुका लिया।

इतने में एक पुलिस वैन आकर रुका। स्वयं सुपरिन्टेण्डेण्ट साहब इन्स्पेक्टर लेकर आये थे। पल भर पर का और मुझे समान का आदेश देकर वह मार्था को लेकर वैन में चले गये। मैं बाहर हो गया। सिगार की पेटी निकाली और सिगरेट जलाकर विक्षिप्त-सा धूम में धुएँ के छल्ले छोड़ने लगा। मुझे लगा जैसे मैं एक महान अभिनेता बन गया हूँ। मेरे कानों में युद्ध के स्वर गूँजने लगे। अचानक सीधे दूर होम गार्ड युद्ध की पहला और तोपों का गर्जन मेरे कानों में प्रतिध्वनित होने लगा। मेरी आँखों के सामने 'कुली कामारुनी'[1] स्पष्ट होकर नाचने लगा। कोई ऐसा नहीं कर पायेगा तुम्हारा कोई देगा नहीं कर पायेगा। मार्था तुम्हारे इस घर का बच्चा-बच्चा शत्रु होगा।

[1] कुली कामारुनी—बर्मियों में भगोड़ों के लिए कहते हैं।

जब तक वे बदला नहीं ले लेंगे चैन से नहीं बैठेंगे। सुना है रूस और आर्लोग में घमासान युद्ध मचा हुआ है। मुझ जैसे सहस्रों पिताओं की सन्तान आर्थेई जैसे बर्बरों का सर्वनाश करने के लिए युद्ध कर रही है। विजयी होगी हमारी सन्तान निस्सन्देह विजयी होगी। मैंने भगवान् के चरणों में प्रार्थना की। देश में एक बार फिर रणचंडी भगवती अवतरित हो।

थानेदार आर्थेई को लेकर बाहर आया और वे दोनों वैन में बैठ गये। आर्थेई ने मेरी तरफ टेढ़ी नजर उठाकर भी नहीं देखा। मैंने भी आगे बढ़कर कुछ नहीं कहा। वैन नगर की दिशा में चली गई।

अन्दर के कमरे में मैंने एस पी की आवाज सुनी। वे विमला से बात कर रहे थे। कदाचित् आर्थेई के भूत वर्तमान और भविष्य के बारे में। मैंने सिगरेट का लम्बा कश खींचा। सहसा मेरा साँस का विकार भड़क उठा। खाँसते-खाँसते निढाल होकर पास की एक बेंच पर बैठ गया। जब सँभला तब तक कमरे की बातचीत समाप्त हो चुकी थी। सामने अहाते के फाटक से एस पी की कार बाहर निकल रही थी। मैं उठकर अन्दर चला गया।

विमला बैठक में नहीं थी। उसे ढूँढता हुआ मैं सोने के कमरे में पहुँचा। देखा एकाग्रचित्त हो आलमारी खोलकर वह अपने सारे गहने एक सन्दूकची में रख रही थी। चेहरे और आँखों पर गहरी उदासी छाई थी।

मैंने पूछा— 'क्या कर रही हो विमला ?

'पाप का प्रायश्चित्त।'

''इन गहनों से कैसा प्रायश्चित्त ?

"माँ से सुना है स्वर्ण दान कर प्रायश्चित्त किया जा सकता है।"

माँ के मन से ब्राह्मणत्व का संस्कार अभी दूर नहीं हुआ था। उसका ऐसा कहना अस्वाभाविक नहीं था।

लेकिन इन गहनों का दान किसको दोगी?

"सरकार को। सरकार युद्ध अभियान के लिए सोना चाहती है।"

"इतने सब गहने दे दोगी!"

"दे देती हूँ पिताजी। मैं इनका क्या करूँगी?"

उसके प्रश्न का मैं क्या उत्तर दे सकता था। आयेंडे का क्या होगा, मैं कुछ नहीं जानता था। मुकदमा निश्चय ही चलेगा। फिर विमला का क्या होगा?

"कुछ दिन रुक जाओ। जल्दी में कुछ नहीं करना चाहिए। माँ से भी पूछ लो।"

"अब किसी से क्या पूछना है। एस पी साहब ने कहा है उन्हें आयेंडे पर पूरा संदेह है। मालुम में पकड़े गए वायरलैस सैट मकान में भी उनका हाथ था। मेरा और उनका संबंध अब असम्भव है पिताजी। उनके साथ रह कर जो पाप किया है उसका प्रायश्चित्त करना चाहती हूँ।"

धूप तेज हो रहा था। दिन भर का थकाव हल्का पड़ने लगा था। कुछ भूख महसूस हुई। विमला अपने आभूषण संदूकची में रख चुकी थी। आज उसे भूख-प्यास कहाँ थी? उसे अविलम्ब सोने का दान करने की उत्सुकता थी। मैंने अनुमान किया लगभग तीस हजार से कम का सोना नहीं था। मैं तो

अपनी जमीन-जायदाद घर-द्वार सब बेचकर इतना रुपया इकट्ठा नहीं कर सकता था। बिमला की दान-क्षमता देखकर मेरे मन में उसके लिए श्रद्धा हुई।

मैंने कहा— 'बेटी, मुट्ठी भर भात पेट में डाल लो।

मैं अभी कुछ नहीं खाऊँगी पिताजी।'

मैंने देखा अगर मैं चला गया तो आज यह अनाहार रह जाएगी। मैंने थोड़ा रुककर कहा—

'खाँसी बहुत सता रही है। घर जाने को जी नहीं चाह रहा है। यहीं मुट्ठी भर गरम भात खा लूँगा।"

बिमला बुद्धिमान लड़की है। इतने विषाद में भी मेरी बात का अर्थ समझकर वह मुस्कराई। आभूषणों की मंजूषा आलमारी में रखने को बढ़ी। आलमारी के दरवाजे से टकराकर सामने दीवार पर टँगा विवाह के अवसर पर लिया गया उसका और आनंद का चित्र जमीन पर गिर पड़ा। वह चित्र उठाने के लिए झुकी तो एक टूटे काँच के टुकड़े से अँगुली कट गई। रक्त की बूँदें फ़र्श पर गिर पड़ीं। साथ-साथ आँखें सजल हो आईं।

मेरी छाती अवसाद से भर गई।



तीसरा भाग

उस दिन देर से धूप निकली थी। घर के बचे काम को निपटाकर, प्रमिला गरम पानी से नहाई थी और अपने केश धूप में सुखाने को फैला दिए थे। सामने आँगन सूरज की किरणों से सोने के टुकड़ों के समान चमक रहा था। मैं नहाने को प्रस्तुत था। इतने में प्रमिला ने कहा—

'तीन बेटा-बेटी हैं, जिनमें से दो की कोई खबर नहीं और एक को पति निगल गया पर यह। न जाने अरुणी उस मकान में क्या कर रही है? यहाँ क्या नहीं बना आती?

इतनी सम्पत्ति की देखभाल कौन करेगा प्रमिला? मेरी आलमारी में सोने के आभूषण भरे हैं। एक पूरी सन्दूकची भरी है। और थोड़ा बहुत भी साधन है।

"इस फ्रुन को लो।' प्रमिला ने गहरी साँस ली। "आभूषण और साधन लेकर आप क्या करती। जब गया तो सब गया। चि. इस तरह गिरफ्तार होने से तो परमात्मा उठा लेता तो वही अच्छा होता।

'प्रमिला तुम्हारे आँगन में काला साँप आकर फिर काट और अनजाने तुम्हें डस ले जो इतने का डर हो तो क्या तुम उस फिर भी यह निकम्मन होगी

'तो फिर साँप किन का है।'

"अपनी असावधानी को। प्रमिला, हमारे-तुम्हारे रहते यह दुर्घटना कैसे हो गई ?'

विमला ने जब आर्थर से विवाह के लिए आग्रह किया था तो उसने इधर-उधर के बहाने बनाकर बच निकलने की कोशिश की थी किन्तु विमला ही न मानी। उसका इतना मन देखकर हमारे मन ने भी मान लिया। वह मनचाहत के संग हो गई। अनेक साल बीत गए। सुख से बीत गए। विमला को कोई संदेह नहीं हुआ। न तब जब कि सन्तान के लिए आर्थर ने कोई आस-अभिलाष प्रकट नहीं की और न तब ही जब उसने भारतीय नागरिक बनने से इन्कार कर दिया। विमला का विचार था शत-सहस्रों वर्षों से चीन और भारत के सम्बन्ध जैसे रहे हैं सहस्रों वर्ष वैसे ही रहेंगे। किन्तु हिमालय पर अतिक्रमण के साथ आर्थर का पैशाचिक रूप सामने आया। और अब वह अकेली अपने सूने घर में सोच रही थी कि कैसे आर्थर को तलाक दे। पिछले एक-दो दिन में उसने वकीलों से परामर्श किया है। उनका कहना है, पति की नागरिकता के साथ ही पत्नी की नागरिकता जुड़ी रहती है। अपने मन के भाव से वह आर्थर को अवगत करा चुकी है। वह आर्थर की सारी सम्पत्ति और जायदाद सरकार को सौंप देना चाहती है। केवल अपने निजी आभूषण उसने प्रायश्चित के हेतु, अलग रख लिये हैं। उन्हें स्वयं अपने हाथों सरकार को भेंट करेगी। एक शर्त पर—कि उन्हें चीनियों के विनाश के लिए, गोली-बन्दूक में परिणत किया जाये।

सरसों का तेल शरीर पर मलकर, मैंने दीदी प्रमिला के

आगे सरकाते हुए कहा—

"उसे आज शाम को क्या मैं बुला लूँ ?"

"मैंने उसे बुलाया है परन्तु वह आयगी या नहीं यह मैं नहीं कह सकती।"

"क्यों ?"

"उसने कहा है डिब्रूगढ़ जायगी।"

"आज ही ?"

"हाँ।"

"अच्छा। उसे जाने दो।"

"आप जानते हैं वह डिब्रूगढ़ क्यों जा रही है ?"

"हाँ।"

"किस लिए ?"

"तलाक का मुकदमा दायर करने।"

प्रमिला कुछ देर के लिए मौन हो गई। तलाक की बात उसे नहीं सुहाई। नारी के जीवन में इससे बड़ा दुर्भाग्य नहीं हो सकता। किन्तु ऐसा भी नहीं था कि वह न जानती हो कि एक शराबी के साथ रहना कितना कठिन है। फिर भी वह बोली—

"एक बार फिर घर जाना भी क्या बुरा था।"

"लेकिन क्या, किस लिए ?"

"क्या जाने भावेश की नाक फिर [illegible] [illegible] मानसिक यन्त्रणा भोगने।"

"एक बार और [illegible] सम्भल भी तो सकती है।"

प्रमिला अनसुना कर गई। आप न जाओ। मैं भी स्नान कर

चला गया। स्नानघर में एक बार फिर मैंने अपने को मुक्त अनुभव किया। अचानक बाग की हवा का एक झोंका आया और सारे शरीर को स्पर्श करके चला गया। उसकी सुखदायी अनुभूति पाकर मैंने सोचा—

'प्रमिला कितनी भोली है। देशघात जैसे जघन्य पाप को भी अपनी सन्तान के हित में वह क्षमा करने को तैयार है। वह आर्येई को साहस देना चाहती है। किन्तु समय और समाज उसे क्षमा नहीं करेंगे और न ही उसकी अपनी पत्नी और ससुर उसे क्षमा करेंगे। उसे दंड मिलना चाहिए क्योंकि वह शत्रु के षड्यन्त्र में सम्मिलित है। उसके बाद यदि आर्येई नामक व्यक्ति का कुछ शेष रह जाए तो उसे क्षमा करो उस पर दया करो। किन्तु यह निश्चय है कि उसे दुबारा जवाई के रूप में स्वीकृति नहीं मिलेगी।'

बाहर मोटर का हॉर्न सुनाई दिया। कान लगाकर अनुमान करना चाहा क्या गाड़ी अपनी पहचान की है। नहीं कोई और थी। वह अधिक न रुकी। तुरन्त ही उसके जाने की आवाज सुनाई दी। पत्नी ने अपनी आदत के अनुसार दरवाजा पीटते हुए कहा—

'आपने सुना चिट्ठी आयी है।

'किसकी चिट्ठी प्रमिला?

'रजत के हैडक्वार्टर्स से।

जैसे-तैसे कपड़े लपेट जल्दी से मैं बाहर आया। प्रमिला के हाथ से लिफ़ाफ़ा लिया उसे फाड़ा और पढ़ा और पढ़ा।

हैडक्वार्टर्स ने सूचित किया था—

आपके पुत्र की कोई खोज नहीं मिली है। शायद वह खेल रहा है।'

छाती पर पत्थर रखकर प्रमिला को यह दुखद समाचार सुनाया। सुनते ही सारा घर शोक विषाद से भर गया। मैं भी अपने आँसू न रोक सका। रंजन के बारे में अनेक प्रकार की कल्पना करके अपने मन के खिन्न भाव को अब तक दबा रखा था वह एकदम फूट पड़ा। हिमालय की बर्फ की शुभ्र चादर ने रंजन को अपने में ढक लिया था। जिस मौत का निमन्त्रण विमला बनी थी उसी ने सब रंजन के प्राण लिये। यह मौत हत्यारी है। यह इन सबका नाश करके रहेगा।

दीदी और ममता को मान के लिए आमन्त्रित किया था, यह सब विस्मृत हो गया। सुन विद्यार्थियों के कमरे जाना था वह भी ध्यान से उतर गया। हाँ सबेरे नौकर को बाजार भेज दिया था। अब वह तीन रुपए की मछली का एक छोटा-सा टुकड़ा चार रुपये देकर लाया तो प्रमिला का पारा दुगना हो उठा। उसने कहा—

अरे क्यों इतने पैसे खर्च कर यह मछली लाया है? कौन खायेगा इसे?"

नौकर ने पूछा— क्या हुआ भाभी? कुछ बुरा हुआ?

एक अतिथि विशेष का ख्याल कर के लिए मैंने बाजार का दिखाया परन्तु हम कहा— अरे तुम जाओ यहाँ से और मछली को बाहर फेंक दो।

नौकर ने असमंजस में मगर आहट देखा और देखता रहा। फिर शायद वह समझ गया—अब दा नहीं रहे। मैं उनका

पड़ा था। प्रमिला धरती पर लोट रही थी और बिलख रही थी। नौकर दुविधा में था मछली रहने दे या फेंक दे। मैंने सोचा शोक के आघात से अगर आदमी भी औरत की तरह विचलित हो जाये और हाय-हाय करने लगे तो घर का कारोबार नहीं चल सकता। और घर ही का क्यों देश गाँव भी नहीं चल सकता।

मैंने नौकर को डाँटते हुए कहा—

'फेंक क्यों नहीं देता मछली को ?'

इस बार उसने मछली को हाथ में उठा लिया। प्रमिला का क्रन्दन तीव्रतर हो गया। इतने में किसी के स्वर ने मेरे हृदय को कंपकंपा दिया। बेलि आ गई थी और उसके पीछे आ रही थी वह लड़की जिसे हमने अँगूठी पहनाई थी। मछली फेंकने की बात उसने सुन ली थी। आशंकित हो आँगन से ही प्रश्न किया—

'मछली क्यों फिंकवा रहे हैं ? क्या हुआ है ?'

'बेलि रजत की खबर आयी है। उसका कोई पता नहीं है।'

बेलि स्तब्ध रह गई। उसने खाली आँखों से मुझे और प्रमिला को देखा। मैंने अमला पर स्नेह-भरी दृष्टि डाली। कहा—

आई[1] इधर आओ। आओ मेरे पास।

अमला सहज सरल भाव से मेरे सामने आ खड़ी हुई जैसे कोई बालिका अपने अध्यापक के सामने आ खड़ी होती है। मेरी आई का रूप कितना सुन्दर है! आँखें गुलाब की कली के समान मधुर और मुँह बेलि के फूल के समान खिला हुआ। बड़ी कोमलता से मैंने उसे अपनी बाँह में भर लिया।

---

१ आई—असमिया में आई के अर्थ है माँ लेकिन स्नेह से बेटी को भी इस शब्द से सम्बोधित किया जाता है।

आई, सच तो भाग्य खराब है और हमारा भी। बड़ा चाव था कि एक दिन मुझे और उसे जोड़े के रूप में केले के पेड़[1] के नीचे खड़ा करके स्वागत करें और घर के भीतर लायें। लेकिन मनुष्य कुछ सोचता है और विधाता कुछ करता है। सुख वह देखना हमारे भाग्य में नहीं था।

अमला ने आँसुओं से अपनी आँखें पोछीं। सहसा प्रतिभा जहाँ खड़ी थी वहाँ से तेज़ी से उठकर आई और अमला को अपने अंक में भरकर मेरे पास से खींचकर ले गई।

तुम भाई जी मेरे पास से नहीं ले जा सकते। रजत चला गया तो इसकी आवश्यकता इस घर में और बढ़ गई है।

शोक-विह्वल होते हुए भी मैंने प्रतिवाद किया—

'प्रतिभा, यह तुम क्या कह रही हो? अमला को तुम [illegible]? रजत की अनुपस्थिति में तुम अमला को क्या दे सकती हो?'

मैं नहीं जानता प्रतिभा इस प्रश्न का क्या उत्तर देती। इसी बीच ही माँ बोल पड़ीं।

'आप लोग यह सब क्या कर रहे हैं? इन बातों के लिए अभी बहुत समय है। समधिन सुनो। उनकी [illegible] दो घण्टे से पड़ी रही है। खाने की कुछ व्यवस्था करनी चाहिए। [illegible]। बिना खाए आप लोग कैसे रहेंगे? अमला, मेरे साथ आओ।

---

१ असम में विवाह के पश्चात् नव-दम्पति घर के मुख्य-द्वार पर रोपे हुए केले के पेड़ के बीच खड़े होते हैं। वहीं घर के माता-पिता आदि उनका विधिवत् स्वागत करके घर के भीतर लाते हैं।

प्रमिला ने कहा—

बुरा न मानना समधिन। आपको स्नान के लिए न्यौता दिया था। कौन जानता था ऐसी कुघड़ी देखनी होगी। रसोई की टांड पर जलपान का सामान रखा है। आप कुछ खा लीजिए। लड़की को भी कुछ खिला दीजिए। मैं लेटने जा रही हूँ। मेरी तबियत ठीक नहीं है।

कमरे में जाकर प्रमिला बिस्तर पर गिर गई और सिसक-सिसककर रोने लगी। उसका रोना सुनकर मेरे हृदय में भी करुण रागिनी बज उठी। मैंने पूरी गहराई और तीव्रता से अनुभव किया कि सन्तान का सन्ताप कैसा भयानक होता है। यह क्षति कभी पुराई नहीं जा सकती है।

मैं पास रखी एक कुर्सी पर बैठ गया और आँखें बन्द करके रजत की अविस्मरणीय आकृति की कल्पना करने लगा।

याद आया बचपन में कैसे मेरे पास आकर घुटनों के बीच खड़ा हो वह अपनी अटपटी तुतली मिसरी घुली वाणी में कहता था—'बाबा बाबा'। ऐसा लगा मानो वही स्वर मैंने फिर सुना। मेरे गले में झूलकर वह कह रहा है—'बाबा बाबा, बन्दूक चलाता हूँ। देखिए। धूम धूम धूम'। वह गोली मेरे हृदय को बेध गई। उसने एक गहरा गड्ढा बना दिया। जितने जिऊँगा इस घायल हृदय को लेकर ही जिऊँगा।

जब वह बड़ा हुआ और कॉलिज जाने लगा तो उसके आकर्षक शरीर को देखकर मैं अपने को भूल जाता। फिर एक दिन वह सैनिक अफसर हो गया। मेरे पास आया और एक छोटे-से बालक के समान भोलेपन से बोला—

'बाबा, मैं आपसे बड़ा वीर बनूँगा। अब हम लोग आज़ाद हैं।'

और आज़ादी की रक्षा में उसने अपने प्राण तक अर्पित कर दिए। सच, वह मुझसे हजार गुना वीर निकला।

धीरे-धीरे ऐसा मालूम हुआ कि दिन में ही अँधियारा छाता आ रहा है।

घर की सबसे प्रिय सन्तान के अभाव में सब कुछ प्राण-हीन और निरानन्द हो गया है।

जिस कमरे में रजत रहता था उसमें उसका बिछौना, उसकी आलमारी, उसका कपड़ों का स्टैंड, उसके कागज-पत्तर, जैसे वह छोड़ गया था वैसे ही रखे थे। आलमारी में उसके बचपन के, छोटे से बड़े होने तक के सारे खिलौने सजे रखे थे। पास गया और देखा। शेर के मुँह पर एक दाग लग गया था फिर भी वह पहले की तरह अपने दाँत दिखा रहा था।

अपने मालिक को देखकर वह कैसे दुम हिला रहा है और स्वतः उससे कह रहा है, 'ए करतन, मैं तेरे लिए आज शिकार देखकर आया हूँ।' कहाँ? 'दिगराई नदी के पास जंगल में। चलो, चलें। ठीक सुन्दर मृग। हिरन है।'

शेर के साथ रजत शिकार पर चल देता है। खिलौने की बन्दूक लेकर वह जंगल में—अर्थात् कमरे के कोने-कोने में—हिरन की तलाश करता है। सहसा हिरन उसको सामने से आता है। वह निशाना साधकर गोली चलाता है—धाँय धाँय धाँय। हिरन को लादकर घर लाया जाता है। दावत की व्यवस्था होती है। प्रशान्त खाल उतारकर मांस साफ करता, विमला

पकाएगी। अगर किसी ने बीस कर दी तो कड़ा दंड दिया जाएगा।

एक दिन माँ से किसी बात पर पिटकर बिमला ने गोश्त पकाने से इन्कार कर दिया। प्रशान्त ने भी गोश्त साफ़ नहीं किया। वह बाहर मैदान में 'बीर्या'[1] पकड़ने चला गया। फिर क्या था, रजत पर क्रोध का भूत सवार हो गया। वह शिकार से लौटते समय एक राजा के समान था और बिमला आदि रसोइए और नौकर। उसके आदेश की उपेक्षा का दण्ड था पीठ पर बेंत की मार।

उस दिन जब बहन भाई मार खाकर अधीर हो रोने लगे तो माँ ने आकर रजत को समझाया। उसने उद्दण्ड भाव से उत्तर दिया—

'जाओ चली जाओ। मेरे राज्य का शासन भंग करोगी तो तुम भी पिटोगी।'

उसके राज्य में सेना-सामन्त चोबदार-नतकियाँ रेल-मोटर दुगा-मयानी हाथी घोड़े, शेर-कुत्ते सब थे।

आज उसका वह निष्कण्टक राज्य बारहभुइयाँ बक्सारी बेतिया घरों के राज्यों की तरह काल के गाल में समा गया है। केवल उसके अवशेष स्मारक-चिह्नों के रूप में आँखों के सामने रह गये हैं।

ऐसा आभास हुआ, उस किसौन के शेर की आँखें सजल हो आई हैं। उसके मालिक ने असमय ही हिमालय पर अपने प्राणों का उत्सर्ग जो किया है।

मैंने अपने को मलमिस पसीने से लथपथ पाया।

---

१ बीर्या—टिंगन पखाड़।

देश के घर घर से रजत जैसे सपूतों ने सीमान्त की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया है। मेरी और प्रमिला की तरह आज उनके माता-पिता भी दुखी हैं।

विश्वासघाती दामु को थामने के लिए अभी और खप्पर भरना होगा।

मुझे रजत की चिट्ठियाँ याद आईं। उसने सीमान्त में लिखी थीं। ऊपर से पुलिन्दा उतारा। अक्षरों पर धुएँ की पर्त जम गई थी। उन्हें हाथ में लेकर मैंने अनुभव किया मानो ये पत्र अभी गंगा में डुबकी लगा पवित्र होकर आये हैं।

मैं एक पत्र पढ़ने लगा—

पिताजी,

शीत ठिठुरन की शीत उत्तर-दक्षिण पूर्व-पश्चिम सब दिशाओं से उतर रही है। बर्फ़ पड़ने लगी है। बर्फ़ के कण निधान् ऋषि-महात्माओं की भाँति मौन हैं। सीमारेखा के उस पार माओ-त्से-तुंग के सिपाही कभी-कभी नज़र आ जाते हैं। उनकी हँसी में छल है कपट है। कई वर्षों से हिमालय पर उनकी निगाह लगी हुई है। मन में आभास होता है कि एक दिन वह टिड्डी दल की तरह टूट पड़ेंगे। हो सकता है यह मेरे मन का भ्रम है। हमारे कमांडरों और देश के सेनाओं का मत इसके विपरीत है। वे कहते हैं ऐसा कभी नहीं होगा। यह सीमान्त निरापद है। एक दिन सेना के साथ में दलाई लामा आये थे। उसी दिन मैंने जान लिया था कि चीनी हम मार्ग का नहीं बूझते। वे प्रतिघात-प्रिय जाति हैं। दुनिया के सारे देशों में महात्मा गांधी के सिद्धान्तों और मनुष्य का नहीं

स्वीकार किया है

पत्र कई स्थानों पर कटापिटा था। शायद वह इस विषय पर और कुछ कहना चाहता था किन्तु कह नहीं सकता था। मैं उसके मन की बात समझ गया। वह सदा कहता था, भारत को एक सबल प्राणवान् देश बनना है उसे एक बड़ी सेना चाहिए। शक्ति का आदर होता है। मैं भी ऐसा ही मानता हूँ।

कभी-कभी वह अपने विवाह के सम्बन्ध में लिखता था पिताजी

आपने मेरे उपयुक्त लड़की चुनी है। मैं सोचता हूँ अमला से विवाह करके मैं सुखी होऊँगा। आपने लिखा है वह सुन्दर है विनीत है स्वस्थ है। यह सब मुझे पहले से मालूम है। आप से कहते लाज लगती है किन्तु फिर भी आज कहूँगा। यदि आपने इस लड़की से मेरा विवाह न स्वीकारा होता तो मुझे संदेह है कि मैं किसी और से कभी विवाह करने को तैयार होता। पिताजी प्यार नाम की जो वस्तु है उसे समझना कठिन है।

उसने पत्र यहीं समाप्त कर दिया था। हो सकता है इससे आगे अमला के प्रति अपने प्रेम की चर्चा मुझसे करना उसने अशोभन समझा हो। हो सकता है भाषा का अभाव हो। जो भी हो।

और बहुतेरी चिट्ठियाँ थीं। उन्हें कौन कहाँ तक पढ़ेगा। पढ़ते-पढ़ते रमन की आकृति मेरी आँखों के सामने घूमने लगी। मुझे लगा जैसे अपने कानों के पास मैं उसकी आवाज सुन रहा हूँ। गम्भीर और पुरुषोचित। सुनने वाले के मन में आत्म-विश्वास का भाव जगाने वाली।

पिताजी, पिताजी …जैसे कमरे में छिपकर कहीं बुला रहा है … या … मां

मैं कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और एकाग्रचित्त दीवार पर टँगा मरहूम लेफ्टिनेन्ट रजत मजुमदार का चित्र देखने लगा।

हल्की-सी आहट हुई। एक स्त्री-मूर्ति धीमे-धीमे आकर मेरे पीछे खड़ी हो गई। बिना मुड़े मैंने कहा—

'ममता ?

हाँ पिताजी। माँ आपको खाने के लिए बुला रही हैं।

'क्या खाऊँ बेटी भूख-प्यास तो सब मिट गई है।''

बिना खाए कैसे चलेगा पिताजी। न खाने से पित्त का विकार हो सकता है। आपका दमा उखड़ जायगा।

'पित्त और दमे की बात तुम्हें कैसे मालूम हुई ?'

सिर झुकाकर ममता ने कहा— उन्होंने बताया था।

रजत ने ?'

'हाँ।''

'क्या कहा था उसने ?

कहा था विवाह के पश्चात् आपको नियम से समय पर भोजन कराना मेरा मुख्य काम होगा।'

मेरी छाती फटने लगी। किसी तरह संयत होकर मैंने कहा—

'वह मेरा बहुत मान करता था। मैं भी उसे तुम जैसी सुलक्षिनी लड़की के हाथ सौंपकर निश्चिन्त होना चाहता था। किन्तु विधाता ही रूठ गया।

मेरे चरण स्पर्श करते हुए ममता ने कहा—

पिताजी, मेरा ही भाग्य खोटा था नहीं तो विवाह से पहले

ही कैसे विधवा हो जाती।"

मुझे अनुभूति हुई कि ममता की वाणी असाधारण माम
में करुण है। साथ ही, मुझे स्मरण हो आया प्रशान्त का वह पत्र
जो उसने हास में अपनी माँ को लिखा था कि ममता उसे प्राणों
से भी प्रिय है और ममता भी उसे समान रूप से प्रेम करती है
मैं सत्य जानना चाहता था। उसकी आँखों पर दृष्टि जमाकर
मैंने कठोर स्वर में पूछा—

"तुम रजत को कितना प्यार करती थीं ?

इस अचानक प्रश्न से एकबारगी संत्रस्त होकर ममता ने
एक ओर मुँह करके उत्तर दिया—

'यह कौन जानता है।'

यह कहकर वह तेजी से कमरे से निकल गई। मैं अनु
मान नहीं कर सका कि ममता के मन का भाव क्या है।
स्त्री-पुरुष का प्रेम रहस्यमय है। उसे समझना सरल नहीं है।
किन्तु यह जानने के लिए कि ममता रजत को एक-मन से चाहती
है या नहीं मेरा मन व्यग्र हो उठा।

इसी समय थोड़ा-सा सूजी का हलुआ और एक प्याला चाय
लेकर बेबि कमरे में आई। उन्हें मेज पर रखते हुए बोली—

"ये खा लें। चाय प्याले में डाले देर हो गई। ठंडी न हो
गई हो।'

मैंने कहा—"कैसी विडम्बना है! खाने को तुम्हें बुलाया
था और खिला तुम रही हो।

बेबि ने मुझे कुर्सी पर बढ़ा दिया और हलुए की प्लेट आगे
बढ़ा दी। मैं बेबि का मुँह देखने लगा। उसने मीठी झिड़की दी।

"मुझे क्या देख रहे हैं ? खाइये।"

"एक बात पूछना चाहता हूँ। बताओगी ?"

"क्या ? कहिए।"

'मैं यह माँग नहीं करता कि लड़की अपने होने वाले पति पर अपना सम्पूर्ण मन और प्राण अर्पण कर दे लेकिन इतना अवश्य चाहता हूँ कि वह अनुरक्ता हो। आज मैं यह जानना चाहता हूँ कि ममता के मन में रजत के लिए कितना प्यार है।"

"क्यों ?

मैं कोई कारण न ढूँढ पाया। केवल इतना ही कहा—

"हृदय तर्क नहीं मानता है, यह तो तुम जानती हो। प्रशान्त ने लिखा है कि ममता उसे अच्छी लगती है और वह भी ममता को अच्छा लगता है। यदि ऐसा था तो तुमने ममता को रजत के लिए क्यों दिया ?"

"सुनना चाहते हैं आप ?'

'हाँ।

"आज ही ?'

"मैं समझता हूँ आज ही ठीक होगा।'

"पहले नाश्ता कर लें। मैं समवित को भी कुछ दे आऊँ।"

मैंने नाश्ता शुरू किया। भाभि जल्दी नहीं लौटी। विलम्ब लग गया। वह आई तो मैंने शिकायत की—

"बड़ी देर लगाई भाभि !"

'आपके अप्रगत प्रश्न का उत्तर देना उचित होगा या अनुचित, यह निर्णय नहीं कर पाई थी।"

"मतलब कैसे ?"

'अपने उत्तर में मैं जो कहूँगी वह सच भी होगा या नहीं यह भी मैं नहीं कह सकती। कौन माँ-बाप अपने लड़के-लड़की के मन में पैठ सकते हैं ?

वेलि का कहना सच था। मैंने गहरी साँस ली।

'तो न कहो वेलि। रहस्य रहस्य ही बना रहे।'

वह आराम से बैठ गई। बोली—

"नहीं मैंने कहने का निश्चय कर लिया है। अवश्य कहूँगी। हाँ माँ के नाते आपसे केवल एक आश्वासन चाहती हूँ।'

वह क्या ?"

'जो मैं कहने जा रही हूँ उसके कारण अमला के भविष्य पर किसी प्रकार से आँच न आए।

"क्या मतलब ?

वेलि रुक गई। मेरी ओर तीक्ष्ण दृष्टिपात किया फिर हँसकर बोली—"माँ के मन में सदा आशंका रहती है। न जाने कब बेटी के चरित्र में कोई खोट निकाल दे।

'मेरी ओर से तुम्हें कोई डर नहीं होना चाहिए वेलि।" मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले तनिक आवेग से कहा—"क्या यह सब फिर से स्मरण कराने की आवश्यकता है कि आज से नहीं, न जाने कब से मैं तुम्हारा विश्वास करता आया हूँ। और क्या अमला के विवाह की बात भी तुम्हारे कारण नहीं हुई ?

अपना हाथ खींचते हुए वह बोली—'बाल पकने को आए लेकिन आपका बालकपन अभी तक ज्यों का त्यों है। अच्छा सुनिए। बताती हूँ।'

मैंने सिगरेट सुलगाई और कुर्सी की पीठ से सहारा टेककर सुनने के लिए तत्पर हो गया। बसि ने कहना आरम्भ किया—

"अमला एक अद्भुत लड़की है। इसलिए नहीं कि वह मेरी बेटी है बल्कि वह एक रेडियो के समान है। उसमें विलक्षण ग्रहण-शक्ति है। बचपन में पेड़ पर एक गोरिया गुदाई[1] का रूप देखकर वह अपनी सुधबुध भूल गई थी। आज तक उसे विस्मृत नहीं कर सकी है। अगर कोई उससे पूछे तो वह यही कहेगी कि औरों की बात वह नहीं जानती लेकिन उसके लिए गोरिया गुदाई एक स्वर्गीय वस्तु है।

'आप जानते हैं जब से मेरे पति पलायन कर गए, आप लोगों का घर ही मेरा आश्रय रहा है। कितनी रात हो आप में से कोई भी आकर दरवाजा खटखटाए तो हम निश्शंक खोल देते हैं। आप लोगों पर हमारा इतना विश्वास है। अबला नारी किसी न किसी का विश्वास न करे तो रहे कैसे?

"रजत छुटपन से हमारे यहाँ आना-जाना रहा है। अमला को, जब से वह घुटनियाँ देती थी तब से उसने देखा है। दोनों साथ-साथ बढ़े हैं। उम्र के साथ उनमें अन्य प्रकार के सम्बन्ध भी स्थापित होने लगे। दोनों बागान के बीच की पगडंडियों पर, मस्त पक्षियों की तरह विचरण करते फिरते। मैंने देखा और कुछ नहीं कहा। न आपने ही कुछ कहा। हमने—मैंने आपने—देखा अनदेखा कर दिया। फिर, बातचीत में आपने ऐसा भाव प्रकट किया कि यदि उन दोनों के प्रेम को स्वीकार किया जा सके

---

१ गोरिया गुदाई—एक प्रकार का गिरगिट। इसकी विशेषता यह है कि यह देखने वाले की ओर एकटक देखता रहता है।

तो सुख की बात होगी।

'एक दिन ऐसी सम्भावना दिखाई दी। रजत आया और मेरे सामने एक कुर्सी पर बैठ गया। तब वह स्कूल का छात्र था। अमला अन्दर ही रही, बाहर नहीं निकली। मैंने भीतर जाकर उसे अपने पास बुलाया और पूछा—क्या हुआ अमला ? रजत से नहीं बोलती ? वह बाहर अकेला बैठा है। अमला ने उत्तर दिया—'मैं रजत दा के सामने नहीं जाऊँगी, माँ। मुझसे ऐसी बातें कहते हैं जिनसे लाज आती है।

"मुझे कौतूहल हुआ। अमला लाज का बोध होने की अवस्था में पहुँच गई थी। हमें सावधान रहना होगा। बहुत पूछने पर उसने बताया एक दिन रजत उसे सैर के लिए ले गया। वहाँ प्रेम की एक कविता सुनाई और कहा— अमला उसके हृदय का धन है। अमला का हाथ लेकर, साहबी ढंग से उसका चुम्बन कर लिया। मैंने सुना और अमला को बुला दिया। जा कोई बात नहीं है। बस, सँभलकर चलना।

"लेकिन अगले दिन से मैंने उनमें एक परिवर्तन देखा। उन्होंने बाहर आना-जाना कम कर दिया। घर में ही बैठकर बातों में समय बिताते। कभी-कभी रजत रात का खाना खाकर हमारे यहाँ आ जाता और बहुत रात गये तक बातें करता रहता। एक बार तो मुझे अपने बिस्तरे से उठकर उन्हें सचेत करने जाना पड़ा था।

'उसके बाद आपका नौकर उन दोनों के बीच पत्र लाने-ले जाने लगा। मेरी दृष्टि से उनकी एक बात, एक चेष्टा, एक गति नहीं चूकी। फिर, जिस दिन गाँव छोड़कर रजत कॉलिज पढ़ने

चला गया, मैंने देखा ममता पर यौवन छा गया। पहनने-ओढ़ने, खाने-सोने, बातचीत, सभी में अलबेलापन आ गया। विरह की अवस्था शुरू हो गई।

"छुट्टी और तीज के पर्व पर जब रजत घर आता ममता में नई स्फूर्ति आ जाती। वह खूब सजधजकर निकलती और मुझसे नाममात्र की अनुमति माँगकर सिनेमा देखने जाती। किन्तु ये छुट्टी और पर्व के दिन बहुत कम होते। आते और निकल जाते। इसलिए उनके प्रेम ने एक संयत रूप ले लिया।

"एक दिन रजत को कमीशन मिल गई। उसने साथ-साथ ममता को विवाह का एक पत्र लिखा। यह पत्र वह बहुत दिन छाती से चिपकाए रही। जब यह बात मुझ पर प्रकट हुई तो मैं समझ गई कि अब और रुकने का समय नहीं है। हमें शीघ्र ही प्रस्ताव रखना चाहिए। आप लोगों ने भी तद्रूप प्रस्ताव स्वीकार किया। एक दिन, जब वह चरखे पर ताना बुन रही थी मैंने प्यार से कहा—'बेटी तेरा भाग्य अच्छा है। मन-चीता वर मिल गया है।' वह सकुचाकर मुझसे चिपक गई। मेरे आँचल में मुँह छिपा लिया। मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगी, माँ। मेरी आँखों से आँसुओं की धार बह निकली। उन्हें पोंछते हुए मैंने कहा—'मेरी चिन्ता न कर ममता। जिस घर तू जा रही है वह मुझे अलग नहीं कर देगा।'"

देवि की कथा अवश्य युक्तिसंगत थी लेकिन मेरा पापी मन तर्क और प्रश्न किये बिना नहीं रह सका। कारण नारी-चरित्र के सही निरूपण में शारीरिक मिलन की बात एक मुख्य मानदंड है। कम से कम इतनी मेरी मान्यता है।

"क्या उन दोनों में कभी शरीर से सम्पर्क नहीं हुआ ?'

बेलि की भौंहें तन गई। उसने दृढ़ता से कहा— 'नहीं।"

मैंने सोचा, इस रहस्य को निश्चयपूर्वक न बेलि जानती है न भविष्य में मैं कभी जान पाऊँगा। इस विषय पर और जिज्ञासा अनुचित होगी।

"क्या कमला अब भी रजत को एक मन से प्रेम करती है ?"

'हाँ।

मैं आश्वस्त हुआ। किन्तु सहसा फिर प्रशान्त के पत्र का ध्यान आ गया।

'बेलि, एक बात और पूछूँ ? बुरा न मानना।"

"पूछिये।'

"प्रशान्त के साथ कमला का क्या सम्बन्ध है ?'

बेलि का मुँह तमतमा गया। वह बोली—

'प्रशान्त एक पशु है।'

'कैसे बेलि ?

'कहूँ तो बुरा न मानेंगे ?"

'नहीं मानूँगा, कहो।

'जो लड़की उसकी भाभी बनने जा रही है, क्या उसे पत्र लिखना चाहिए ? रोज उसका पत्र आता है।

'कमला जवाब देती है ?

"देती है।

'क्या जवाब देती है ?"

'मैं नहीं जानती। शायद यही लिखती होगी कि वह उसे पसन्द करती है, किन्तु रजत की तरह नहीं।"

मैं केमि के उत्तर से सन्तुष्ट नहीं हुआ।

"ममता के लिए प्रशान्त का कुछ भी लिखना उचित नहीं है।"

"मैंने भी यही कहा था किन्तु आजकल कौन किसे सँभाल सकता है। आजकल सब आज़ाद हैं।

"फिर भी ममता रजत के अतिरिक्त और किसी को प्रेम करती है यह जानकर रजत की आत्मा को स्वर्ग में भी शान्ति नहीं मिल पायेगी।

"आप क्या जानें मेरे मन में कभी-कभी कैसे विचार उठते हैं?"

"कैसे?

"सीता जैसी सती ने भी अशोक वाटिका में रावण का चित्र खींचा था। मैं पहले ही कह चुकी हूँ ममता एक रेडियो के समान है। इधर ग्रहण करती है उधर वितरण। उसका हृदय कभी-कभी सहज ही विचलित हो उठता है। नारी-हृदय विचित्र वस्तु है। उसका दो पुरुषों को एक साथ समान रूप से प्रेम करना कोई अचरज की बात नहीं है। नहीं तो यावज्जीवन चेष्टा करके मैं आपको क्यों नहीं भुला सकी? इसका यह अर्थ नहीं कि मैं अपने पति को प्रेम नहीं करती थी या कम करती थी।

केमि प्याला-प्लेट उठाकर पाकघर में चली गई। मैं अवाक् उसकी ओर देखता रहा। प्रतिमा के प्रति इतना प्रेम होते हुए भी मेरे हृदय में केमि का स्थान सदा सुरक्षित रहा है। हृदय की लीला निराली है।

इतने में सुना बाहर कुछ औरतें नारा लगा रही थीं—

'स्वर्ण दीजिए स्वर्ण"

रजत के कारण के आभूषणों का ध्यान आया। निमला की तरह, हम भी उन्हें स्वर्ण-कोष के लिए क्यों न दे दें ? जिस शत्रु ने रजत की हत्या की है उसके विनाश के लिए उनसे बंदूक-बारूद की व्यवस्था होगी। हम उनका क्या करेंगे ? मैंने बाहर आकर उनसे कहा—

"बैठिये मैं अभी आया।'

तेजी से मैं प्रमिला के कमरे में गया। प्रवेश करते ही जो काण्ड देखा तो स्तम्भित रह गया। प्रमिला ने कमला को अपने पास बैठा रखा था और उसे एक-एक करके सारे आभूषण पहना रही थी। उनके बोझ से कमला कुछ झुक गई थी।

मैंने कहा— 'प्रमिला बाहर सोना माँगने के लिए औरतें आई हैं।'

उसका उत्तर दो टूक था—

"उनसे कह दें कि घर में सोने का कण भी नहीं है।"

"क्यों इन गहनों का क्या करोगी ? इन्हें युद्ध के लिए न दे दें ?

वह क्रोध से भर उठी। प्रमिला के चण्डी स्वरूप से मुझे हमेशा डर लगता है। वह बोली—

"यह सोना इसका है। मैं देखती हूँ आप में बुद्धि का नितांत अभाव है।"

कमला इधर-उधर झाँक रही थी।

"लड़का चला गया और तुम बहू का शृंगार कर रही हो ?"

मैं अपनी कड़वाहट को नहीं दबा पाया।

"ठीक है एक लड़का चला गया लेकिन एक और तो है।

मानो किसी ने मुझे आकाश से फेंक दिया हो।

'क्या ?'

"इस सोने की प्रतिमा को पाकर मैं अपने हाथ से नहीं निकलने दूँगी। मेरा शरीर गिरता जा रहा है। मैं थक गई हूँ। कभी आपने इसकी भी चिन्ता की है ?

मैंने कुछ कहना चाहा किन्तु अमला बहुत अस्वस्थ अनुभव कर रही थी और बेलि दरवाजे के पास आ खड़ी हो मुझे तिरछी निगाहों से घूर रही थी।

मैं बाहर आया। सोना माँगने वाली औरत को खाली हाथ लौटा दिया। मैं अत्यन्त उद्विग्न था। प्रशान्त सदा से प्रमिला की प्रिय सन्तान रहा है। मन और चित्त से दोनों एक-दूसरे के निकट हैं। दोनों के दृष्टिकोण भी एक हैं। इसकी अपेक्षा मेरा रजत के साथ गहरा योगायोग रहा है। आज वह नहीं रहा। आज मैं सिवाय उसके और कुछ नहीं सोच पा रहा हूँ और न ही सोचना चाहता हूँ। आज सारा घर उसके लिए शोक मनाए, प्रार्थना करे उपवास करे—यह मेरी कामना थी। किन्तु दो घंटे भी न बीत पाये थे कि प्रमिला ने अमला को गहने पहनाकर उस छोटे बेटे की बहू बनाने की तैयारी शुरू कर दी। उसने रजत की आत्मा का अपमान किया है।

'रजत मेरे बेटे यह तेरी माँ अवश्य है किन्तु ममतामयी माँ नहीं है। यह राक्षसी है।'

मेरा अन्तर फटा जा रहा था। मैं वहाँ और नहीं रुक सका। रजत के कमरे में जाकर फूट-फूटकर रोया। कुछ देर बाद बेलि वहाँ आई। उसने दरवाजा बन्द किया। मुझे बिस्तरे पर लिटाया।

दिलासा देते हुए अपने भाव भरे स्वर में बोली—

आप आराम करें।'

मैं बिलकुल टूट चुका था।

'तुम न चली जाना बलि नहीं तो मैं कुछ नहीं कर पाऊंगा।

वह मेरे पास बैठ गई। मेरा हाथ अपने हाथ में थाम लिया।

'आपका मन इतना दुर्बल हो गया है ? मैं रहूँगी यहीं रहूँगी। आप सो जायें।

मैंने सोने की चेष्टा की लेकिन मेरी आँखों के सामने एक ऊँची दीवार आ गयी। उस पर खड़ा होकर एक महारथी शतघ्नी बाण छोड़ रहा था। पृथ्वी क्षार-क्षार हो रही थी। चिन-गारियाँ निकल रही थीं। दम्भ का चूर्ण हो गया। अत्याचार का अन्त हो गया। शत्रु निश्चिह्न हो गये।]

वह महारथी था—

रजत।

मेरी वीर सन्तान रजत।



चौथा भाग

नवम्बर के मध्य में अकस्मात् भारत का भाग्यचक्र घूमने लगा।

संख्या और शस्त्रों की अधिकता के बल पर चीनियों ने हमारी सेना को सीमांचल के कुछ प्रमुख स्थान छोड़ने पर—मैं समझता हूँ अल्पकाल के लिए ही—बाध्य किया। बोमडिला और वालोंग के पतन के बाद देश की रक्षा का कवच बना नेफा के दक्षिणी भाग में नीची पहाड़ियों का वह क्षेत्र जिसे फुटहिल्स कहते हैं।

एक सवेर मैंने देखा मोटर गाड़ियाँ पंक्ति बनाए तेजपुर की दिशा में आ रही थीं। तेल कम्पनियों और चाय बागान के विदेशी साहब लोग सपरिवार भाग रहे थे। उनके साथ हमारे कुछ देशी व्यापारी और अधिकारी भी थे। कोई सीधी कलकत्ते की सड़क पकड़ रहे थे, कोई गौहाटी पहुँचकर हवाई जहाज या रेल से बच निकलने की आस लगा रहे थे।

इधर विस्थापितों की सेवा और देशभक्ति के केन्द्रों के अतिरिक्त एक नागरिक प्रतिरक्षा संघ बन गया था। मुझे मैदान में स्वयंसेवकों का परेड कराने का दायित्व मुझे सौंपा गया। मैं एक भूतपूर्व सैनिक हो नहीं एक शहीद का पिता भी था। कुछ ईर्ष्यालु लोगों ने इसका विरोध किया। मेरे

आवेई का समूर होने की बात का बतगड़ बनाया। किन्तु अधिकतर लोग विशेषकर वे जिन्होंने आवेई की गिरफ्तारी के समय पुलिस के साथ मेरी बातचीत सुनी थी, मुझ पर पूरा विश्वास रखते थे।

उस दिन परेड के मैदान से लोगों में अत्यधिक उत्तेजना थी। सबेरे से ही सीमांचल से विस्थापितों के दल के दल नगर में उमड़े आ रहे थे। हमें संकट नज़र आया। यदि समय रहते जनता को सचेत न कर दिया गया तो ऐसा न हो कि भगदड़ मच जाये। विस्थापितों के आने से जो अफ़वाहें फैलनी तो लोगों में धीरज और विश्वास बनाये रखना असाध्य हो जायेगा। परेड समाप्त होते ही मैंने युवकों को आदेश दिया कि वे माइक्रोफ़ोन लेकर प्रचार का काम तुरन्त आरम्भ कर दें। उन्हें क्या कहना होगा, यह भी मैंने समझा दिया।

सारे नगर को एक विभीषिका ने अपने अंक में भर लिया था। बेलि और ममता को घर लाने के लिए मैंने एक स्वय सेवक भेज दिया। मेरा अनुमान था कि अब हवाई लड़ाई शुरू हागी। वालोंग थाटी सेन के बाद यदि चीनी डिगबोई और तिनसुकिया जैसे तेल के नगरों पर अधिकार करने के लिए अपनी सारी शक्ति का प्रयोग करें तो कोई आश्चर्य नहीं।

मैं संध्या तक घर नहीं गया। हवाई लड़ाई होने की स्थिति में क्या व्यवस्था करनी होगी, इस पर उच्च सैनिक अधिकारियों से बातचीत की। सब यही सोचते थे कि इस बार बन्दूक लेकर और रोशनी पर नियंत्रण करके ही रक्षा न हो पायेगी। उसके लिए ज़बरदस्त हवाई शक्ति की आवश्यकता

होगी । यहीं सुना कि भारत ने पश्चिमी देशों से सहायता माँगी है ।

इन में से जो बहुत भाव-विचारी स्वभाव वाले थे वे अपने देश के राजनैतिक भविष्य की कल्पना करके गहरी चिन्ता में पड़ गए । जो साहसी थे वे छापामार युद्ध की योजना बनाने लगे । इन्होंने निर्णय किया कि एक ऐसी टुकड़ी बनाने के लिए कुछ जोशवालों को तैयार किया जाये जो चीनियों के आने के बाद उनके हर काम और कदम में बाधा डालें और मुश्किल कर तोड़-फोड़ करें । एक ने सुझाव दिया कि पहले नगर के सारे स्वयंसेवकों की गिनती की जाय ।

इधर जगह-जगह स्वर्ण दान और रक्षा-कोष के लिए धन एकत्र करने का काम बराबर चल रहा था । कुछ कालेजों में स्त्रियों को फर्स्ट-एड की शिक्षा दी जा रही थी । अपने-अपने यहाँ में प्रमिला बेग और ममता भी शिक्षा ले रही थीं । केवल विमला अपने तलाक के मुकदमे में पूर्णरूप से व्यस्त थी । आल्बर्ट देवली कैम्प में नजरबन्द था । वहाँ से अपने पत्र में निश्चय ही विमला का प्रसन्न करने के लिए, उसने अपने व्यवहार पर अनुताप व्यक्त किया था और क्षमा माँगी था । लेकिन विमला ने लिख दिया था कि उसके साथ अब रहना असम्भव था । दोनों में यथाशीघ्र तलाक हो अभीष्ट था । पत्र लिखकर वह निष्क्रिय नहीं बैठ गई । कचहरी में भी तलाक के लिए आवेदन-पत्र दे दिया । विमला का ऐसा दृढ़-संकल्प देखकर आल्बर्ट आतंकित हो गया और उसने मैत्री बनाए रखने का अनुरोध किया । उसने लिखा, विमला अभी तक उसकी

विवाहिता पत्नी है। वह उससे एक बार मिलना चाहता है।

विमला निश्चय नहीं कर पा रही थी कि वह जाए या न जाए।

हठात् युद्ध की स्थिति गम्भीर हो गई। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में भारतीय सेना को पीछे हटना पड़ा। हमारे मन क्षोभ और चिन्ता से भर गए। हम अपने को बिल्कुल बेजान अनुभव करने लगे। युद्ध के समाचारों से विमला का चेहरा और सूख गया, किन्तु वह अधीर न हुई। तन्मय होकर नागरिक प्रतिरक्षा के काम में जुट गई। बागान के मेम साहबान और तिनसुकिया के कुछ मारवाड़ी मित्रों ने उसे कलकत्ते चले जाने की सलाह दी अपने साथ ले जाने का प्रस्ताव किया, किन्तु उसने सब अमान्य कर दिया। उसका कहना था—

"यह नगर छोड़ कर कहाँ जाऊँगी ? अपने पति के देशद्रोह का प्रायश्चित्त करने के लिए मुझे यहीं रुकना है।

आचेर्द की गिरफ़्तारी के बाद खुफ़िया पुलिस विमला की गतिविधि पर सतर्कता से दृष्टि रख रही थी। मैं उसे कैसे रोक सकता था? सरकार के सन्देह का निवारण आसान नहीं था। अफ़वाह थी कि सारे असम में गुप्त शत्रु और गुप्तचर बड़ी संख्या में सक्रिय थे। आचेर्द के घर पर कड़ा पहरा था। विमला को रोज़ पुलिस में यह रपट देनी होती थी कि वह दिन में कहाँ आती-जाती है और क्या करती है। उसका जीवन असह्य हो गया था। वह चाहती थी कि यथाशीघ्र तलाक़ पा कर इस कलंक से मुक्त हो जाए।

उस दिन गोधूली के समय नागरिक प्रतिरक्षा कार्यालय में मुझे यह आभास मिला कि विमला की गिरफ्तारी बहुत नि

है। लड़ाई ने ऐसी करवट बदली थी कि सरकार किसी भी संदेह-जनक व्यक्ति को बाहर नहीं छोड़ना चाहती थी।

एक अदृश्य अपमान की कल्पना से मेरा चेहरा तमतमा उठा। आँखें झुक गईं। विमला आर्थर की पत्नी है तो रजत की बड़ी बहन भी। रजत की बहन ही नहीं वह मन्मथराम मजूमदार की बेटी भी है।

घर लौटा तो काफ़ी रात बीत चुकी थी। वहाँ थाने का आदमी मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मुझे एकदम बुलाया था। उल्टे पैरों ही लौट गया। विमला सुपरिन्टेंडेंट साहब के सामन बैठी थी। मुझे देखते ही उसने सिर झुका लिया।

सुपरिन्टेंडेन्ट साहब ने कहा—

हमने आपको एक बात कहने को बुलाया है।

'कहिए।

'हम इन्हें बाहर नहीं रहने दे सकते।

"क्यों?'

'प्रमाण तो कोई नहीं है किन्तु यह एक चीनी की पत्नी है। समय बहुत नाजुक है। आप सब जानते हैं। इन्हें निगरानी में रखना होगा। आप एक श्रद्धेय नागरिक हैं। आपको सूचित करना हमने उचित समझा।

विमला की आँखें धरती में गड़ी थीं।

एस० पी० साहब कानून क्या और क्या नहीं कहता है यह मैं नहीं जानता लेकिन यह मैं जानता हूँ कि यह मेरी बेटी निष्पाप और निरपराध है।'

मैं सब जानता हूँ लेकिन श्रीमान मैंने आपसे कहा न, समय

बहुत नाजुक है। हम किसी पर दया-माया नहीं दिखा सकते। आपेई के साथ इनका इतने साल रहना ही शंका का मूल कारण है।

उनके स्वर में सहानुभूति की ध्वनि स्पष्ट थी।

मुझे एक उपाय सूझा। मैंने कहा—

अगर इसकी सारी जिम्मेदारी मैं ले लूँ तो क्या कुछ हो सकता है ?

एस० पी० साहब ने क्षण भर सोचा और उत्तर दिया—

"हाँ हो सकता है।'

बिमला की प्रतिक्रिया अप्रत्याशित हुई। वह बोली—

पिताजी मेरी जिम्मेदारी आप क्यों लेंगे ? मैं अपना बोझ स्वयं वहन करूँगी। आप घर जायें।

मैंने उसे समझाया।

'बेटी और कुछ हो न हो तुम्हें कष्ट बहुत होगा।

जिसके ललाट में जो लिखा है वह उसे भोगना ही होगा।

मैं किंकर्तव्यविमूढ़-सा उसे देखता रहा। एस० पी० ने अपनी मेज पर रखे ट्रान्जिस्टर को चालू किया। उद्घोषणा हुई—

यह आकाशवाणी है।

अब प्रधान मंत्री देश के नाम संदेश प्रसारित करेंगे।

जवाहरलाल नेहरू।

मैं चौंका।

बोमडिला और सेला के पतन की चर्चा करते हुए उनका स्वर करुण हो गया। थकी हुई आवाज में वह कह रहे थे—

"भाइयो और बहनो,

करीब एक महीना हुआ मैंने रेडियो पर आप से कुछ कहा था किस तरह से चीनी फौजों ने हमारे ऊपर हमला किया और हमारे मुल्क में घुस आईं-- -- आज फिर से मैं आपको इसी बारे में कुछ कहना चाहता हूँ क्योंकि पिछले दो-तीन रोज़ में और खास कर कल और आज बुरी ख़बरें आई हैं तकलीफ़देह ख़बरें आई हैं—कहीं कुछ हमारी फौजों के हटा देने की और कहीं कहीं कुछ हार जाने की पूर्वी सीमा प्रान्त में वालोंग एक जगह है उसको हमारी फौज को छोड़ना पड़ा, सीला है—बोमडिला और तवांग के बीच—और बोमडिला भी हमारे हाथ से निकल गया असम ख़तरे में है हमारा दिल जाता है हमारे भाई और बहन जो असम में रहते हैं उनकी हमदर्दी में क्योंकि वह तकलीफ़ उठानी पड़ रही है और शायद और भी उठानी पड़े"

एम० पी० ने रेडियो बन्द कर दिया। उनकी भावमुद्रा गम्भीर हो गई। मोटी हुई आँखों से मुझे देखा और बोले—

"बहुत बुरे दिन आ गये हैं, श्रीमान्। पिछले कई सौ साल में हमारे लोगों का ऐसे दुर्योग का सामना नहीं करना पड़ा है।"

वह उठे और बाहर चले गए। बाहर की ठंडी हवा के झोंके ने कदाचित् उन्हें आश्वस्त किया हो।

बिमला अभी तक वैसे ही बैठी थी। उसका चेहरा कहराम का मज़ा के रंग में समान कला पड़ गया था। वह अपने को अत्यन्त अपमानित अनुभव कर रही थी। उसी ने अपने पति को परदाया था। यह बात सुपरिन्टेन्डेंट साहब भी जानते

थे। उसके तलाक माँगने की बात भी सरकार को अविदित नहीं थी। फिर यह गिरफ्तारी क्यों? गिरफ्तारी के धमक के लिए वह बिल्कुल तैयार नहीं थी।

इतने में आकाश हवाई जहाजों के शोर से भर गया। वे शायद रसद गिरा कर लौट रहे थे। थाने के बाहर मोटरों के आने-जाने का ताँता बँधा हुआ था। शायद और लोग अपने परिवार भेज रहे थे। थाने के सामने नगर के नौजवानों का एक झुण्ड जमा था। उनकी हँसी और उनके उत्तेजना भरे शब्द मेरे कानों तक पहुँच रहे थे। मुझे ऐसा लगा मानो विमला की गिरफ्तारी के समाचार से वे दुखी थे। मेरा हृदय उनके प्रति कृतज्ञता से भर गया।

किन्तु अपना निर्दिष्ट काम छोड़ कर उनका इस तरह समय गँवाना ठीक नहीं था। उन्हें तो पहाड़ी क्षेत्रों से आने वाले विस्थापितों का सेवा-सत्कार करना था। वे यहाँ क्यों आये?

मैंने एक सिगरेट बनाई। संकट के समय पिताजी 'कीर्तन घूषी'[1] से जो पद गाया करते थे उसे मन ही मन गुनगुनाया। फिर सहज भाव से कहा—

'दुखी न हो बेटी। भगवान् है। वे तेरी रक्षा करेंगे।

विमला भगवान् का स्मरण नहीं करती थी। उसने कभी आवश्यकता भी अनुभव नहीं की थी। किन्तु आज उनके सर्वोपरि करुणामय स्वरूप की कल्पना करके उसके आँसू आ गये। मुझे यह अच्छा लगा। उस समय वहाँ और कोई नहीं

१ कीर्तन-घूषी—असमिया में श्री शंकरदेव द्वारा किया हुआ श्रीमद् भागवत् का पद्यानुवाद।

था। मैंने उससे कहा—

"विमला एक अदृश्य शक्ति किसी अगम्य स्थान से हमारे जीवन में उलटफेर मचा कर हमसे खिलवाड़ करती रहती है। हम नहीं जान सकते कि हमारे जीवन में कब कहाँ क्या घट जाय।

किन्तु पिताजी निरपराध को दण्ड देना भी क्या भगवान् का विधान है?'

'नहीं।'

'तो फिर मुझे क्या पकड़ा गया है? मैंने कुछ भी तो नहीं किया है। एक दिन अनायास किसी विदेशी के प्रति मन में प्रेम जग गया था। मैंने उससे विवाह कर लिया। वह देशद्रोही निकला। जब ही मुझे इसका ज्ञान हुआ मैंने उसे पकड़वा दिया। उस—अपने पति को—पकड़वाने वाली मैं ही थी। फिर मुझे यह दण्ड क्या!

"यह दण्ड नहीं है विमला यह तेरी परीक्षा है।

"परीक्षा?

"हाँ सीता ने अपने कलंक से मुक्ति पाने के लिए अग्नि-परीक्षा दी थी। मनुष्य सदा शंकी होता है। यह मानो उसका जन्मजात स्वभाव है।'

'मनुष्य क्या सारा समाज ही मुझ पर संदेह कर रहा है।'

"समाज भी तो मनुष्यों के समूह का ही नाम है। तू मेरी बेटी है। जैसे मैं और प्रत्येक देशप्रेमी है वैसे ही तू देशप्रेमी है। सारी दुनिया भी यदि तो मैं तुझ पर संदेह नहीं कर सकता।

विमला उठी मेरे निकट आई और जीवन में पहली बार मेरे चरण स्पर्श किये।

'पिताजी आपका विश्वास ही मेरा बल है। इन पिछले दिनों मैंने हर कहीं अनगिनत लोगों का व्यंग और विद्रूप सहा है। सब मुझे एक गुप्तचर की पत्नी के ही रूप में देखते हैं। वे नहीं जानते कि मेरे हृदय में भी देशप्रेम की ज्वाला धधक रही है। मैंने अपने पति ही को नहीं पकड़वाया अपना सारा संचित धन और गहने भी देश की रक्षा के लिए दे दिये हैं। औरों ने थोड़ खरीदे हैं मैंने सब कुछ दान कर दिया है। नौजवानों के साथ कधा मिलाकर नागरिक प्रतिरक्षा का काम कर रही हूँ। मैंने अपनी मर्जी से अपने घर में एमरजन्सी हस्पताल खोलने की अनुमति दी है। फिर भी मेरे कलंक का मोचन नहीं हुआ है। मैं घृणा की पात्र हूँ, पतिता हूँ, निकृष्ट हूँ। यह परम पावन देश कहलाता है किन्तु इसमे एक भी ऐसा उदारमना व्यक्ति नहीं है जिसके हृदय में एक अबला नारी की ऐसी दुखभरी कथा प्रतिध्वनित होती हो। भगवान् भी क्या कर रहे हैं? वे भी इतने ही निष्ठुर हैं।

मैं विस्मित था। आमेर्ड द्वारा बड़े किये उत्पात के बाद मैंने कई बार विमला से बातचीत की थी, उसकी माँ ने की थी लेकिन कभी भी उसने यह संकेत नहीं दिया था कि वह लोगों के व्यंग और विद्रूप के कारण अपने को इस प्रकार लांछित अनुभव कर रही थी। मूर्ख मनुष्य, बिना सोचे-समझे किसी पर कलंक थोप देते हैं। उन्हें जानना चाहिये कि विमला एक एक परिवार की लड़की है जिसने दो लड़के सीमांचल के

रणक्षेत्र में हैं और जिनमें से एक शहीद हो चुका है। इस छोटे-से नगर में उसके पिता की भी कुछ ख्याति है, प्रतिष्ठा है।

'भगवान् को दोष न दो विमला। यह तो मनुष्यों की मूर्खता है।

'मनुष्य मूर्ख हैं या ज्ञानी, इसकी कौन चिन्ता करता है। एक गणतन्त्र में मनुष्यों की ही राय से राज्य चलता है।'

मैंने दिलासा देते हुए कहा— 'मैं लोगों को समझाऊँगा, विमला। इसमें कुछ समय अवश्य लग सकता है। तुम धीरज धरो।'

थाने के बाहर नौजवानों की भीड़ सघन हो गई थी। उनमें से अधिकांश विमला पर ताना कस रहे थे। कुछ उसे देखने मात्र की इच्छा से खड़े थे। वह रहस्य का केन्द्र बन गई थी। उसके सम्बन्ध में विचित्र अफ़वाहें प्रचलित की जा रही थीं। जिन्हें इसमें लगन थी वे प्रचार कर रहे थे कि विमला की गतिविधि और उसका सारा कारोबार संदेहजनक है। एक फौजी की पत्नी का ऐसे समय में आचार छोड़ना आत्मघाती होगा।

ज्यों-ज्यों बाहर भीड़ का शोर बढ़ता जा रहा था विमला के चेहरे का रंग और काला पड़ता जा रहा था। मेरे मन में प्रबल इच्छा हुई कि बाहर जाकर उन बहके हुए नौजवानों से विमला के त्याग का वृत्तान्त कहूँ किन्तु इतने में ही एम० पी० गार्ड्स एक सैनिक अफसर के साथ प्रविष्ट हुए। मैं उन्हें नहीं जानता था लेकिन देखते ही समझ गया कि वह बड़े अफसर

हैं। उन्होंने बड़ी शिष्टता से विमला से सरल अंग्रेजी में पूछा—

'आप चीनी भाषा जानती हैं?'

"थोड़ी-थोड़ी।'

'आप घर में किस भाषा में बात करती थीं?'

"असमिया में।'

'आपको यह कब आभास हुआ कि आपेई एक गुप्तचर है?'

'चीनी आक्रमण के पहले तक नहीं। उसके बाद ही उनके व्यवहार से मुझे संदेह हुआ।'

'ठीक। आपको घर में किसी संदेहजनक वस्तु के रखने की याद तो नहीं पड़ती है?'

विमला के माथे की रेखाएँ कुछ खिंची। उसने स्मरण करने की चेष्टा की। फिर उत्तर दिया—

"नहीं।'

सैनिक अधिकारी ने अपनी जेब से एक पुलिन्दा निकाला। उसे खोलकर कुछ हस्तलिखित कागज मेज पर रखे।

'आपने ये कागजात कभी देखे हैं?'

वह देखते ही पहचान गई। आपेई इन्हें सदा अपने बिस्तरे के नीचे रखता था। वह बोली—

"ये कागज चीनी भाषा में हैं। उस दिन सबेरे मेरे साथ खूब झगड़े के बाद उन्होंने स्टोव पर इनको जलाने की चेष्टा की थी।'

"आपने उससे कुछ पूछा था?'

"हाँ लेकिन मेरा प्रश्न सुनते ही उन्होंने मेरे मुँह में कपड़ा ठूँसकर मुझे बाथरूम में बंद कर दिया था।'

'बाथरूम में क्यों ?

'मैं नहीं जानती। शायद वे मेरी हत्या करना चाहते थे।"

'आपने क्या किया ?"

'मैं कर क्या सकती थी ? मेरा मुँह बन्द था। मेरे हाथ उन्होंने कसकर पकड़ रखे थे। उनकी आँखें नशे और क्रोध में उन्मत्त थीं। मैंने पहली बार जाना कि वे एक पिशाच हैं।

'आपकी हत्या करनी चाही थी इसलिए ?

'मेरी हत्या करके प्राण ले लिये होते तो मेरे लिए अच्छा ही होता। सब झंझट मिट जाता। मैं समझ गई कि वे एक गुप्त-चर हैं।

"उसने मारग और कुछ कहा था ?'

"हाँ।

'क्या कहा था?'

"असम चीन का होना चाहिए।'

"बस, इतना ही ?

विमला अब तक बिल्कुल टूट चुकी थी।।

"मैं राजनीति नहीं जानती। और अधिक प्रश्नों का उत्तर देने की सामर्थ्य मुझ में नहीं है।"

वह मैनेजर अफसर कुछ रुका फिर विनम्रता से कहा—

'क्षमा करें, एक दो प्रश्न और करूँगा। क्या आरने ने आपको यह बताया था कि वह शीघ्र ही इस देश को छोड़ कर जाने वाला है ?'

"हाँ उन्होंने कहा था।"

"क्या आप भी उसके साथ जा रही थीं ?"

"नहीं। मैंने तलाक़ के लिए आवेदन किया है।

"क्या आपके अपने परिवार का यहाँ कोई है ?

बिमला ने मेरी ओर इंगित किया। "मेरे पिता।

आपका नाम ?

मैंने अपना नाम बताया।

'आप भूतपूर्व सैनिक हैं ?'

'हाँ।

"आपका एक पुत्र युद्ध में लापता है?

"जी हाँ।"

मुझे लगा कि मैं सहसा कुछ ऊँचा उठ गया था। छाती तन गई।

एस॰ पी॰ और सैनिक अफसर आपस में बात करते हुए बाहर चले गए। मैंने बिमला को देखा। हवा में एक सूखे पत्ते की तरह उसकी देह काँप रही थी। वह समझ नहीं पा रही थी कि उसके ऊपर इतना संदेह क्यों है। मुझे यह देखकर सन्तोष हुआ कि हमारे अधिकारी इतने सतर्क हैं। वे यथेष्ट जाँच-पड़ताल के बाद ही किसी परिणाम पर पहुँचते हैं।

मैंने पूछा—'बिमला तुम्हें भय लग रहा है ?'

'हाँ, आप यहाँ से न जायें।

उसका मनोबल ध्वस्त हो चुका था। हँसने की चेष्टा करते हुए मैंने कहा—

"पगली, मैं तुझे अकेली छोड़कर कहाँ जाऊँगा ?"

'आप लोगों के मन में मेरे लिए बहुत घृणा है न पिताजी?

'घृणा! घृणा क्यों? तू तो निर्दोष है।

एस० पी० लौट आये। बोले— 'विमला देवी!'

'जी कहिए। चलूँ? चलने का समय हो गया?

'हाँ' कहकर एस० पी० खिलखिला पड़े।

'मुझे और अधिक न सताइए। जहाँ ले चलना है चलिए। मैं तैयार हूँ।'

उसके हृदय की वेदना उसकी वाणी में पुकार रही थी।

'विमला देवी' हम आपको नहीं ले जायेंगे। आप अपने पिता के पास ही रहेंगी।

"एस० पी० साहब यह उपहास का अवसर नहीं है।

'उपहास नहीं, सच।

विमला को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने मेरी ओर देखा मैं भी असमंजस में था। मैंने पूछा—

"क्या अब मैं इसे अपने साथ रख सकूँगा?"

'हाँ श्रीमान् आप लोग अब जा सकते हैं। विमला देवी आपको रोज एक बार थाने आना होगा। बस। इतनी देर आपको जो कष्ट हुआ उसके लिए क्षमा चाहता हूँ।"

फिर कुछ रुक कर उन्होंने प्रस्ताव किया—'आप चाहें तो मैं आप लोगों को घर छोड़ आऊँ। बाहर कुछ भीड़ जमा है। नहीं तो आप अपने साथ कुछ सिपाही ले जा सकते हैं।

"नहीं जब तक मैं इसके साथ हूँ कोई असुविधा नहीं होगी।

"अच्छा, मैं चलता हूँ। अभी-अभी मुझे ड्यूटी के लिए

रवाना होना है।"

मैं विमला का हाथ थामे बाहर आया। रात गहरी हो गई थी। थाने के पास कुछ छायाएँ इधर-उधर बिखरी हुई खड़ी थीं। हमें देखते ही वे आगे बढ़ीं। वे हमें घेर लेना चाहती थीं। मैं रुक गया। विमला का हाथ और कस कर थाम लिया। छायाएँ पास आ गईं बिल्कुल पास। मैं उन्हें स्पर्श कर सकता था। मैंने ध्यान से देखा। अधिकतर नगर के नौजवान थे। सयत होकर पूछा— आप लोग क्या चाहते हैं ?"

एक ने ठठोली की।

'जिसने चीनी का दामन पकड़ा था उसे भी पुलिस ने छोड़ दिया।'

'हाँ वह मेरे साथ रहेगी।

एक अस्फुट गुनगुनाहट हमारे चारों ओर उठी और अँधेरे में भर गई। मैं सावधान हो गया। सड़क के लैम्प के मद्धिम प्रकाश में मैंने परिचित चेहरे ढूंढे। कुछ नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सुपुत्र थे जिनकी दिनचर्या थी शराब पीना सिनेमा देखना और सड़क चलती लड़कियों के साथ छेड़छाड़ करना। कुछ नामी गुंडे थे। कुछ हट कर पटरी पर खड़े थे। वे तमाशबीन होंगे। भीड़ की रचना देख कर मैंने मन में हौसला भरा और तन कर प्रश्न किया—

'आप लोग क्या चाहते हैं ?

मेरी मुद्रा देख कर पहले तो वे डगमगाये फिर एक कोने से आवाज आई—"आप से एक बात पूछनी है।

"क्या ?

"आप क्यों इस औरत को पुलिस की हिरासत से निकाल
र बाहर लाये हैं ?"

"क्योंकि यह निर्दोष है ।"

'आप कैसे कह सकते हैं ?"

स्वर में उग्रता थी । मैंने नरम पड़ कर समझाने की
कोशिश की ।

"मायेई विमला का पति अवश्य था किन्तु जिस दिन इसने
यह जान लिया कि वह एक गुप्तचर है उसी दिन इसने, हाँ
इसी न–इसकी अपनी पत्नी ने उसे पकड़वा दिया । इसके
अतिरिक्त आप और क्या प्रमाण चाहते हैं ?"

क्षण भर को वे निरुत्तर हो गये । भीड़ में एक दरार देख
कर मैं विमला को पकड़े थोड़ा आगे बढ़ा । पीछे से किसी
न कहा—

'सकट के समय सब राम का नाम जपने लगते हैं ।
विमला का कोई विश्वास नहीं ।'

यह सुनते ही नौजवानों का यह समूह फिर उत्तेजित हो
गया । मैंने कहा—

'आप लोगों को मेरे ऊपर विश्वास है, मेरे—बघुराम
मजुमदार के ऊपर ।"

'हाँ, है ।"

'तो मैं कहता हूँ विमला सम्पूर्ण रूप से निर्दोष है ।"

'हम कैसे मान लें ?

"क्योंकि यह मेरी बेटी है और रजत की बड़ी बहन ।"

रजत की बड़ी बहन ! वे सब असमंजस में पड़ गये ।

रिक्शे को कोर्डन कर दिया। हमने अपने को सुरक्षित अनुभव किया। रिक्शा वाला भयभीत हो रहा था। वह हमें कहीं भी ले जाने को तयार न था। विमला का नाम लेकर घोर अपशब्द कहे जा रहे थे। वह अपने दोनों कानों में उँगलियाँ डाल कर मेरा सहारा लेकर बैठ गई।

थानेदार ने कहा—

श्रीमान्, आप रिक्शा से उतर आयें। हम कौर्डन में आप दोनों को यहाँ से ले चलेंगे।'

हम रिक्शा से उतर आये। भीड़ हमें ठेलती हुई आगे बढ़ने लगी। पुलिस कौर्डन बनाये रखने में असमर्थ रही। वह टूटने लगा। कुछ लोग हम पर हमला करने को आमादा थे। थानेदार ने मेरे निकट आकर कहा—

'अब तो लाठी-चार्ज करना होगा वरना खैर नहीं है।'

'भगवान् के लिए ऐसा न करें', मैंने विनती की।

भीड़ म उग्रता बढ़ गई थी। पुलिस लाठी चार्ज के लिए तैयार हो गई। चेतावनी दे दी गई। किसी ने न सुनी। सुनी भी तो अनसुनी कर दी। निश्चय ही बड़ा अनर्थ होने जा रहा था। सहसा विमला ने कर जोड़ कर एक बार फिर भीड़ से गुहार की।

'राक्षस यदि मेरे प्राण ले कर ही आपको शान्ति मिलेगी तो मुझ मार डालिये। यह अशोभन व्यवहार बंद कीजिए। मैं आप ही लोगों की बेटी और बहन हूँ। मैं यह और नहीं सह सकती।'

वे नरपशु इस पर भी खिलखिला दिए। तरह-तरह की

गोलियाँ निकालने लगे ।

थानेदार बराबर लोगों को लाठी से पीछे धकेल रहे थे । इतने में भीड़ में से कुछ पत्थर आए । एक मेरी बाँह पर लगा, एक विमला के माथे पर । मैंने उसे अपनी आड़ में ले लिया ।

"क्यों बेटी, चोट लग गई ?"

"मेरा माथा फूट गया पिताजी ।"

"रो न बेटी भगवान् हमारी रक्षा करेंगे ।"

"आपका भगवान् अन्धा है, पिताजी ।"

"नहीं, ऐसा नहीं कहते हैं बेटी ।"

इतने में एक अप्रत्याशित काण्ड हो गया । भीड़ को चीरती हुई एक ट्रक आई और हम से कुछ दूर रुक गई । उसमें माइक्रोफोन लगा हुआ था । ट्रक में एक व्यक्ति ने खड़े हो कर कहना शुरू किया—

"मैं मुंशी हूँ नगरपालिका का चेयरमैन ।"

लड़के चिल्लाये—"सुन लिया, सुन लिया । अब तक कहाँ थे ? जाइये, यहाँ आपकी कोई जरूरत नहीं है ।"

"कहाँ था, यह भी बता दूँगा । पहले देखिये, मैं किसे अपने साथ लाया हूँ ।"

वे एक बार हट गये । एक खद्दरधारी नौजवान माइक्रोफोन के सामने आया ।

"भाइयो, मैं प्रशान्त हूँ ।"

प्रशान्त !

प्रशान्त के सामने भीड़ मानो मन्त्रमुग्ध हो गई । सब ट्रक की ओर मुड़ गये ।

मैंने विमला से कहा—"सुना कौन आया है ?"

"कौन, अपना प्रशान्त है ?'

"हाँ, और नहीं तो कौन ?"

प्रशान्त बड़े विश्वास से भाषण दे रहा था—

'मैं अभी-अभी यहाँ पहुँचा हूँ। दुर्गम पहाड़ी मार्गों पर चलते-चलते मेरी टाँगें सूज गई हैं। मैं जिस स्थान पर तैनात था उसकी चीनियों ने ईंट से ईंट बजा दी है। भारी संख्या में उनके सैनिकों को मार कर हमारे वीर जवान पीछे हटने पर विवश हुए हैं। उन्होंने हिम्मत नहीं हारी है। चीनी आगे बढ़ रहे हैं लेकिन हमारे जवान तिल-तिल धरती के लिए जीवट से लड़ रहे हैं और यहाँ, आप लोग क्या कर रहे हैं ?'

प्रश्न शून्य में खो गया। किसी ने उत्तर नहीं दिया। प्रशान्त ने फिर पूछा—

"मैं जानना चाहता हूँ, यहाँ आप लोग क्या कर रहे हैं ?'

किसी ने जोश से कहा, 'हम युद्ध के लिए तयार हैं।

एक सारभरी मुस्कान प्रशान्त के चेहरे पर खेल गई।

'यदि युद्ध करना है तो इस तरह एक लड़की के पीछे अपनी शक्ति का क्षय करके आप युद्ध नहीं कर सकेंगे। आपकी उत्तेजना का कारण मैंने सुना है। आपकी आशंका व्यर्थ है निर्मूल है। विमला बाइदेव[1] एक गुप्तचर की पत्नी अवश्य है किन्तु वह स्वयं गुप्तचर नहीं है। यदि कभी भी उसके गुप्तचर होने का प्रमाण मिला तो आप लोगों से पहले मैं उसके दण्ड की व्यवस्था करूँगा, कठोर दण्ड की।

१ बाइदेव—बड़ी बहन के लिए आदरसूचक शब्द।

रजत दादा की वासुदेव प्रशान्त की वासुदेव यदि देशद्रोही हुई तो हम आप जीवित नहीं रह सकेंगे। विमला वासुदेव का दायित्व मैं लेता हूँ। निश्चिन्त होकर आप लोग अपने घर जायें। जाइये। मैं आपसे अनुरोध करता हूँ।'

पहले तो भीड़ में कसमसाहट हुई फिर वह छितराने लगी। थानेदार ने मुझ और विमला को पुलिस-वैन में चढ़ा दिया। वैन के रवाना होते ही मैंने सुना चेयरमैन मुँइयाँ ने अपना भाषण शुरू कर दिया था।

घर के द्वार पर आगम की प्रशान्मार्जों की तरह तीन स्त्री धारायें निश्चल खड़ी थी।

विमला को देखते ही प्रमिला दौड़ी आई और उसे अपने अंक में भर लिया।

'मेरी बेटी मेरी बेटी तू जीवित लौट आई।

विमला के माथे से रक्त की धार बह रही थी। मैंने कहा—

"प्रमिला उसका माथा धोकर थोड़ी आयोडीन लगा दो। काफ़ी चोट आई है।

प्रमिला ने मेरे शब्द नहीं सुने। विमला को अंक में भरे उसकी आँखें झरने लगीं।

मैं बैठक में चला गया। भयभीत-सी ममता वहाँ आई और बिना कुछ कहे-सुने मेरे जूते मोजे उतार दिये। फिर पाँव दबाने लगी। थोड़ी देर बाद, एक प्याला गरम चाय लेकर चलि आई। तब तक प्रमिला ने विमला को अन्दर ले जाकर बिस्तरे पर लिटा दिया था।

ममता खड़ी हो गई। उसके शरीर के आभूषण मधुर

झंकार कर उठे। मैंने चाय का घूँट भरते हुए पूछा—

"बेलि, प्रशान्त यहाँ आया था ?'

"हाँ।"

'आज वह न होता तो निश्चय ही हमारा मरन था।"

'क्या हुआ वहाँ ?

'इस समय तो प्राण बिल्कुल सूख गये हैं बेलि, फिर बताऊँगा। किन्तु प्रशान्त एकदम बदल गया है। वह मनुष्य बन गया है।

"वह मनुष्य बन गया है।' जैसे ही यह वाक्य अमला के कानों से टकराया, उसमें एक सिहरन दौड़ गई और आभूषण एक बार फिर झंकृत हो उठे।

बेलि ने कहा—

'वह आया और आप लोगों की विपत्ति की कथा सुनते ही सीधा वहाँ चला गया।

'और उसने आकर हमारी रक्षा की। भगवान् ने ठीक समय उसे वहाँ भेज दिया।

मेरी आँखें नींद से बोझिल हो रही थीं।

रात का दूसरा पहर बीत चुका था।



पाँचवाँ भाग

नगर में हमारे परिवार के लिए घृणा और प्रशंसा समान रूप से थी। चीनी आक्रमण के दिनों में जब लोग अत्यन्त भ्रमित थे, ये विपरीत भाव चोटी तक पहुँच गये थे। किन्तु जब चीनियों ने सहसा युद्धबंदी की एकांगी घोषणा करके वापस लौट जाने का निश्चय किया तो लोगों के मन का दूषितपन कम होने लगी और उन्होंने हमारे परिवार को स्वाभाविक दृष्टि से देखना आरम्भ कर दिया।

विमला फिर भी स्वाभाविक अवस्था में नहीं आई। उसे अपने से घृणा हो गई थी। अपने ही नगर के लोग उसे इस तरह लांछित और अपमानित करेंगे इसकी वह कभी कल्पना नहीं कर सकती थी।

मैंने उसे समझाया—

"भीड़ में कभी-कभी मनुष्य बहुत ही अशोभन कार्य कर उठता है। उत्तेजना में व्यक्ति का विवेक लोप हो जाता है।"

विमला ने उत्तर दिया—

'किन्तु पिताजी, उन सैकड़ों व्यक्तियों में से एक ने भी यह नहीं कहा कि मैं निर्दोष हूँ।'

मैं विमला को क्या कहता समझाता स्वयं कम अपमानित नहीं अनुभव कर रहा था। हमारे परिवार का कभी भी उच्च

जाति और धनिकों के समाज में कोई विशेष मान नहीं था। मूल कारण यही था—कि रजत प्रशान्त और विमला एक ब्रह्मचारी बाप और ब्राह्मणी माँ के अवैध योग से उत्पन्न हुए थे। नगर के सम्भ्रान्त कहे जाने वाले लोगों की यह धारणा थी कि हमारा परिवार हिन्दू समाज में एक विषैले फोड़े के समान उठ रहा था और वह एक दिन किसी भीषण आघात से अपने आप फूट कर रिस जायेगा।

हमारे परिवार की ऐसी क्षति और ताड़ना से ईर्ष्यालु लोगों की छाती ठंडी हो रही थी। यह मैं स्वयं देख रहा था किन्तु कर क्या सकता था? यदि मुझ में सामर्थ्य होती तो अवश्य जाति-पाँति के बाधा-बन्धनों को विध्वंस और चूर्ण करके मैं हिन्दू समाज की उनके लज्जाजनक और हानिकर प्रभाव से रक्षा करता। आज भी ऐसा लगता है कि जाति पाँति के भेदभाव को जड़ से मिटाने में अभी बहुत समय लगेगा।

हम रजत का मन ही मन स्मरण कर लेते थे। उसकी अधिक चर्चा नहीं करते थे। विमला के अपमान की कथा भी हमने अपने दैनन्दिन के वार्तालाप से वर्जित-सी कर रखी थी। मन इस ओर न भटके इससे बचने के लिए हम सब अपने को सबेरे से सांझ तक नागरिक प्रतिरक्षा के काम में लगाये रखते थे। हाँ एक बात कहना मैं भूल गया। हमने क्षेमि और अमला को भी अपने घर रहने के लिए बुला लिया था। उन दिनों की अनिश्चित स्थिति में हम सब साथ रहकर ही संभावित विपत्ति का सामना करना चाहते थे।

उस दिन सवेरे प्रशान्त थायेई के घर में लोसे हुए सैनिक हस्पताल गया था। प्रमिला भी साथ गई थी। वह रोगियों की परिचर्या करती थी। विमला डिब्रूगढ़ गई हुई थी। तलाक के सिलसिले में उसका वहाँ अक्सर आना-जाना लगा रहता था। बेसि पाकघर में भात पका रही थी। मैं सवेरे की परेड से लौट कर स्नानघर में गया ही था। मैं पहले कह चुका हूँ स्नान घर मेरा चिन्तन-घर भी है।

मैंने सुना अमला गा रही थी। स्वर मीठा था और गीत भाव भरा। आधुनिक गीतों में प्रणय की बात इतनी निलज्जता से व्यक्त की जाती है कि बड़ा क्रोध आता है। इन गीतों म यौन प्रवृत्तियों को उकसाने के अतिरिक्त और कोई गहराई नहीं होती है। अमला क गाने का कारण मैं अनुमान कर सकता था। प्रशान्त के आने से उसके मन-उपवन म रंग और रस का संचार हो आया था।

अमला का शरीर बेसि क जवानी के शरीर की एकदम अनुकृति है। आँखें हमेशा हँसती रहती हैं। किसी को एक बार देखकर वह सहज ही मोह लेती है। वह अब अबाध नहीं रही है। अपनी अल्प आयु में ही प्रेम के सम्बन्ध म इतना सचेत हो गई है कि यदि कोई उस प्रेम अर्पित करे तो वह उसकी अवहेलना नहीं कर सकती है। बेसि के समान निर्मम प्रेम को अमान्य कर देना उसने नहीं सीखा है। उसने ग्रहण करना ही जाना है। मेरे कहने का यह कदापि प्रयोजन नहीं है कि उसने कभी यहाँ कोई दुष्कर्म किया है। नहीं ऐसा नहीं है।

उसके गाने में चपलता आती जा रही थी । कभी-कभी विषाद का स्वर भी सुनाई पड़ता था किन्तु उस स्वर में अपने मृत प्रेमी के लिए उत्पीड़न का कोई भाव नहीं मिलता था । मेरी तरह रमत को कोई याद नहीं करता था । लगता था इस अवधि में ममता भी उसे भूल चुकी थी ।

ममता ने एक गीत आरम्भ किया जो हम कछारियों में बैसागु[1] के अवसर पर प्रचलित है । मनमाता गीत में तन्मय हो कर सुनता रहा । फिर वह बियानाम[2] गुनगुनाने लगी । उसके बाद एक बहुत ही मादक बीहू गीत । अपनी याद से वह गीत पर गीत गाती गई । सारा घर एक सुमधुर कोमल भाव से भर गया ।

स्नानघर से निकल कर मैं अपने कमरे में आया । बालों में कंघी कर रहा था कि देखा ममता एक स्वटर बुन रही थी । मैंने विनोद करते हुए कहा—

कहो यह किसके लिए बुना जा रहा है ?

'हस्पताल में एक वृद्ध सैनिक भरती हुआ है उसके लिए ।'

'कौन वृद्ध सैनिक ?

मैंने नहीं देखा, माँ ने कहा है । नाम भी माँ ने ही दिया है ।"

किसने बेसि ने ?

'नहीं इस घर वाली माँ ने ।'

---

१ बैसागु—बोहाग बीहू एक असमिया त्योहार ।

२ बियानाम—विवाह के अवसर पर गाया जाने वाला गीत ।

ममता ने मन से सम्बन्ध मान लिया था। मुझे देवता[1] कहती महादेव[2] नहीं। प्रमिला को माँ कहती, भौंहो[3] नहीं। लड़कियाँ अकारण ही किसे सम्बन्ध नहीं मान लेती हैं।

मैं बाहर आकर बैठ गया। मैंने देखा एक बेलि का फूल खिल रहा था। उसे तोड़ कर मैं एकचित्त [redacted] सूंघने लगा। इतने में बेसन के पकौड़े और चाय का प्याला लेकर बेलि आई। चूल्हे की ताप से गालों पर गहरी ललाई आ गई थी। सुन्दर जूड़ा बँधा हुआ था। बनाव-सिंगार में बेलि ढंग से चतुर रही थी। पकौड़े और चाय वह मेरे सामने तिपाई पर रखने लगी। मैंने कहा—

'सुनो इधर आओ बेलि।

मेरी बात को अनसुनी करने का दिखावा कर के वह वापस लौटने को मुड़ी। मैंने झट से उठ कर उस तक पहुँच वह फूल उसके जूड़े में लगा दिया। बनावटी क्रोध से वह बोली—

''सिर और दाढ़ी के बाल पक गये लेकिन बुद्धि अभी तक नहीं आई।

मैं हँस पड़ा। उस रात थाने के सामने भीड़ में था तिरस्कार किया था उसकी तुलना में यह तिरस्कार कितना मीठा था यह नवरस भुक्त भोगी ही जान सकते हैं। मैंने कहा—

''जाने के दिन जितने निकट आते जाते हैं बीते दिनों का

---

१ देवता—पिता
२ महादेव—भोला
३ भौंहो—भौजी

फिर से पाने की इच्छा उतनी ही प्रबल होती जाती है, बेलि।

"आप मुझे अभी तक चाहते हैं ?

हाँ, उतना ही।'

'यह आप भयंकर अन्याय कर रहे हैं।

'नहीं बेलि।

मैं सच कहती हूँ। यहाँ रह कर मैंने जान लिया है। प्रमिला को संदेह है।

मैं आगे कुछ न कह सका। उसका कथन सच था।

'घरबार छोड़ कर आई हूँ। भंडार में धान यों ही पड़ा है। कोई रखवाला नहीं है। मैं जाने की सोच रही हूँ।

वह केवल बात बना रही थी। घर की देखभाल के लिए आदमी था। और वह भी खूब विश्वासी।

'जाओगी तो सही लेकिन कुछ दिन रुक जाओ। हालत थोड़ी सुधर जाये।

हालत न जाने कब सुधरेगी और कौन जाने सुधरेगी भी ?

'सुधरेगी क्यों नहीं बलि। युद्ध सदा थोड़े रहने वाला है। वास्तव में मनुष्य युद्ध नहीं चाहते हैं।

'तो फिर युद्ध क्यों करते हैं ?

जब उनमें शक्ति का गुमान हो जाता है। वह पर राज्य लोलुप हो जाते हैं।

वे मूर्ख हैं।

'मूर्ख अवश्य हैं किन्तु बानर के समान। आगा-पीछा नहीं सोचते। या कहूँ, नकेल पड़े पशु के समान होते हैं।

नेता लोग उन्हें नकेल पकड़ कर जिधर चाहते हैं चलाते हैं।"

कुछ रुककर बेलि ने प्रश्न किया—"यह युद्ध फिर से छिड़ेगा ?"

"कह नहीं सकता।

"युद्ध ने इस विवाह को समाप्त कर दिया। रजत अब नहीं आयेगा। अमला को बहू बनाने का अभिलाषा को बड़ा चाव है। मैं भी बूढ़ी होने आई। कुछ फ़ैसला हो जाता तो मैं भी निश्चिन्त हो जाती।"

"मैं सब समझता हूँ, बेलि। मेरे मन में एक उलझन है।"

"वह क्या ?

"क्या रजत को भूल कर अमला प्रशान्त के साथ घर बसा सकेगी ? क्या रजत की स्मृति एक प्रेतात्मा की तरह उसके मन पर मंडराती नहीं रहेगी ?"

बेलि हँस दी। वह हँसी रहस्यमय थी। उसने अपना वाक्य दोहराया।

"रजत अब नहीं आयेगा।

चाय ठंडी हो रही थी। बेलि ने याद दिलाई। मैंने घूँट भरते हुए कहा—

"नगर के एक परिचित दुकानदार के पास प्लेनचेट है। कल मैं वहाँ गया था। प्लेनचेट पर रजत को बुलाया। उसने कहा, थी बिल्कुल उसकी आवाज़ थी, कि वह अभी जीवित है। मुझे विश्वास नहीं हुआ।"

"मैं कहती हूँ, यह सब झूठ है। आपकी आशा व्यर्थ है। वह अब नहीं आयेगा।"

चाय खत्म हो गई। मैं कुछ सोचता रहा। फिर पूछा—

"प्रमिला क्या कहती है ?"

"प्रमिला कहती है कि वह अब अमला को घर से नहीं जाने देगी।"

"अर्थात् विवाह की बात पक्की हो गई है ?

"हाँ, सम्भव हो तो इसी महीने में।

और प्रशान्त ?"

प्रशान्त का नाम सुनते ही बेलि का मुँह बन गया।

"क्यों, क्या हुआ बेलि ? प्रशान्त के लिए कुछ नहीं बोलीं।

"प्रशान्त तो आज अब करने को तैयार है। वह अमला का रूप देख कर उन्मत्त हो गया है।

"और अमला ?

"अमला की बात मैं पहले आप से कह चुका हूँ। उसे जिस पात्र में रखोगे वह अपने को उसके अनुकूल बना लेगी। वह रजत से अभी भी प्रेम करती है। रजत की बात सुनकर उसकी आँखें भर आती हैं। किन्तु प्रशान्त के प्रति वह उदासीन नहीं है।

विलक्षण बात है।

"वास्तव में विलक्षण है। जो मैंने देखा जाना है वही कहती हूँ। वह रजत की देवता के समान पूजा करती है किन्तु प्रशान्त को अपने बराबर का जीवन धरातल का मान कर पसन्द करती है। वह उसे अच्छा लगता है। कभी-कभी वह कहती है—प्रशान्त कितना सुन्दर है।

मैं कुछ नहीं बोला। बेनि ने पूछा—"चुप क्या हो गये ?

'बेनि एक दिन तुमने कहा था—प्रशान्त एक पशु है। उसका क्या आधार था।

'स्त्रियों में एक ऐसी शक्ति होती है जिससे वे आदमियों का मात्र देख कर उनका स्वभाव जान सकती हैं। प्रशान्त रूप का लोभी है।

शायद तुम ठीक कहती हो। प्रशान्त में मनुष्य के हृदय की गहराई आँकने की क्षमता नहीं है। वह अममा का सुन्दर, मोहिनी स्वरूप और गौर वर्ण देख कर ही उस पर आसक्त हो गया किन्तु क्या हम सब, कम अधिक मात्रा में ऐसे लोभी नहीं होते हैं ?

मुस्कराते हुए बेनि ने कहा—

देखिये, इन बेकार की बातों में पड़ने का अब समय नहीं है। वे जिस अवस्था में हैं उसे देखते हुए उचित भी नहीं है। उनके शरीर जलती ज्वाला के समान हैं। और देर करना किसी के लिए हितकर न होगा।

मैं निरुत्तर हो गया।

अच्छा एक दिन के लिए और धीरज रखो। मैं सोच लूँ।

बेनि चली गई।

ऐसा लगा कि मेरा दुपहरी में अँधेरा छा गया था।

बाहर से रजत का विवाह टूट चुका था किन्तु मैं अभी तक उसके सपने सँजाये हुए था। औरों के लिए भले ही विवाह टूट चुका हो, मैं मन ही मन अपने प्रेम और अमुआ से हाम-

कुण्ड में आहुति देकर उसे रोक रखा गया था।

किन्तु उस दिन गोधूलि के समय जो दृश्य देखा उसने धीरज और विश्वास दोनों तोड़ दिये। अकस्मात् ममता एक अपरिचित, अप्रत्याशित स्वरूप में सामने आई। वेनि ने ठीक ही कहा था—

"जलती ज्वाला की तरह उनके शरीर हैं। और देर करना हितकर न होगा।

संध्या को पार्क में टहलने गया था। जाड़े की ऋतु के फूल खिल रहे थे। टूटी, टूटती हुई पत्तियाँ वसन्त के आगमन की पूर्व-सूचना दे रही थीं। शीघ्र ही नई पत्तियाँ आयेंगी। घर घर में बीहू का उत्साह भरेगा और सुख की सृष्टि होगी।

पार्क के फूलों के नाम मैं नहीं जानता था। आजकल शहरों में विलायती फूलों का आदर बढ़ गया है। देखने में तो वे अवश्य सुन्दर लगते हैं किन्तु नाहर, टगर और गुलाब के नाम से असमियों के मन में जो पुलक होती है वह इन फूलों से नहीं होती। फूलों को निहारता हुआ मैं तिकोने पोखर पहुँच गया। इसी पोखर से तो नगर का नाम तिनसुकिया पड़ा है। बहुत पुराना पोखर है। उसके आसपास अनेक पुराने अवशेष धरती के नीचे गड़े पड़े हैं। नगर के धन-कुबेरों की कृपा से यहाँ बड़ी बड़ी किन्तु कुरुचिपूर्ण कोठियाँ उठ खड़ी हुई हैं और युगों की हमारी कीर्ति के वे स्मारक उनके नीचे दब गये हैं। अब उनका उद्धार होना कठिन है। इन बातों को कोई नहीं सोचता है। यहाँ के धनिक भी अद्‌भुत हैं। उन्हें एक ही आकांक्षा प्रेरित करती है। धन बटोरना। इतिहास की जानकारी पाने की

उसमें कोई चाह नहीं है।

ढलते सूरज की सुनहरी किरणों से वह पोखर ऐसे जगमगा रहा था मानो किसी नागा युवती का मेखला[1] हो। मैं मुग्ध हो कर देखता रहा।

मेरे मन में विचार आया—'मेरी ढलती आयु से इस दृश्य की कैसी अद्भुत समानता है!'

इतने में एक जलचर चिड़िया कूक उठी और ताल के एक कोने का जल सिहर गया। मैंने देखा ताल के उस पार एक बेंच पर एक युवक-युवती का जोड़ा, वातावरण से बेसुध प्रणय-भाव में खोया, बैठा था। हमारे दिनों में ऐसा दृश्य बड़े-बूढ़ों की दृष्टि में कदाचित् अशोभन माना जाता किन्तु यह बीसवीं सदी का छठा दशक है। इस दशक में युवक-युवती का इस प्रकार खुला प्रणय अनहोना है न असामान्य। पुराने लोग अपना रीति-रिवाज आज के बेटा-बाबू[2] पर नहीं लाद सकते हैं। नई पीढ़ी के साथ सन्धि करना आवश्यक होता है।

एक ऊँचे पेड़ की आड़ में बैठ कर मैं उन्हें देखता रहा। जैसे ही वे खड़े हुए मैं खड़ा हो गया। उन्होंने पार्क का फाटक खोला और बाहर निकल गए। मैंने भी तेजी से कदम बढ़ाए। सड़क पर पहुँच कर वे रुके। मैं पास आ गया था। उन्हें पहचान लिया। युवक और कोई नहीं हमारा ही बरायर था—प्रशान्त, और युवती—हमारी होने वाली पुत्रवधू, ममता।

---

१ मेखला—लहँगे के प्रकार का एक वस्त्र जो असम और नागालैंड में साड़ी के स्थान पर पहना जाता है।

२ बेटा-बाबू—लड़के-लड़की।

संसार का नियम है कि औरों के मुक्त व्यवहार को देख कर हम भले ही नजर फेर लें लेकिन जब उसे अपने घर में देखते हैं तो कम से कम पहली बार, वह हमें उच्छृंखलता प्रतीत होता है। बेलि के शब्द मुझे स्मरण हो आये—"प्रशान्त पशु है। छि:, विवाह से पहले उसका इस तरह खुल्लमखुल्ला अमला को लेकर घूमना अभद्र है। किन्तु कौन, किसे रोक सकता है? हमारे ब्राह्म परिवार पर समाज का कोई नियमण नहीं है। वह तो उल्टा समाज को हमेशा अगूठा ही दिखाता आया है।

मैंने घर लौट कर प्रमिला को बुलाया और कहा—

"प्रमिला तुम्हें उनकी हरकतें मालूम हैं?

उसके चेहरे पर चिन्ता का कोई चिह्न लक्षित नहीं हुआ। हँसी की एक हल्की रेखा खिंच गई।

'क्यों क्या हुआ? कुछ कहें तो।"

पार्क की घटना मैंने ज्यों की त्यों बयान कर दी। सुन कर वह बोली—

'बस इतनी सी बात थी? मैं समझी कोई भयानक काण्ड घट गया। आप भी बेकार डरते हैं।'

मुझे क्रोध आ गया।

"तुम नहीं जानतीं इस तरह दिन-दहाड़े मिलने का क्या परिणाम होता है?

'जानती हूँ, सब जानती हूँ।

सब जानती हूँ! इन शब्दों में हमारे दाम्पत्य-जीवन का एक ऐसा तथ्य निहित है कि यदि मैं स्पष्ट न करूँ तो आप

समझ नहीं पायेंगे। मेरा और बेसि का सम्बन्ध कभी-कभी इतना रहस्यमय हो जाता था कि प्रमिला के साथ विवाह के पश्चात् मैं बहुत दिन तक उससे मुँह छिपाये रहता था। प्रमिला सनकी प्रकृति की भले ही हो हृदय से असीम करुणा-मयी थी। मुँह से चाहे जितना गरज ले अन्तर से स्निग्ध चन्द्रिका के समान थी—सुन्दर और शीतल।

मैंने कहा—

फिर भी हमें अपनी सन्तान को ऐसे व्यवहार से रोकना चाहिये।"

'यह क्या कोई ऐसा रोग है जो टीका लगा कर रोका जा सकता है? बड़े-बड़े ऋषि-मुनि जो काम न कर पाये वह क्या मैं और आप कर सकते हैं?"

"बड़े भाई की मंगेतर से छोटे भाई का विवाह करना कहाँ तक उचित होगा?'

'आप व्यर्थ की दुश्चिन्ता न पड़े हैं। जब तक अग्नि के सामने बैठ कर दोनों एक सूत्र में नहीं बँध जाते कोई पति पत्नी नहीं होते हैं। मैं इसमें कोई बुराई नहीं मानती। और फिर, ये बहुत आगे बढ़ चुके हैं।

'क्या?'

'वे दोनों बिना एक दूसरे को देखे क्षण भर भी नहीं रह सकते हैं। यह आप भी जानते हैं।

'जानता हूँ।'

हमारी बातचीत पलंग पर न हो रही थी। मैं एक मुँढ़िया खींच कर बैठ गया। सिगरेट बना कर सुलगाई।

"प्रशान्त के पत्र मैंने आपको नहीं दिखाये हैं। उसका ममता से विवाह न हुआ तो वह घर छोड़ देगा।"

"हूं।"

'लड़की जिसके भाग्य में लिखी है उसे ही मिलेगी। रजत का विवाह नहीं हुआ। उसके भाग्य में नहीं था। अब इसी के साथ हो जाये।

मैं मौन रहा।

चूल्हे पर दाल चढ़ी हुई थी। उबाल आने लगा था। उसमें पिसी हुई काली मिर्च, हल्दी और जीरा डालते हुए प्रमिला बोली—

"आज सब खाना आपका मन-पसन्द बन रहा है। कई दिन से आपकी टहल नहीं कर पाई हूं। हस्पताल में उस बुड्ढे की हालत बहुत खराब थी। आज कुछ सुधार हुआ है।'

सहसा मुझे ममता के स्वेटर बुनने की याद आई।

'वही बुड्ढा जिसके लिए ममता स्वेटर बुन रही थी?'

'आप तो बड़ी ठाह रखते हैं। हां, वही बुड्ढा।'

"अरे, उससे कहां स्वेटर पूरा होगा! विवाह की वायु जिस लड़की का एक बार स्पर्श कर आये उससे भला कोई काम होता है। एक फंदा पूरा करने में शाम हो जाती है।

मेरी हंसी में प्रमिला की हंसी मिल गई।

बाहर नौकर लड़का गाये धोच रहा था। बछड़े म मतर्से भर्र-भर्र कर रही थीं। बाड़े में बकरियां मिमिया रही थीं। दूर अरबी के खेत में रह-रह कर कोई सियार चिल्ला उठता था।

प्रमिला बोली—

"सोच रही हूँ विवाह-भोज के लिए बड़े बकरे को कटवा दूँ। आपका क्या विचार है ?

"पहले विवाह तो निश्चित हो जाने दो।

"मैंने पुरोहित से तिथि पूछ ली है। उनका कहना है बैसाख की पंचमी का योग है।"

"तो फिर अब क्या रह गया है ?"

"प्रशान्त कहता है, उसके आगे रुकने को वह तैयार नहीं है। रुपये-पैसे की जितनी आवश्यकता होगी वह देगा।"

"तो ठीक है, मुझे भी न्योता दे देना। भोज में आकर खा जाऊँगा। तुम्हारे प्रिय पुत्र का जो विवाह है।"

अन्तिम वाक्य प्रमिला को चुभ गया।

"आपकी सब बातें समझ रही हूँ मैं। रजत को नहीं चाहता है—मानो मैंने उसे अपने पेट में नहीं पाला है। एक ही बाप एक ही पेट—फिर भेद कैसा ?

प्रमिला कभी-कभी अप्रत्याशित बात कहने में नहीं सकुचाती है। मैंने अनसुने का बहाना किया। सिगरेट का मसान कर फेंकते हुए कहा—

"विवाह न हो, यह कहने की मेरी सामर्थ्य नहीं है। देखता हूँ अनि का भी यही मत है। तो फिर, विलम्ब क्यों ?

प्रमिला को कुछ सन्तोष हुआ।

"मैं कहती हूँ मुँह बनाने से काम नहीं हो जायगा। हाथ भी हिलाने पड़ेंगे। आप निश्चिन्त होकर बैठ रहिये। सारा भार मैं उठाने को तैयार हूँ।

'किन्तु एक बात है प्रमिला।'

'क्या ?"

'लड़के से कहना हाथ रोककर खर्च करे। आज की आपत्कालीन स्थिति में अपव्यय करना उचित न होगा।'

यह कहकर मैं रजत के कमरे में चला गया। उसके चित्र के सामने खड़ होकर मैंने कहा—

'रजत, तुम जहाँ भी हो मुझे क्षमा करना। तुमने देश के लिए अपने प्राण दिये, किन्तु तुम्हारा बूढ़ा पिता तुम्हें कुछ न दे सका। क्षमा करना पुत्र।

बाहर पदचाप हुआ। प्रशान्त और ममता लौट रहे थे। प्रशान्त सीटी बजा रहा था ममता का मुख उद्दीप्त था।

'उफ़, असह्य है असह्य।'

'रजत, सोचा था एक दिन इसी कमरे म तुम्हारे लिए बहू लाऊँगा। किन्तु तुम इतनी दूर चले गये। कहते हैं वह लोक हिमालय के बहुत निकट है।'

मैं कमरे से बाहर निकल आया।

मुझे आशंका हुई कि विवाह के बाद यही नव-दम्पति के सोने का कमरा बनेगा। रजत के चित्र के स्थान पर प्रशान्त का चित्र शोभित होगा।

एक असह्य पीड़ा मुझे नखशिख बेध गई।

मैंने बैठक में जाकर शान्त होने की चेष्टा की। अखबार पड़ा था। उठाकर पढ़ने लगा। सारे देश में युद्ध की तैयारियाँ हो रही हैं। साथ-साथ हर व्यक्ति यह अटकल लगा रहा है कि क्या चीनी अपनी घोषणा के अनुसार सीमारेखा तक

वापस चले आयेंगे। सब के मन में सदेह है। कोई सन्त भाव से चीनियों का विश्वास नहीं कर सकता।

चित्र का एक पहलू यह है।

और दूसरा?

नागों का जीवन अपनी पिटी लकीर पर चल रहा है। वे अपने सामान्य कामों में लग हुए हैं। ब्याह-शादी के आयोजन कर रहे हैं। सिनेमा देखते हैं। खेती करते हैं। कारखाने चलाते हैं। चाय बागान में पत्तियाँ तोड़ते हैं।

लगता है नाग शान्ति ही चाहते हैं। और ठीक भी है शान्ति के बिना घर चलता है न संसार।

भोजन खाने के बाद प्रशान्त मेरे पास आकर बैठ गया। कई दिन से उसका मन मेरे साथ बात करने का मचल रहा था। मैंने ही यह सुयोग नहीं दिया था। वह अपनी बात करे उसके पूर्व ही मैंने बातचीत को दूसरा मोड़ दे दिया।

'आओ बैठो प्रशान्त। कहो पहाड़ी मोर्चे पर तुमने क्या देखा? हमारे सैनिकों ने दुश्मन का कैसा मुकाबला किया?'

प्रशान्त ने कहा—

"जब तक उनके पास गोलियाँ रहीं हमारे सैनिक डटे रहे। लेकिन परिस्थिति हमारे विरुद्ध है। और चीनी विल्कुल टिड्डीदल की तरह आते हैं।'

"पिछली लड़ाई में जापानी भी ऐसे ही लड़े थे।

फिर आप नागों ने उन्हें कैसे पराजित किया?

'अच्छे हथियारों से।

मैंने देखा प्रशान्त कुछ गम्भीर हो गया।

"पिताजी हमारे विपर्यय का क्या कारण है ?"

मैंने कुछ देर सोचा। ऐसे बुनियादी सवाल का अनसोचे कैसे उत्तर देता। फिर कहा—

'तैयारी की कमी।'

'लेकिन तैयारी की कमी क्यों हुई ? हमारी सरकार क्या कर रही थी ?

यह प्रश्न व्यापक और गुरुतर था। सारे देश में प्रतिरक्षा मन्त्री को दोष दिया जा रहा था। वह पद-त्याग भी कर चुके थे। किन्तु तयारी की कमी का कारण और गहरा था।

बहुत कठिन प्रश्न है, प्रशान्त। मैं समझता हूँ भारत को बहुत चेष्टा करनी होगी।

'आपके कहने का तात्पर्य पिताजी ?

' लोगों को ट्रेनिंग देनी होगी सैनिक संख्या बढ़ानी होगी उससे भी अधिक—अच्छे हथियारों की व्यवस्था करनी होगी विशेष कर हवाई जहाजों की। और अगर चीनियों ने फिर हमला किया तो हमें बिना सोच-सकोच के शक्तिशाली देशों से सहायता भी लेनी होगी।

प्रशान्त उठ खड़ा हुआ। वह इधर-उधर टहलने लगा। फिर बैठ गया।

'कब तक हम दूसरों का मुँह ताकते रहेंगे पिताजी ? इस देश में और कुछ न हो, कम से कम एक वस्तु का अभाव नहीं है।

'वह क्या ?

"जनबल। इस देश का हर व्यक्ति अगर लड़ाई के लिए

कमर कसकर खड़ा हो जाये तो कौन उसकी धरती पर अधिकार कर सकता है ?'

'तुम ठीक कहते हो, प्रशान्त, लेकिन लड़ाई की स्थायी और सुदृढ़ तैयारी के लिए अपार धन चाहिये।

"धन चाहिये या मन, पिताजी ?

मैंने प्रशान्त की ओर देखा। वह बड़ी बात कहना सीख गया था। मैंने शान्त भाव से कहा—

मन का अभाव तो नहीं है प्रशान्त।'

"मन ही का अभाव हुआ है पिताजी। मन का अभाव न होता तो धन के अभाव से हमारी ऐसी दुर्दशा न होती।

हम दोनों चुप हो गये। प्रशान्त विचलित हो उठा था।

वह चीनियों को एकदम मार भगाना चाहता था।

हर मूर माता मार
सब सिद्धि होय तार।

बिन सोचे-समझे जो मैदान में कूद पड़ता है सिद्धि उसे ही प्राप्त होती है। किन्तु युद्ध करना हँसी-खेल नहीं है और वह भी हिमालय की ऊँचाइयों पर।

फिर प्रशान्त चीनियों के घेरे से अपने बच निकलने की कहानी सुनाने लगा। अद्भुत रोमांचकारी कहानी थी। वह वालांग के निकट एक हस्पताल में तैनात था। वालांग के पतन के बाद पीछे हटने का आदेश मिला। वे कुल सात आदमी थे। एक टोली बना कर चल दिये। मार्ग में अनेक सैनिक अफसर, कर्मी और मजदूर मिले। सब साथ हो गये। लगातार तीन दिन प्रायः अनाहार यात्रा करने के बाद तेजू पहुँचे।

वहाँ विस्थापितों के ठहरने के लिए कैम्प बने हुए थे। एक दिन विश्राम किया और फिर तिनसुकिया आ गये।

रात के साये गहरे हो गये थे। युद्ध की लम्बी चर्चा के बाद थकान अनुभव होने लगी थी। मैं सोने की तैयारी कर रहा था। तभी प्रमिला ने आकर कहा—

'इतनी देर हो गई, समधिन अभी तक नहीं लौटीं।"

मुझे आश्चर्य हुआ। दस बज रहे थे।

'येलि कहाँ गई है ?"

'वे घर गई थीं।'

'घर गई थी ?

'हाँ सन्ध्या तक लौट आने को कह गई थीं।'

मेरी आँखों से नींद विदा हो गई। येलि पर क्रोध आया। इतनी रात गये घर से निकलना मुझे बहुत नहीं सुहाता। प्रशान्त से साथ चलने के लिए कहने को भी मन नहीं किया। येलि ऐसी नहीं थी कि अकारण बाहर रुक जाये। घर पहुँच कर उस पर कोई विपत्ति आ गई हो इसकी सम्भावना भी नहीं थी। असमंजस में मैं मौन और निष्क्रिय बैठा रहा। आँखें अहाते के फाटक पर लगी थीं।

प्रशान्त के चेहरे पर चिन्ता की कोई रेखा नहीं थी। स्वच्छ चाँदनी में वह सुन्दर और सुडौल चेहरा अनोखी आभा से दीप्त था। उसकी आँखें उनींदी हो रही थीं। मैंने उसे सोने को कहा। वह अपने कमरे में चला गया। थोड़ी देर बाद मैंने प्रमिला और अमला को भी आदेश दिया कि वे भात खा लें। दोनों को शायद तेज भूख लग रही थी। वे पाकघर में चली

गई ।

मेरा मन चिन्ता में झकोरे खा रहा था । मैंने कपड़े पहने, छड़ी हाथ में ली और सड़क पर निकल आया । एक रिक्शा-वाले को रोका और अतिरिक्त भाड़े का लालच देकर बेलि के घर चलने को राजी किया ।

हमारा छोटा-सा नगर अब तक सो चुका था । केवल स्टेशन पर कुछ चहल-पहल थी । स्टेशन के पिछवाड़े चाय की दो-एक स्टाल खुली थीं । रास्ते में कुछ गुण्डे और उग्र स्वभाव के नौजवान आपस में उलझ रहे थे । कुछ लोग सड़क के बीच बैठ कर जुआ खेल रहे थे । कुछ आग जला कर ताप रहे थे ।

चन्द्रमा बीच आकाश तक चढ़ आया था । उसकी धुली हुई चाँदनी में इस गंदे नगर की सड़क भी एक रुपहली वेणी की तरह चमक रही थी । रिक्शा सरपट दौड़ रहा था । ठण्डी वायु के स्पर्श और चारों ओर छिटकी नीरव चाँदनी के प्रभाव से मैं संसार के दुःख-सुख उसकी चाह-चिन्ता को विस्मृत कर अपने विचारों में निमग्न हो गया ।

बेलि के घर के सामने जब रिक्शा रुका तब सुध आई । वहाँ अँधेरा पड़ा था । रिक्शा वाले को स्टेशन के कुछ और पैसे देकर मैंने दरवाजे पर पहुँच कर आवाज लगाई—

"बेलि, बेलि !"

मेरी आवाज अपनी लौट आई । किवाड़ ढकेला । वह खुला था । रिक्शा वाले को रुका कर उसे साथ ले मैं घर के अन्दर गया । वहाँ कोई न था । पाकघर में पहुँचा तो हल्का-सा [illegible] हुआ । आखिर उसका घर देखा । घर नीरव था ।

उसे दो-चार अपशब्द कहे। जंगल का जानवर, जंगल में गायब हो गया।

घर में उस्ताद छेदीलाल भी नहीं था। भले-बुरे दिनों में वही येमि के घर की निगरानी करता था।

मैं सोने के कमरे में गया। बाहर छिटकी चाँदनी के कारण वहाँ हल्का धूमिल प्रकाश था। बिस्तरा खाली था। और बिस्तरा ही क्या, सब सदूक खुले खाली पड़े थे। मैंने रिक्शा वाले को वरुण के मिलिट्री कैम्प में सूचना देने को भेजा।

दस मिनट के भीतर सात-आठ सैनिक वहाँ आ पहुँचे। उनमें एक सूबेदार था। हरेक के हाथ में टॉर्च थी। मुझ से पूरा हाल सुन कर वे घर के कोने-कोने की छानबीन करने लगे।

पोखर के पास से एक ने पुकारा—

'अरे देखो यहाँ क्या तैर रहा है?'

मेरा तन-मन काँप गया। दौड़ा-दौड़ा बाहर पहुँचा। सनिक ने एक तरती वस्तु पर टॉर्च फेंकी। मैं पहचान नहीं सका। हठात् देखा किनारे पर येमि के सण्डिल पड़े थे। उसी समय एक साथ कई स्वर में ये शब्द सुनाई दिये—

ये तो कोई शव है।

सब टॉर्चें उस वस्तु पर केन्द्रित थीं। सन्देह गहरा हो गया। कपड़े उतारकर एक सैनिक पानी में कूद गया। उस ठिठुरन भरी सर्दी की उसने कोई चिन्ता न की। थोड़ी देर म शव का कंधे पर डाले वह पानी से बाहर निकला और उसे धरती पर

मिटा दिया था।

यह बेलि का ही शव था।

कुछ फूल गया था। शरीर पर कोई वस्त्र न था। मैंने अपनी चादर उतारकर उसे ढक दिया। फिर घुटने टेककर उसकी परीक्षा की। गले पर उँगलियाँ उभरी हुई थीं। शरीर पर कोई आभूषण नहीं था। कान हाथ गला—सब नंगे थे।

सिपाही स्थिर खड़े थे। सूबेदार ने कहा—

"यहाँ एक आदमी रहता था। वह आज नहीं है।"

"नहीं। घर-द्वार सब खुले हैं।

पुलिस को तत्काल सूचना देने के लिए सूबेदार ने एक सैनिक को जाने का आदेश दिया। मैंने अनुरोध किया रास्ते में हमारे घर भी कहता जाये। वह चला गया। मैंने झुक कर बेलि के मस्तक पर एक चुम्बन अंकित कर दिया। रुँधे कण्ठ से कहा—

बेलि, किसने तुम्हारी यह दशा कर दी ?"

सियारों का झुण्ड हुआ-हुआ करने लगा।

खबर लगते ही पास के अड़ोसी-पड़ोसी वहाँ आ गये। टेनीसन के गायब हो जाने के कारण सबका सन्देह उसी पर हुआ।

एक ने कहा— 'शाम को मैंने उस आदमी को स्टेशन की दिशा में जाते देखा था।

किसी और ने इसका समर्थन किया।

बेलि अब नहीं रही। आँखों से देखते हुए भी मैं यह विश्वास

था और अमला और प्रशान्त प्रेम के आदान प्रदान में विभोर थे उस समय वेलि का शव वहीं, इसी तरह टंग रहा होगा।

आध घंटे में पुलिस वहाँ आ पहुँची। उसने पहले सबके बयान लिये, फिर घर-द्वार की तलाशी। उसे समाप्त कर वह शव को पोस्टमार्टम के लिए ले जाने का तैयार करने लगी। इतने में अमला प्रशान्त और प्रमिला आ गये। माँ के मृत शरीर को देखकर अमला ने चीत्कार किया और उससे लिपट कर विलाप करने लगी।

जब वह कुछ शान्त हुई तो थानेदार माल-मत्ते के जायजे के लिए उसे घर के अन्दर ले गया। उसकी धारणा थी कि यह हत्या धन-सम्पत्ति को हथियाने के उद्देश्य से की गई थी।

सोने के कमरे में खुले हुए बक्स देख कर अमला ने कहा—

"ये कपड़े-लत्तों से भरे थे।

कमरे के मध्य में ईंट चूने का पक्का गड्ढा बना था। उसमें वेलि पैसे-गहने रखती थी। वह खाली पड़ा था। घर के बरतन-भाँडे धान-मसाला यहाँ तक कि ढोर-डंगर कुछ भी नहीं बचा था। इतनी वस्तुओं का अपहरण एक दिन मे संभव नहीं था। यह क्रम कई दिन से निर्बाध चल रहा होगा।

प्रश्नों का उत्तर देते-देते अमला तंग आ गई।

इस बीच में प्रशान्त बारीकी से शव की परीक्षा करता रहा था। एक गहरी साँस लेकर जब वह उठा तो मैंने पूछा—

"क्या किस परिणाम पर पहुँचे प्रशान्त ?"

'हत्या—गला घोंटकर।

अमला हुबक-हुबक कर रोने लगी। प्रमिला उसे दोनों

हाथों में भर कर भी बाँध नहीं सकी। पुलिस ने शव को उठाया। ममता ने दौड़ कर उससे चिपटना चाहा। मैंने उसे पकड़ा और रोक दिया।

रात के दो बजे पोस्टमार्टम समाप्त हुआ। हम शव को घर लाए। प्रमिला ने एक ब्राह्मण को बुलवाया। कटेपिटे शव का सत्कार करने में ब्राह्मण देवता ने आपत्ति की। दान-दक्षिणा में वृद्धि करने से वह मान गया।

जिस बिस्तरे पर बेलि सोती थी उसे प्रमिला ने अर्थी पर रखवा दिया। नौकर से घी-चंदन और आवश्यक सामग्री मँगवाई। यह निश्चय हुआ कि आग प्रशान्त देगा। जब दो दिन बाद जामाता बनना है तो उसी का आग देना उचित होगा। मैंने अपनी अनुमति दे दी।

अर्थी सज गई। मैं बगीचे से सारे बेलि के फूल चुन लाया और कोमलता से शव पर चढ़ा दिए।

"बेलि यह मेरा अन्तिम उपहार स्वीकार करो। तुम जा रही हो। जाओ किन्तु मुझसे असन्तुष्ट न होना। भगवान् निश्चय ही तुम्हें स्वर्ग में उत्तम स्थान देंगे। तुम निष्पाप थीं, तुम पवित्र थी।

प्रशान्त धोती पहन, अँगोछा डाल नंगे पैर श्मशान जाने के लिए प्रस्तुत हो गया।

अर्थी उठ गई।

सवेरा हो गया था। बाल रवि की कानन किरणें ममता के पास पट्टे पर पड़ रही थीं। उसने रात आँखों और सुबकियों में काटी था। मैंने उसे सान्त्वना देते हुए कहा—

"रा नहीं, बेटी। इस घर में रहकर तुम पर कोई दुर्भाग्य नहीं आ पाएगा।"

अमला "माँ" कहकर चीख उठी। घोंसलों में कबूतर फड़फड़ा पड़े और गुटरगूँ करने लगे। बकरियाँ अपने बाड़े में चंचल हो उठीं। एक कौवे ने अमला के "माँ" का उत्तर अपनी काँव-काँव से दिया।

हठात् प्रमिला ने आकर अमला को अपनी बाँहों में ले लिया।

'एक माँ गई तो क्या, दूसरी माँ तो है।'



छठा भाग

बेलि के हत्यारे की खोज लगाने में पुलिस की कार्यवाही बहुत धीमी, प्रायः बेजान-सी, चल रही थी। यह कहना कठिन था कि कब तक हत्यारा पकड़ा जाएगा और मुकदमे का निर्णय होगा। बेलि की अन्तिम इच्छा पूरी करने के लिए मैं तत्परता से प्रशान्त और ममता के विवाह की तैयारी करने लगा। पुरोहित के आनाकानी करने पर भी मैंने निश्चित किया कि विवाह चैत के महीने में सम्पन्न कर दिया जाए। ममता के हित में यही श्रेष्ठ होगा। बेलि की हत्या ने मुझे यह शिक्षा दी थी कि जीवन अनिश्चित है, कोई ठिकाना नहीं कब समाप्त हो जाए। जो काम करना है अविलम्ब कर डालना चाहिए। नहीं तो रावण की दशा होती है। उसने धरती से स्वर्ग तक मार्ग बनाने की कल्पना की थी। अवसर बीत गया। कल्पना कल्पना ही रही।

एक दिन, यथाविधि, वे दोनों, अग्नि के समक्ष एक सूत्र में बँध गए। रजत का कमरा उन्हें दे दिया गया। रजत के शेष स्मृति-चिह्न, उसके चित्र, उसके पत्र, उसकी एक मुंदरी मैंने अपने कमरे की आलमारी में लाकर रख लिये। उन्हें लाते समय मेरे नेत्र सजल थे। किन्तु मेरी ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। और दिया भी हो तो सोचा होगा कि आनन्द के

आँसू हैं।

विवाह के बाद मैं थोड़ा तटस्थ रहने लगा था। एक सन्ध्या मित्रों के साथ ताश खेलकर घर लौटा तो प्रमिला पाकघर से निकल कर मेरे पास रुआसी-सी आकर बोली—

"लोग बुढ़ापे में बहू लाते हैं कि सुख मिलेगा किन्तु हम बहू लाए हैं रोटी ठोक कर पेट भरने के लिए। क्या मेरे भाग्य में यही लिखा है ?"

'क्या हुआ, क्या वे घर नहीं हैं ?'

"वे घर कभी रहते हैं ? आप स्वयं कौन घर की सुध लेते हैं।'

प्रमिला की कटूक्ति मुझे बुरी लगी।

"बेटा बहू क्या करते हैं क्या नहीं करते हैं इसकी खबर रखना मेरा काम नहीं है।"

"इतनी रात गये न जाने कहाँ गये हैं। आप ही सोचिये घर के बड़े हो कर अगर आप इन बातों पर ध्यान नहीं देंगे तो कौन देगा।"

अच्छा प्रशान्त को आने दो। मैं उससे कह दूँगा।

मन में मैं जानता था कि प्रशान्त से कुछ कहने का अर्थ होगा अपना मान-सम्मान खोना—जलती हुई आग में घी डालना। परिवार के पुरान संस्कार और मर्यादायें, उसे अब कुछ सह्य न थे। वह चेतावनी दे चुका था कि सोहाग वीक के बाद, ममता को लेकर अपनी ड्यूटी पर चला जायेगा। प्रमिला और मैं चिन्तित थे। एक नव वधू को लेकर मोर्चे पर जाना ! ऐसे अविवेकी प्रस्ताव में विपत्ति की अदृश्य

सम्भावनायें निहित थीं ।

प्रशान्त को सन्तुष्ट करने के लिए मैंने बैठक से पुरानी मेज-कुर्सी निकाल कर एक नई मेज और सोफा सैट बनवाने दे । इसमें मेरी जमा पूंजी का चौथाई भाग अर्पित हो गया था । मेज देख कर प्रशान्त ने नाक भौंह सिकोड़ ली ।

'ऐसी मेज क्यों बनवाई, पिताजी ? आजकल लोग इतनी ऊंची मेज नहीं रखते हैं ।"

मैंने समझाने की कोशिश की कि नगर के हाकिम बरुआ साहब भी ऐसी ही मेज काम में लाते हैं ।

'बरुआ साहब को कौन आधुनिक विचारों वाला मानता है ? उनका अपना घर १९१० का मॉडल है ।"

१९१० के मॉडल के घर की बात मैंने पहली बार सुनी थी । फिर भी, बात न बढ़ जाय इस डर से मैंने वह मेज लौटा दी और उसकी पसन्द की एक नीची मेज ले आया । अब दूसरी फरमाइश हुई । कमरे से लगे हुए बाथरूम में सैनिटरी फिटिंग्स् करवा दिये जायें ।

मैंने कहा—

'धीरे धीरे हो जायेगा बेटा । इन दिनों खर्चा बहुत हाने मे हाथ खिंचा हुआ है । कुछ दिन सब्र करो । सर्विस सैट्रीन से ही काम चला लो ।

प्रशान्त चुप हो गया । अपना असन्तोष छिपाने की उसने रत्ती भर भी चेष्टा नहीं की । वह सदा से असन्तोषी रहा है । उसकी फरमाइशों की सूची में आये दिन वृद्धि होने लगी । मि शाम बद किये घुसता रहता या बाहर टहलने निकल जाता ।

जैसे ही प्रमिला ने आश्वासन पाया कि मैं प्रशान्त से कुछ कहूँगा, वह एक मुढ़िया सा कर मेरे पास बैठ गई और अमला के दोषों का पोथा खोल दिया।

'जिस घर में सबेरे सूरज भगवान बहू को बिस्तरे में सोए हुए देखते हैं उस घर में लक्ष्मी नहीं ठहरती है।

मैं समझ गया कि आज महाभारत का अखण्ड पाठ सुनना पड़ेगा। बेबसी का भाव धरता मैं सिगरट बनाने लगा।

'नहाने के बाद वह अपने कपड़े तक नहीं फचारती है। नौकर के लिए छोड़ आती है। बच्चा है, वह कितना काम करेगा।"

मैंने टोका—"तुम भी तो अपने कपड़े नौकर से ही फैला जाती हो। फिर बहू करे तो क्या दोष।"

प्रमिला तमक गई।

'अब आप भी मेरी बहू से बराबरी करने लगे हैं? मैं जब इस घर में आई थी आपने कितने नौकर लगा दिए थे?'

प्रमिला, वह राम रहे न वह अयोध्या रही।'

वह कुछ क्षण के लिए मौन हो गई। यद्यपि वह भली भाँति समझती थी कि जो मैंने कहा था वह सच था, किन्तु वह उसे पचा नहीं सकती थी।

'आप वही पुराना राग अलापते रहते हैं। अच्छी लड़की देखकर भी थी वह कालदूत निकली।

मैं सिगरेट पी रहा था और मन ही मन अस्वस्थ अनुभव कर रहा था। प्रमिला को मुख से यह सब कुछ कहना क्या उचित था? आखिर अमला को गहने पहनाने[1] का आग्रह उसी

---

१ गहने पहनाना—नवविवाहिता मुंहदिखाई में बहू के रूप में स्वीकार करना।

ने किया था।

"सब ठीक हो जाएगा प्रमिला। इन दिनों की बातों को बहुत तूल न दो। आजकल ये मदहोश हैं।"

"हमारे भी दिन थे। इस तरह चौबीस घंटे पट बंद किए कमरे में नहीं बैठे रहते थे। घर में सास-ससुर हैं इसकी उन्हें बिल्कुल चिन्ता नहीं है। बस, रोज पार्क में भटकने को चाहिए। सिनेमा का तो कोई ठिकाना ही नहीं है। इधर मैं बूढ़े शरीर से गीली लकड़ियों को फूंकते-फूंकते अपनी जान हलकान किए जा रही हूँ।

मैं यह मानने को तैयार नहीं था कि प्रमिला को कोई अतिरिक्त काम करना पड़ रहा था या ममता उसका हाथ नहीं बटाती थी। मैंने अक्सर ममता को चाय बनाते, सब्जी सँवारते और बरतन मांजते देखा था। फिर भी, प्रमिला को सन्तुष्ट करने के लिए कहा—

हाँ, दिन बदल गए हैं। हम लोग कभी हाथ तक जोड़ के निकलने में शरमाते थे।

प्रमिला हल्की-सी मुसकराई। मैंने सिगरेट का गहरा कश खींचा और धुंए के छल्ले उड़ाने लगा।

"आप जैसा सबीला आदमी तो मुश्किल से कोई ढूंढे मिले। मुझ से अधिक आपको घूंघट की आवश्यकता थी।"

"तुम्हारा मीठा तिरस्कार याद है प्रमिला।

"इसी तरह जिन्दगी बीत गई। और लोग देश में दूर-दूर घूम-फिर आये। हमें इसी पाकघर में जान देना बदा है।"

चूल्हे पर चढ़ी दाल के उबाल आने लगी। पतीले से पकड़कर

प्रमिला ने उसे उतार दिया। उसके उलाहने पर मैंने कोई उत्साह नहीं दिखाया। तिजोरी लगभग पैसे तक खाली हो चुकी थी। उस पर प्रशान्त की माँगें दिन ब दिन बढ़ती जा रही थीं। मैंने बात टालने को कह दिया—

'अगले साल हम भी चलेंगे प्रमिला।

"चलेंगे अगले साल ! अगला साल करते-करते आज तक गौहाटी नहीं देखा। प्रशान्त से क्यों नहीं कहते ?"

'उसके पास क्या धरा है।"

"धरा क्यों नहीं है। घरवालों के लिए नित नए कपड़े लाता है। हमने जो गहने दिये थे वे उसे सुहाते नहीं हैं। नये गहनों का ऑर्डर दिया है।"

"इन बातों से क्या मिलेगा प्रमिला। संसार की रीत है। आजकल शादी के बाद बेटा-बेटी मुड़कर नहीं देखते हैं।'

'आप बोम आदमी हैं।'

प्रमिला का निर्णय मेरे विरुद्ध था।

अहाते के फाटक पर एक टक्सी आकर रुकी। उसमें से प्रशान्त और ममता उतरे। माथा भुकाकर उन्होंने घर में प्रवेश किया। प्रशान्त जूते चरमराता हुआ और ममता सैंडल की खिसखिसाहट करती हुई हमारे सामने से निकले और अपने कमरे में जाकर किवाड़ लगा लिया। प्रमिला अविचल, अव्यक्त देखती रही। मुझे बेसि के शब्द स्मरण हो आये—

'प्रशान्त पशु है।'

वास्तव में प्रशान्त पशु है। खाने-पीने पहनने-ओढ़ने, आमद

उपभोग में ही उसका सारा ध्यान रहता है। आध्यात्मिक चिन्तन की बात उसे नहीं छूती। उसकी चेतना में इस अनुभूति को कोई स्थान नहीं है कि यह सब सुख दो दिन का है। उसके हाव-भाव, ध्यान-धारणा का एक ही उद्देश्य है—

ऋण कृत्वा घृत पीबेत,
यावत जीवेत सुख जीवेत।

मैंने सिगरेट फेंक दी।

"प्रमिला रजत ऐसा कभी न होता। उसकी हर बात में मात्रा-ज्ञान था।"

वह सहसा चपल हो उठी। उस दिन सबेरे से उसे रजत की याद आ रही थी।

"जो होनहार था उसे भगवान ने उठा लिया। उसका गला भरा हुआ था। "उसकी तसवीर टँगी रहती थी। न जाने कहाँ गई।

"मैंने आलमारी में रख दी है।

"उसे कल बैठक में टाँग देंगे।

और अगले दिन, जब सारा घर आँगन सबेरे की धूप में नहाया हुआ था, बड़े चाव से प्रमिला ने रजत का चित्र दीवार पर प्रतिष्ठित किया। उसके बाद हम दोनों चुपचाप उसे अपलक निहारते रहे। उसकी आकृति कितनी सुन्दर थी! लगता था उसके उजले मुख की आभा बराबर बढ़ती जा रही थी।

न जाने कब प्रशान्त हमारे पास आकर बैठ गया था। ध्यान टूटने पर मैंने उसे देखा।

"कहाँ से आ रहे हो, प्रशान्त ?"

"क्लब गया था। रजत दादा के नाम पर एक शील्ड देने की व्यवस्था की है। उसे खेल का बहुत शौक था।

प्रमिला किसी काम से अन्दर चली गई।

'रजत एक अच्छा खिलाड़ी ही नहीं था वह एक उत्तम मानव भी था। यदि उसने किसी अभिजात कुल में जन्म लिया होता तो निश्चय ही वह किसी दिन कमाण्डर-इन-चीफ बनता या प्रधान मन्त्री भी।'

'कहना कठिन है पिताजी।'

"तू उसे नहीं समझ सकता प्रशान्त। तेरा मन धरती पर रमा रहता है, उसका मन सर्वत्र व्याप्त था।

इस तुलना से वह खिन्न हो गया।

"मैं जानता हूँ आप मुझे अपना योग्य पुत्र नहीं मानते हैं किन्तु मेरा क्या दोष है ? मैं आज की दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलना चाहता हूँ आप लोगों को यह पसन्द नहीं है।

"जो भी हो विवेचना करने का ज्ञान तो होना चाहिये। कितनी आशा और उमंग से माँ घर में बहू लाई है। क्या उसे थोड़ा बहुत सन्तुष्ट नहीं करना चाहिये ?

"माँ को कौन सन्तुष्ट कर सकता है ? वह छोटी-छोटी बात पर अड़ जाती है। सबेरे उठने में देर हो जाये तो अपराध मानती है। भात न बनाये तो अपराध, भीग हुए कपड़े निचोड़ कर न फैलाये तो अपराध, सिनेमा जाओ तो अपराध, टहलने जाओ तो अपराध, कमरे में बैठकर बात करो तो अपराध।

मैंने तो इस लिए माँ का नाम ही मिस्टर अपराध रख दिया है।"

यह कहकर वह जोर से हँसा। प्रमिला इसी समय अन्दर आ रही थी। प्रशान्त के शब्द उसके कानों में पड़ गये।

"सुन ली इसकी बात। यह अब कुछ मनुष्य भी नहीं समझता है। इसीलिए मैंने पाला-पोसा था। बहू के सामने मेरा ऐसा अपमान!

प्रमिला के अन्तर का कोई सोया हुआ भूत जाग पड़ा था।

देहात की औरतें कभी-कभी अपना सासपन जमाने के लिए इसी तरह गरजती बरसती हैं। बरसी फिर माई की ओर बरसने को थी। उसे रोकने के लिए मैंने प्रशान्त को फटकार बताते हुए कहा—

"तेरा मुँह बहुत खुल गया है। कुछ भी हो वह तेरी माँ है।"

परिणाम मनचाहा हुआ। उसने उद्दण्डता से उत्तर दिया—

"मैं समझता हूँ आप लोग क्या चाहते हैं। माँ का मत है कि बहू को घर में दासी और बन्दिनी बनाकर रखना चाहिए। ठीक है। मैं शीघ्र ही अपने काम पर जा रहा हूँ। आप सास जितनी चाहें उससे चक्की पिसवायें।"

वह उठ खड़ा हुआ। बड़ा सनकी लड़का है। किन्तु प्रमिला भी कम नहीं है।

मैं चक्की के दो पाट में आ गया था।

कुछ दिन बाद मुझे विमला के तलाक के मुकदमे में गवाही देने के लिए डिब्रूगढ़ जाना पड़ा। पुलिस की निगरानी में आबेई भी एक दिन के लिए आया था। उसने मजिस्ट्रेट के सामने कहा—

"विमला मेरी पत्नी है। मैं उसे तलाक नहीं देना चाहता हूँ। हाँ अगर मुझे सुविधा मिल जाये तो मैं अपने देश लौट जाऊँगा। यदि विमला की इच्छा मेरे साथ जाने की न हो तो वह यहाँ रह सकती है।'

आबेई के बयान के बाद मजिस्ट्रेट ने विमला से जिरह की। अन्त में उसकी स्पष्ट उक्ति और अपने अनुमान के बल पर, आबेई की असहमति होते हुए भी उन्होंने तलाक के पक्ष में निर्णय दिया। विमला और आबेई के दाम्पत्य जीवन की इति-श्री हो गई। सम्पत्ति का बटवारा अनिश्चित रहा। कदाचित् इसलिए कि तलाक की माँग विमला ने की थी।

विमला डिब्रूगढ़ ही रह गई, मैं तिनसुकिया लौट आया।

घर पहुँचकर मैं बाहर के बराण्डे में ही आराम-कुर्सी पर बैठ गया। दो-एक बार खखार कर आने की सूचना दे दी। कुछ देर में ममता एक लोटा जल और एक अँगोछा लेकर आई और मेरे पास रख दिया। मैंने देखा वह एकदम विमला जैसी हो गई थी। सिर दिया था न मुँह पर पाउडर लगाया था। एक साधारण, सूती मेखला चादर पहने थी। गहने सब उतार दिये थे।

मैंने विस्मय से पूछा—

"तुम्हें क्या हुआ है, ममता बेटी ?"

वह हँसी । उस हँसी में वेदना की ध्वनि थी ।

"आपने मुझ में क्या हुआ देखा है, पिताजी ?"

"तुम बिल्कुल दीन-हीन हो गई हो । तुम्हारा यह भेस मुझे अच्छा नहीं लगता है ।"

"लेकिन तरकारी काटने और हल्दी पीसने के लिए अच्छे वस्त्रों की क्या आवश्यकता है ?"

"इस सत्य की उपलब्धि तुमने सहसा कैसे कर ली, ममता ?"

"ज्ञानी देखकर सीखता है और मूर्ख ठोकर खाकर । सत्य का बोध होने में कुछ विलम्ब हो गया, पिताजी ।"

ममता की बातों में कचोट थी और व्यंग भी । मैंने कूटनीतिक मौन का अवलम्बन किया । लोटा अँगोछा लेकर हाथ-मुँह धोये-पोंछे और फिर अपने स्थान पर आकर बैठ गया । ममता चाय ले आई और उसके साथ अपने बनाये हुए नारियल के लड्डू ।

"बैठो बेटी ।"

दाल चढ़ाकर आई हूँ । उसमें नमक डालना है ।'

"माँ कहाँ गई है ?"

"अपनी मामी के यहाँ खाने गई है ।"

"मामी के ?"

हाँ ।"

प्रमिला के साथ रहते इतने साल बीत गये थे किन्तु इससे पूर्व मुझे कभी यह जानकारी नहीं हुई थी कि इस नगर में भी उसकी

किसी मांझी का घर है। मैं समझ गया कि मेरी अनुपस्थिति में अवश्य कोई तुमुल संघर्ष हुआ है जिसके फलस्वरूप अमला ने सारे अलंकार तज दिये हैं और प्रमिला को अपनी किसी अज्ञात कुलशील मांझी के घर भीख खाने जाना पड़ा है।

मैंने पूछा—'प्रशान्त घर में है?'

'वे परसों जा रहे हैं, इसलिए सवारी का पता करने गये हैं। सुना है तेजू तक कोई जीप जा रही है।

'तुम भी जा रही हो?

'मुझे घर ठहरने का आदेश मिला है। माँ की इतनी आयु हो गई है। कोई पास रहने का चाहिये।'

स्पष्ट हो गया अमला ने क्यों तापसी भेस धारण कर रखा था। प्रशान्त अपनी धमकी पूरी करने पर तुला हुआ था। प्रमिला उस स्थिति को रोकने के उपायस्वरूप घर से चली गई थी। किन्तु वह कहाँ गई थी यह नौकर के अतिरिक्त कोई नहीं जानता था। नौकर को बुलाकर पूछताछ की। मालूम हुआ कि वह अपनी किसी पुरानी साथिन नर्स के घर चली गई है। वह नर्स कौन थी और कहाँ रहती थी इसका पता नहीं लगा।

परसों सोहाग भीख था और आज यह भाग्य! मेरा सिर घूमने लगा। ऐसा अनुभव हुआ कि रक्तचाप बढ़ गया है। खाँसी का भी जोर हुआ। बुरे वक्त में सब विकार उभर आते हैं। किन्तु, मैंने सोचा यदि मैंने खाट पकड़ ली तो माँ बेटे के बीच पड़ता हुआ मनोमालिन्य न जाने क्या रूप धारण कर ले।

हमारे परिवार पर अदृष्ट अपने घातक्नी बान लक्ष्य कर रहा था। उसकी यथासाध्य रक्षा करनी होगी।

उस दिन भात-पानी की मेरी तनिक भी इच्छा नहीं थी, लेकिन ममता न मानी। वह बड़ी चतुर और बुद्धिमान लड़की है। मेरे प्रिय व्यंजनों से थाल सजा लाई। खाना खाकर मैं चिलम भरने में लग गया। वह ताम्बूल कूट लाई। जब से दाँत हिलने लगे थे और एक दो विदा माँग चुके थे प्रमिला ने मेरा ताम्बूल खाना बंद कर दिया था। कभी बहुत बारीक काट कर ताम्बूल खाना भी चाहा तो—नस रही थी न?—ताम्बूल से कैंसर हो जाता है, यह फतवा देकर उस पर पाबन्दी लगा दी। किन्तु आज बहू के हाथ के बहुत होशियारी से कटे हुए ताम्बूल खाने का लोभ संवरण मैं नहीं कर सका। मुँह में डाल कर धीरे-धीरे चबाने लगा। प्रमिला यहाँ होती और मुझे देखती तो कहती—

'क्या जानवर की तरह जुगाली कर रहे हो?'

थोड़ी देर बाद लगा कि तबियत ठीक नहीं है और ताप चढ़ आया है। मैं आकर बिस्तर पर लेट गया। खाँसी बराबर उठ रही थी। ममता हाथ पाँव मलने लगी। उससे कुछ चैन पड़ा और मैं सो गया।

रात का सहसा आँख खुल गई। घड़ी ने दो बजाये। सामने के कमरे में हवा न उत्पात मचा रखा था। दीवार से कुछ गिरने का शब्द सुनकर मैं उठ बैठा। शरीर जल रहा था सिर भारी था और हाथ-पाँव में नसों की थकान भरी थी।

"बाहर का कमरा बन्द नहीं है ? क्या गिरा ?'

थोड़ी देर में किसी का पदचाप सुना ।

"कौन है ?'

"मैं, ममता ।

"क्या कर रही हो बेटी ? रात बहुत बीत गई । खाना-पीना हुआ या नहीं ।"

"नहीं वे अभी तक नहीं लौटे हैं ।'

"क्या ?'

"हाँ, शायद कहीं देर हो गयी हो ।"

मैं बिस्तर छोड़कर खड़ा हो गया । पैर डगमगा रहे थे । दरवाजे की चौखट का सहारा लेते हुए कहा—

"जाओ, तुम जाओ । उसके लिए और रुके रहने की जरूरत नहीं है ।"

"जाऊँगी, आपको ज्वर है—आप लेट जायें ।"

बरामदे की रोशनी उसके कमरे में आ रही थी । मैंने देखा मेज पर एक तसवीर रखी है । उसका कांच टूट गया है ।

"किसकी तसवीर है ?'

"दादा की ।"

"रजत की ?'

"हाँ ।'

"क्या हुआ ?"

"हवा से गिर पड़ी ।"

मैंने अप्रसन्न होकर कहा— "दरवाजा क्यों खुला रखा था ? तुम लोग उसके चित्र को भी शान्ति नहीं लेने दोगे ।"

मैंने सुना ममता सिसक रही है। मुझे आश्चर्य हुआ। बड़े स्नेह से पूछा—

'क्यों, मेरे कहने से तुम्हें चोट पहुँची ?

उसके आँसू आँखों की कोर में थमे रह गये। एक गहरी सिसकी उसे हिला गई।

"विश्वास मानना, बेटी वह बच्चा साधारण मानव नहीं था। वह कोई देवदूत था जिसने संयोग से इस घर में जन्म पा लिया था। भगवान ने शीघ्र ही उसे अपनी सेवा में बुला लिया।"

ममता ने सहारा देकर मुझे बिस्तरे पर लिटा दिया। फिर, बड़ी सावधानी से कांच के टूटे हुए टुकड़ों को फ्रेम से निकाला और रजत के चित्र को मेरी मेज पर रख दिया। सहसा उसने चित्र को प्रणाम किया।

मैंने पूछा—"रजत तुम्हें अभी भी अच्छा लगता है ?"

"हाँ।"

कितना ?"

"आप से कह नहीं सकती।"

मैंने उसे पास बुलाया, मस्तक पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और कहा—

'तुम भीम की बेटी हो। मान्यी पहचानने में भूल नहीं कर सकती। विधाता ही विमुख हो गया। उसे चाहीं तो समझतीं कि मनुष्य को कैसा होना चाहिए।"

"उनके बारे में अब इस दृष्टि से सोचना मेरे लिए पाप है।"

'किन्तु क्या, पिताजी ? '

"रजत मेरे रक्तमांस से अवश्य उपजा था किन्तु वह मेरे या मेरे पूर्वजों के ही नहीं, वह समस्त मानवोचित गुणों का सच्चा अधिकारी था। उसे खोकर मैंने सब कुछ खो दिया।"

'किन्तु पिताजी वे तो हैं।"

'कौन, प्रशान्त ? हाँ।'

ममता का हाथ अपने हाथ में लेकर मैं दुलराने लगा। किसी अव्यक्त भय से उसकी देह काँप रही थी।

'तुम प्रशान्त को कितना प्यार करती हो ? '

"मैं नहीं जानती। सही आँकने में मैं अपने को असमर्थ पाती हूँ।"

'हाँ, बेनि ने कहा था तुम केवल ग्रहण करना जानती हो।"

'माँ मुझे समझती थी—मुझ से बढ़कर मुझे समझती थी। उसमें अपूर्व सहज बुद्धि थी।'

बेनि के स्मरण से ममता गम्भीर हो गई।

'यदि आज माँ होती तो—'

'तो ? बेटी मैं तो हूँ मुझ से कुछ न छिपाना।'

न जाने क्यों ममता हँस दी। एक रूखी, खोखली हँसी। वह हँसी थी या उसका विद्रूप ? वह बाली कुछ नहीं।

'जाओ भात खाओ। उसका क्या जाने कब आये।"

वह देवी दुर्गा की प्रतिमा-सी खड़ी रही मौन और अचल।

रात प्रायः बीत चुकी थी। कहीं कोई सियार बोल उठता था। मुर्गे ने ऊँचे स्वर में अन्तिम प्रहर की सूचना दी। आम की डाल पर कोयल कुहुक उठी।

"ममता, वह तुम से लड़कर तो नहीं गया है ?"

"नहीं।"

मेरे और ममता के बीच आयु का अन्तर एक अदृश्य दीवार के समान था। मैं इससे अधिक और नहीं कह-सुन सकता था। एक बार और खाने का आग्रह करके मैंने आँखें बंद कर लीं।

सवेरे जब मैं उठा सूरज काफी चढ़ चुका था। ज्वर अभी तक नहीं टूटा था। उस दिन उपाकर्म[1] का पर्व था। मैंने उठते ही पूछा कि गायों को नहलाया गया था या नहीं। ममता ने सूचित किया कि वह कार्य हो चुका था। वह नहा-धोकर साधारण सफ़ेद वस्त्र पहने हुए थी।

"और प्रशान्त ? वह आ गया ?"

"हाँ।"

"जरा उसे बुलाओ। मेरा तापमान देख लेगा।"

"सो रहे हैं।"

यह दो टूक उत्तर मुझे खल गया।

"सो रहा है तो सोने दो।"

ममता मेरा भाव ताड़ गई।

"अभी जगा देती हूँ।"

आँखें मलता हुआ प्रशान्त आया। उसे देखते ही मैं जान गया कि उसने रात जागरण में बिताई थी। एक भयंकर उद्विग्नता उसे घेरे हुए थी। उसकी आँखें भारी थीं और

१ उपाकर्म—तीज से एक दिन पहले।

"किन्तु क्या, पिताजी ?"

"रक्त मेरे रक्तमांस से अवश्य उपजा था किन्तु वह मेरे या मेरे पूर्वजों के ही नहीं, वह समस्त मानवोचित गुणों का सच्चा अधिकारी था। उसे खोकर मैंने सब कुछ खो दिया।"

'किन्तु पिताजी, वे तो हैं।'

कौन, प्रशान्त ? हाँ।"

ममता का हाथ अपने हाथ में लेकर मैं मुसकराने लगा। किसी अव्यक्त भय से उसकी देह काँप रही थी।

'तुम प्रशान्त को कितना प्यार करती हो ?"

"मैं नहीं जानती। सही आँकने में मैं अपने को असमर्थ पाती हूँ।"

"हाँ, बेलि ने कहा था तुम केवल ग्रहण करना जानती हो।'

'माँ मुझे समझती थी—मुझ से बढ़कर मुझे समझती थी। उसमें अपूर्व सहज बुद्धि थी।

बेलि के स्मरण से ममता गम्भीर हो गई।

'यदि आज माँ होती तो—"

"तो ? बेटी मैं तो हूँ मुझ से कुछ न छिपाना।"

न जाने क्यों ममता हँस दी। एक रूखी, खोखली हँसी। वह हँसी थी या उसका विद्रूप ? वह बोली कुछ नहीं।

'जाओ सोने जाओ। उसका क्या, जाने कब आये।"

वह देवी दुर्गा की प्रतिमा-सी खड़ी रही मौन और अचल।

रात प्रायः बीत चुकी थी। कहीं कोई सियार बोल उठता था। मुर्गे ने ऊँचे स्वर में अन्तिम प्रहर की सूचना दी। आम की डाल पर कोयल कुहुक उठी।

"ममता, यह तुम से झगड़कर तो नहीं गया है ?"

"उहूँ।"

मेरे और ममता के बीच आयु का अन्तर एक अदृश्य दीवार के समान था। मैं इससे अधिक और नहीं कह-सुन सकता था। एक बार और खाने का आग्रह करके मैंने आँखें बन्द कर लीं।

सवेरे जब मैं उठा सूरज काफी चढ़ चुका था। ज्वर अभी तक नहीं टूटा था। उस दिन उरुका[1] का पर्व था। मैंने उससे ही पूछा कि गायों को नहलाया गया था या नहीं। ममता ने सूचित किया कि वह कार्य हो चुका था। वह नहा-धोकर साधारण सफेद वस्त्र पहने हुए थी।

"और प्रशान्त ? वह आ गया ?"

"हाँ।"

"जरा उसे बुलाओ। मेरा तापमान देख लेगा।"

"सो रहे हैं।"

यह दो टूक उत्तर मुझे खल गया।

"सो रहा है तो सोने दो।"

ममता मेरा भाव ताड़ गई।

"अभी जगा देती हूँ।"

आँखें मलता हुआ प्रशान्त आया। उसे देखते ही मैं जान गया कि उसने रात जागरण में बिताई थी। एक भयंकर उद्विग्नता उसे घेरे हुए थी। उसकी आँखें भारी थीं और

१ उरुका—बीहू से एक दिन पहले।

गति में संतुलन का अभाव था। वह मेरे पास आकर बैठ गया। मेरी नब्ज देखी। पास से मेरे चेहरे की जाँच की। पूछा—

"खाँसी है ?

'हाँ।'

यंत्र लाकर रक्तचाप देखा। फिर नुस्खा लिखा।

"क्या देखा ?"

कुछ देर वह चुप सोचता रहा। फिर बोला—"अभी कहना कठिन है।"

अमला वहीं खड़ी थी। प्रशान्त की ओर दृष्टि से संकेत करते हुए मैंने पूछा—

"इन्हें चाय दी ?"

'अभी बनाई है। आप भी लेंगे ?'

"ले आओ, लेकिन बहुत हल्की।"

अमला के जाने के बाद मैंने प्रशान्त से कहा—

'मेरा शरीर गिरता जा रहा है। अब तुम इस घर की जिम्मेदारी सम्भालो।'

'मैं कल जा रहा हूँ। सब निश्चित हो गया है।

'जाना चाहते हो तो जाओ, लेकिन यह सब क्या हो रहा है ? माँ घर में नहीं है और इस लड़की ने सारी रात अनाहार बिताई है। यह सब देख कर मेरा ज्वर टूटेगा न हालत सुधरेगी।"

अन्तिम बात मैंने प्रशान्त को चोट पहुँचाने के उद्देश्य से कही थी। वैसे वह झूठ भी नहीं थी। मैं मन में गहरी

अशान्ति और वेदना अनुभव कर रहा था।

"पिताजी, माँ के साथ निभना कठिन है।

"क्यों ?"

"वह यह जानने-मानने को बिल्कुल तैयार नहीं है कि आज का आदमी क्या चाहता है।"

कई लोग ऐसे होते हैं जिनमें आयु के साथ उनके अनुभव और विवेक में कोई वृद्धि नहीं होती है। वे सदा नादान बने रहते हैं। हमारी प्रतिभा भी ऐसी ही है। उसके मस्तिष्क अधकचरा है। नहीं तो वर्ष में एक बार आने वाले बीहू के त्योहार पर हमारे परिवार में व्यर्थ के विवाद से ऐसी विषम स्थिति क्यों खड़ी होती। अब तक यह बात जग जाहिर हो चुकी होगी कि प्रतिभा घर छोड़कर चली गई है। यह तो वही हुआ कि खेत में आग लगने को भी 'रेहू का ढेहू'[1] बना लेना। हमने सब अपनी बुराइयों का अनदेखा करके अपने परिवार की नाव को समाज में ब्रह्मपुत्र के विरुद्ध खेने का धृष्ट प्रयास किया है। यदि ऐसे में हमारी नाव किसी भँवर में पड़कर बेकाबू हो जाये तो हमारे बैरी प्रसन्न होकर ऐसे नाचे कूदेंगे जैसे बरसात के नए जल में छोटी मछलियाँ।

मैंने प्रशान्त को छोटी-सी मन्त्रणा दे डाली।

'मेरे दिन पूरे हो रहे हैं। अधिक नहीं जाना है। मेरे बाद परिवार तुम्हारा होगा। अपने मन के अनुसार चलाओगे।

---

१ रेहू का ढेहू बनाना—एक असमिया मुहावरा जिसका अर्थ है कि राई जैसी सामान्य वस्तु को अपनी मूर्खता से ऐसा बना देना जैसे रेहू मछली को बहुर।

हाँ, थोड़ी सहिष्णुता सीख लो। अब जमाना एक महान विद्या है।"

प्रशान्त अपने को कुँए और खाई के बीच में पा रहा था। उसने मेरी बातों पर ध्यान दिया न दिया हो, किन्तु मेरे रक्तचाप की उसे अवश्य चिन्ता थी। डाक्टर जो था। अधिकार से बोला—

"पिताजी आप थोड़ी देर सो जाएँ।"

मिथ्या क्यों कहूँ, दिन भर बेटे बहू ने मेरी भरसक टहल की थी। किन्तु ऐसे रोग में जिसके प्रिय परिचित स्पर्श से तन मन को शांति मिलती उस महिमामयी पत्नी का संसर्ग सुलभ न था।

दोपहर से मोहल्ले में बीहू के नाच रंग की ध्वनि कानों में पड़ने लगी। मैंने सुना कि गगना, पेपा और ढोका[1] लेकर पड़ोसी गाँव के लड़कों की एक टोली हुसारी[2] गाने आई है। मेरा हृदय बेकल हो गया। भगवान से प्रार्थना की—

'हे परमात्मा उसे आज घर लौटने की सद्बुद्धि दे।"

गोधूली के समय मेरे मन में विश्राम का विधान तोड़ने की प्रवृत्ति प्रबल हो उठी और अकस्मात् जिन रीति रस्मों की मैंने आजीवन कभी चिन्ता नहीं की थी—जसे गायों के नई रस्सी बाँधना, गौशाला में अग्नि जलाना मेंहदी जमा करना—उनका समापन हुआ है कि नहीं, यह स्वयं देखने के लिए मैं

१ गगना पेपा और ढोका—असमिया वाद्य यंत्र।

२ हुसारी—बीहू के अवसर पर गाये जाने वाले भक्ति गीत।

व्यग्र हो गया। यह पहला मौका था जिसको अमला को हमारे घर में व्यवस्था करनी पड़ी थी। पिऊड़ा, पीठी और लड्डू बनाने में उसने तनिक भी त्रुटि नहीं की। यदि उसे सही आदेश-निर्देश मिलता तो शेष वस्तुएँ भी बना लेती। प्रमिला की अनुपस्थिति ने सब गड़बड़ कर दिया।

प्रमिला का अभाव मेरे अन्तर को सालता रहा, और जब देर रात गए तक वह नहीं आई तो मुझे ज्वर चढ़ आया। जब मनुष्य के शरीर और मन की अवस्था अवसन्न होती है तब वह उसी व्यक्ति का सहारा चाहता है जिस पर वह सब से अधिक निर्भर रहता है। उस रात बाई में मैं बार-बार प्रमिला को पुकारता रहा।

जब ज्वर टूटा और चेतना आई तो रात अभी शेष थी। मैंने प्रशान्त को आवाज दी। पास से एक अत्यन्त कातर स्त्री स्वर ने उत्तर दिया।

"नहीं हैं। गए हैं।

"इतनी रात कहाँ गया है?

"मुझे नहीं मालूम।

"तुमने भात खाया?"

"नहीं।"

"तुमने आज भी मेरी बात नहीं रखी। न जाने क्यों वह तुम जैसी लक्ष्मी-सी पत्नी पाकर रात में इस प्रकार भटकता फिरता है।

"भाग्य" दोष मेरा ही है, पिताजी। पुरुष का अच्छा बुरा होना स्त्री पर निर्भर रहता है। आप ज्यादा बात न करें।

शान्त होकर सो जायें। उन्होंने कहा था नींद न आई तो कष्ट होगा।"

अम्मा का विनय भाव मुझे छू गया। बात करते-करते थकान लगने लगी थी।

"बेटी दो-चार दाने पेट में डाल लो।"

'मैं खा लूंगी। आप सो जायें।'

अम्मा ने पानी के साथ एक गोली दी। थोड़ी देर में नींद की खुमार आने लगी।

सवेरे उठा तो देखा कि नाटक के दृश्य की तरह पट परिवर्तन हो गया था। लाल आँखें, म्लान मुख, प्रशान्त मेरे पाँयत बैठा था। लगता था वह तड़के ही लौटा था। ताप देखने के लिए उसने हाथ बढ़ाया तो मैंने हटा दिया।

'तुम्हें कोई जरूरत नहीं है। मुझे मरने दो।'

'क्यों क्या हुआ पिताजी ?

'कल रात भी तुमने इस लड़की से उपवास करवाया ?"

पिताजी उससे उपवास करने के लिए किसने कहा है ? मैं तो क्लब में बीहू मनाने गया था।

'तो जाओ सो जाओ। मेरा ज्वर देख कर क्या होगा।"

प्रशान्त नहीं उठा। उसने जिद करके मेरे रक्तचाप का यन्त्र लगाया। मैंने देखा उसके चेहरे पर गहरी चिन्ता छा गई। फिर, वह उठकर चला गया। मेरी हथेली और तलुए जल रहे थे। हृदय की धड़कन तीव्र हो गई थी। सिर पर मानो किसी ने एक शिला रख दी थी।

इतने में ममता आई। वह उजले सफेद वस्त्र पहने थी।

"स्नान हो गया, बेटी ?'

"हाँ पिताजी। आप हाथ-मुँह धोयेंगे ?"

'मुँह बड़ा कड़वा हो रहा है।'

ममता ने नमक के पानी से मुँह साफ करवाया। बाहर से एक नया खिला बेलि का फूल लाकर मुझे दिया। उसकी गंध में मैंने बीहू के उत्सव की सजीव और सतेज प्रकृति का संदेश पाया।

"बीहू का सब जलपान तयार हो गया ?

"हाँ।"

"माँ की कोई खबर मिली ?'

"नहीं।"

'हूँ। प्रशान्त है या नहीं।'

'हैं।'

'वह क्या आज जा रहा है ?'

प्रश्न का उत्तर दिया ममता की आँखों में छलके हुए दो आँसुओं ने।

'क्यों, क्या हुआ ? रो रही हो।

"नहीं तो।'

आँसुओं में हँसने की चेष्टा से वह मुख करुणा से भरी।

मैंने स्पष्ट अनुभव किया कि ममता इस घर में भयानक यातना पा रही है। यदि प्रतिमा के निर्दिष्ट मार्ग का अनुसरण कर वह धोखा-पार्टी और छुआछूत के चक्कर में घर की चक्की

में फँस गई तो उसका दाम्पत्य जीवन नष्ट हो जाएगा। प्रशान्त स्वार्थी जीव है। उसकी धारणा है कि अमला के साथ अपना अलग जीवन बिताने का उसका सम्पूर्ण अधिकार है। उसमें मेरा या प्रमिला का बाधा बनना उचित न होगा।

मैंने आवाज दी—"प्रशान्त।"

दो तीन बार पुकारने पर वह आया।

'तुम आज जा रहे हो?'

'प्रबन्ध तो सब हो गया था पिताजी किन्तु मैं आपका बुखार उतरने पर ही जाऊँगा। वैसे मेरा हस्पताल फिर खुल गया है।

क्या दोनों वहाँ से चले गए?'

'हाँ चले गए।

"तो जाओ तुम जाओ और अमला को भी अपने साथ लेते जाओ।'

प्रशान्त को एकदम मेरे शब्दों पर विश्वास नहीं हुआ।"

"आप सच कह रहे हैं? आपकी तबियत अब "

उसके उल्लास में कितना स्वार्थीपन था। मैं चिढ़ गया।

"मेरी चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। बुखार है दो दिन में उतर जायेगा। विमला भी आने वाली है। वह देख लेगी।

प्रशान्त ने प्रतिवाद नहीं किया किन्तु अमला ने आकर कहा—

"पिताजी, आप क्या कह रहे हैं?' बीहू पर कौन अपना घर छोड़ कर जाता है। आपको बुखार है माँ घर में नहीं हैं।

ऐसी स्थिति में आप कहें भी तो मैं नहीं जाऊँगी ।

प्रशान्त अटल था ।

"तुम्हारी इच्छा । मैं तो जाऊँगा ।"

"पिताजी की देखभाल कौन करेगा ?"

"उसकी व्यवस्था मैंने कर दी है ।

"हठ न करो, ममता मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ । तुम प्रशान्त के साथ जाओ और सुखी रहो । प्रतिमा को समझाने का भार मैं लेता हूँ । जाओ तैयारी करो ।"

दोपहर को एक मिलिट्री की गाड़ी आई । मैंने विशेष ध्यान नहीं दिया । प्रशान्त जा रहा था । उसी के लिए आई होगी । किन्तु वह कुछ क्षण ठहरकर चली गई । शीघ्र ही प्रशान्त आया । उसके हाथ में एक पत्र था । मोहर देखते ही मैं समझ गया कि सैनिक हेडक्वार्टर से आया था ।

"पिताजी पिताजी !"

"क्या बात है प्रशान्त ? इतने उत्तेजित क्यों हो ?"

"पिताजी, रजत दादा जीवित है !

रजत जीवित है ! मेरा हृदय काँप गया । मैं उठ बैठा । मुँह से कुछ न बोल सका । किन्तु मेरा रोम-रोम पूछ रहा था—

क्या यह समाचार सच है ?"

प्रशान्त कह रहा था—

"दादा को चीनी बन्दी बनाकर ले गए थे । उनको छोड़ दिया जायेगा । बीच में कोई गड़बड़ नहीं हुई तो पन्द्रह दिन में वह घर पहुँच जायगा ।"

पत्र को झपट कर मैंने स्वयं पढ़ा । बार-बार पढ़ा । मेरा

हृदय आनन्द से हिलोरें लेने लगा। सहसा मैंने देखा प्रशान्त का मुख आतंक से विवर्ण हो गया। मैंने अमला पर दृष्टि डाली। उसकी अवस्था मूर्छामान हो रही थी। उसे अस्थिर देख, प्रशान्त पकड़ कर भीतर ले गया।

मेरे अन्तर में एक अजीब उतार चढ़ाव होने लगा। रह रह कर एक आवाज उभर कर कहती थी—

'बहुत देर कर दी, रजत। लौटकर अब तुम क्या पाओगे? तुम्हारा घर बसाने का सपना चूर चूर हो गया।"

कसी विडम्बना थी, इस समय घर में प्रमिला थी न विमला।

चारों ओर धूप फैली हुई थी। हमारे घर के ऊपर आकाश में एक बादल का टुकड़ा मँडरा रहा था।

कमरे में प्रशान्त और अमला में कानाफूसी हो रही थी। धीरे-धीरे उसमें दस्तों की वही झनझनाहट आने लगी जो एक दिन मैंने आमेई और विमला में सुनी थी।

पत्र हाथ में लिये मैं बिस्तर पर जाकर लेट गया। मैंने अनुभव किया कि मेरी देह एक प्रबल आघात से संज्ञाहीन हो गई थी। मेरा सिर चकराने लगा। मुझे स्मरण आता है मैं बुदबुदाया भी था। प्रशान्त आने में क्यों देर कर रहा है? वह अमला को लेकर चला क्यों नहीं जाता? वह कमरा खाली हो जाये ताकि हम दिखावे मात्र को ही सही—रजत का घर वेश में स्वागत करने के लिए, इस घर को एक बार फिर वैसे ही तैयार कर सकें जैसे पहले कभी किया था। किन्तु—किन्तु

वधू कौन होगी ? जिस कन्या का उसने मन से वरण किया था वह तो भाई की पत्नी बन चुकी थी ।

इतने में प्रशान्त ने आकर मेरे माथे पर हाथ रखा और ताप का अनुमान किया । मैंने पूछा—

"तुम जा नहीं रहे हो, प्रशान्त ?'

"आपका ज्वर तेज हो गया है । इस दशा में आपको छोड़ कर नहीं जा सकता । मैंने खबर कर दी है । और फिर, रजत दादा भी तो आने वाला है ।"

मैंने कुछ नहीं कहा । थोड़ी देर में झपकी आ गई । एक सपना देखा । हिमालय के ऊपर से किसी ने शतघ्नी बाण छोड़ा है । बाण से प्रज्वलित अग्नि को वायु ने उठाया और उसकी चिनगारियाँ चारों दिशाओं में व्याप्त हो गईं । एक चिनगारी एक घर पर गिरी और उसे तिनकों के ढेर के सदृश पलक झपकते जलाकर राख कर दिया ।

मेरी नींद टूट गई । आँख खोली तो देखा ममता खड़ी थी । सूर्य अस्त हो चुका था । दीवार पर एक छिपकली[1] बोल रही थी ।

ममता ने पूछा—"अब आपको कैसा लग रहा है ?'

'क्यों, मुझे क्या हुआ था ?'

'मूर्छा आ गई थी ।

"तुम गई नहीं ?'

"हम कैसे जा सकते हैं ?

खिड़की बंद थी । ममता को उसे खोलने का इशारा

---

१ छिपकली बोलना—शकुन में यह शुभ माना जाता है ।

किया। हवा का एक झोंका आया और मके शरीर में प्राण फूँक गया। जीवन दान दे गया। मैंने देखा। अमला की आँखें सूज आई थीं और मुँह उतरा हुआ था।

"प्रशान्त कहाँ है ?

डिब्रूगढ़[2] गये हैं।'

"क्यों, मेरा रोग बहुत बढ़ गया क्या ?"

'नहीं तो।"

'तुम बात छिपा रही हो किन्तु मैं समझ गया हूँ। रोग अवश्य गम्भीर हो गया है। माँ आ गई ?

'नहीं। खबर करा दी है।'

"रजत के आने की खबर भेजोगी तो वह आ जायेगी।"

"उन्हें खबर मिल गई होगी। समाचार पत्र, रेडियो—सभी में है।"

सहसा मैंने पूछा—

'बेटी रजत के आने पर क्या तुम उससे धीर-स्थिर भाव से बात कर सकोगी ?

"मुझे लाज लगेगी।"

'बस, इतना ही ? क्या मन में यह भाव नहीं उठेगा कि कभी तुमने इस व्यक्ति को अपना सर्वस्व देकर प्यार किया था ?

मेरी आँखें कदाचित् हिंसक व्याघ्र की तरह जल रही थीं।

---

२ डिब्रूगढ़ जाना—डिब्रूगढ़ में बड़ा हस्पताल है। असम में बोलचाल की भाषा में 'डिब्रूगढ़ गये हैं' कहने का अर्थ होता है विशेषज्ञों से परामर्श के लिए जाना।

ममता के हाथ में शीशे का खाली गिलास था। वह छूट कर टूट गया।

'तुम इतनी कठोर हो गई हो कि उसके लिए—मने छिप कर ही सही—आँसू की एक बूँद भी नहीं गिरा सकोगी ?

ममता के हृदय पर मेरे शब्द टीन पर कंकड़ों की तरह बरस रहे थे।

मैंने ही उस पुत्र-वधू के रूप में स्वीकार किया था। वह शील की बेटी थी। मेरे हृदय में उसके लिए स्नेह था ममता थी। किन्तु वह बर्फ की एक डली थी जिसे गलत पात्र में रख दिया गया था। पिघलने पर उसने जो आकार धारण किया वह उसका अपना आकार नहीं था। वह क्यों और थोड़े दिन धीरज रख कर उसकी प्रतीक्षा न कर सकी ? यदि वह अपने को रोक सकी तो ये अनसोई रातें ये अनाहार, ये अत्याचार उसे न भुगतने पड़ते। अभागिन है। अब वह रजत को अपना मुँह कैसे दिखायेगी ?

ममता और न सह सकी। वह फूट पड़ी।

'आप निर्दय हैं। आप असुर हैं। आपने क्यों मेरे अन्दर के सोए साँप को जगाया है ? अजाय इसके आपने मेरे आते क्या नहीं लगा दी। माँ माँ ! तुम मुझे अपने साथ क्यों नहीं ले गई ?"

इस आस्फोट से भूत मन्त्रार हुआ।

ममता तेजी से अपने कमरे में चली गई और किवाड़ बंद कर के रोने लगी। उसका रुदन अगाध था।

मल्लोर का स्थान आशीष ने ले लिया।

मैं चिल्लाया—

"किसी को मेरे पास रहने की आवश्यकता नहीं है। सब चले जाओ यहाँ से, सब।"

हठात माथे पर एक परिचित हाथ का स्पर्श अनुभव किया।

"कौन ?

"मैं हूँ, प्रमिला।

"तुम भी चली जाओ। हाँ, तुम भी।'



सातवाँ भाग

मेरी बीमारी अभी तक बिल्कुल ठीक नहीं हुई थी। उसने सुधार की दिशा में मोड़ अवश्य ले लिया था। विमला डिब्रूगढ़ से लौट आई थी। रजत के लिए घर में नया कमरा बन रहा था। निर्माण-कार्य का भार विमला ने अपने ऊपर ले लिया था। यदाकदा मैं भी निरीक्षण कर आता था।

रजत के आने में एक दिन शेष था। विमला मुझे कमरा दिखाने ले गई। वह सुन्दर बन गया था। कुछ चित्र भी टांग दिए गए थे। अपने ही खर्च पर उसने एक सटा हुआ बाथरूम और सैनिटरी लैट्रीन बनवा दिए थे। तनाव के बाद विमला में खुलापन आ गया था। हृदय के सारे बंधनों से मुक्ति पाकर वह अपने स्व-निर्धारित कार्यक्षेत्र में अवि-लम्ब अग्रसर होना चाहती थी।

उसने मुझसे पूछा—

"रजत के आने के बाद मैं मारघरीटा चली जाऊँगी। वहाँ युद्ध में काम आए और अपंग सैनिकों के बच्चों के लिए एक स्कूल खोला गया है। मैं उसमें काम करूँगी।"

मैंने आशीर्वाद दिया।

"अवश्य जाओ। भगवान तुम्हारा मंगल करे।"

बेचारी अपने जीवन की कठोर वास्तविकता को भूल

जाना चाहती थी। काम में लग जायेगी तो शान्ति मिलेगी और देश-सेवा भी हो जायेगी।

सारा घर रजत के स्वागत के लिए सज-सँवर गया था। मैंने कुछ आदमी लगवाकर बाग की सफाई करवा दी थी। बाग में जंगली पेड़-पौधे और घासफूस देखकर उसे ठेस पहुँचती। उसका अन्तर बहुत कोमल है। प्रमिला ने अपनी देख-रेख में घर में तेल और सफेदी[1] करवा दिए थे। बतखों के दड़बे और बकरियों का बाड़ा भी धो-पोंछ दिए गए थे। वहाँ गन्दगी देखकर वह कहता था—'मेरा पित्त फुँकने लगता है, पिताजी।'

प्रशान्त भी खूब लगन से घर का रूप सँवारने में लगा हुआ था। मैंने बैंक से कुछ रुपया निकाल कर उसे दे दिया था। कमरे में नए परदे लग गए थे। अहाते के फाटक पर सुरमई रंग हो गया था लेकिन कभी-कभी मुझे प्रशान्त के व्यवहार से आशंका होती थी, विशेष कर जब वह कमरा बंद करके अमला से बातें करता था। रजत के प्रति उसका स्नेह और श्रद्धा अटूट थे। फिर भी ऐसा प्रतीत होता था कि वह रजत को एक प्रतिद्वन्द्वी के रूप में देखता था।

बीच रात मैंने अमला को प्रमिला के कमरे की ओर जाते देखा। मुझे बताया गया कि प्रशान्त बिना पलक

---

१ घर में तेल सफेदी—असम के मकानों में लकड़ी का फ्रेम होता है और खिरकन्दे के दोनों ओर गारे या सीमेंट का लेप जिससे दीवार बनती है। लकड़ी पर तेल लगाया जाता है और दीवार पर सफेदी होती है।

झपके उसे ऐसे घूर रहा था मानो अपनी दृष्टि से उसकी देह को छलनी कर देगा। उसकी आँखों में एक भयंकर आग जल रही थी। वह कभी कुछ कहना चाहता और रुक जाता।

प्रमिला ने अमला को समझाया—

"यह कुछ नहीं है, बेटी। मर्दों को कभी-कभी ऐसा हो जाता है। औरतों को इन बातों की बहुत चिन्ता नहीं करनी चाहिए। बहुत छूट देने से मुश्किल हो जाती है।"

"छूट देने से मुश्किल हो जाती है।' यही प्रमिला का दर्शन है। मेरे मन की सारी शंकाओं और आशंकाओं को भी वह यही कहकर उड़ा देती है। हर रोग की वह यही एक दवा जानती है। उसी को एक घूंटकर अमला के गले उतार दी। उपदेश के अनुसार अमला अपने कमरे में लौट गई। मेरा अनुमान है, वे सारी रात नहीं सोए। फिर बातचीत तो नहीं सुनी लेकिन बत्ती जलती रही।

मैंने भी सारी रात बैठे-बैठे आँखों में काटी। एक ही विचार में घूमता-उलझता रहा। इसे इस प्रकार रहते देखकर रमेश की कितनी भयानक दशा होगी? इसका उपचार क्या है? ऊहापोह और अशान्ति में भोर भी नहीं दिखाई। बहुत तड़के ही मैंने बिस्तरा छोड़ दिया और सारे घर को जगा दिया। विमला को सुना कर कहा—

"रमेश को अस्पताल को नहीं ले जाओगी?"

उसने आश्चर्य से पूछा—"अस्पताल को?"

"हाँ, या मना भी अच्छा है।"

"लेकिन इलाज उनका कब पहुँचेगा यह मालूम नहीं है।

मोहनवाड़ी तक जाना होगा।'

"फिर भी देख लो।'

मुझे चिन्तित और अधीर देखकर उसने कहा—

"अच्छा, जाऊँगी।

मैं जानता था कि मेरे आग्रह से विमला को कष्ट ही होगा किन्तु मेरी यह कामना थी कि रजत अपने स्वागत में कोई कोर-कसर न पाए।

मैंने प्रशान्त को बुलवा कर कहा—

"देखो, मैं फाटक के अहाते पर उसका स्वागत करूँगा। उसके पहुँचने की सूचना मुझे दे दी जाए।"

प्रशान्त ने मेरी नब्ज़ देखी। मुझे बुखार हो आया था। कमरे में ले जाकर बिस्तरे पर लिटा दिया और मेरे पास बैठ गया। बिस्तरे से उठना निषेध कर दिया।

'ऐसी हालत में यदि आप अहाते के फाटक पर न गए तो रजत दादा बुरा न मानेगा

प्रमिला ने मेरे कपड़े बदलवा दिए। बड़े चाव से मैंने पुरानी बुशशर्ट और पतलून पहनी। सैनिक पोशाक पहनकर मुझे सदा सुख मिलता है। बालों में कंघी करके प्रमिला ने कपड़ों पर चन्दन की फुलेल लगा दी। मन को अच्छा लगा।

मैंने प्रशान्त से पूछा—

'क्या मैं दो-चार दिन और जिंदा रह सकूँगा ?"

वह हँस पड़ा।

"आप भी क्या कहते हैं ? अभी आप बहुत दिन जियेंगे।'

मैंने देखा, प्रशान्त की आँखें लाल थीं।

"क्यों, रात सोए नहीं ?"

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अन्यमनस्क हो गया। भाग्यवश वह प्रायः ऐसा हो जाता है। कोई भीतरी भय उसे मन की बात कहने से रोकता है।

"क्या बात है पुत्र ?

"कुछ नहीं, पिताजी।

"न जाने क्यों तेरे कारण एक भय मेरे मन को घेरे रहता है।

"कैसा भय ?

मैंने उसकी आँखों में देखते हुए कहा—

"तेरी एक आँख कच्ची है।

"क्या मतलब पिताजी ?

"तू मनुष्य के अन्दर का सत्य नहीं देख सकता है।"

वह मेरा तात्पर्य समझ गया। कुछ रुककर बोला—

"मैं डाक्टर हूं। मुझे मनुष्य के भौतिक शरीर, उसके हाड़-मांस का ज्ञान है। वास्तव में मैं मनुष्य के अन्दर को इससे समझने में असमर्थ हूं।'

सहसा मैंने कहा—"ममता बड़ी अच्छी लड़की है।

उसने विस्मय से मेरी ओर देखा।

"क्यों, क्या हुआ ?"

"ममता बड़ी जटिल लड़की है, पिताजी।'

"कुछ न कुछ जटिलता तो संसार के हर प्राणी में होती है।'

उसने कुछ कहना चाहा किन्तु रुक गया। मैंने उसे बताया

दिया ।

"कहो, संकोच न करो ।

"मैंने उसे जितना सत् समझा था वह उतनी सत् नहीं है ।

'यह तू कैसे कहता है ?"

"इस मामले में आप से बात करना मुझे अटपटा लगता है ।

बेटे बहू के आपसी सम्बन्धों में पिता की इस प्रकार की जिज्ञासा अशोभन थी । किन्तु अपने ज्ञान-चक्षु से मैं स्पष्ट देख रहा था कि यदि परिवार को आने वाली विपदा से बचाना है तो शोभन अशोभन का विचार तजना होगा ।

"मेरे सामने कैसी लज्जा, प्रशान्त । मैं तुम्हारा पिता हूँ । सोलह वर्ष के बाद बाप बेटा बन्धु माने जाते हैं । बोलो, संकोच न करो ।

"बड़े दुख की बात है पिताजी ।

"क्या ?"

'अमला रजत दादा को मुझ से अधिक प्यार करती है ।

'यह तूने कैसे जाना ?

'इन दिनों उसके आचरण से । उसने मेरे साथ बहुत अन्याय किया है ।'

उसने एक दीर्घ निःश्वास छोड़ी । खिड़की से हवा का एक झोंका आकर उसके मिमिक्री फ़ैशन से कटे बालों को हिला गया । उसकी नाक की नोक आरक्त हो गई ।

मैंने कहा—

"सब एक ही हाड़-मांस के बने होते हैं । अमला ने तेरे

साथ कोई अन्याय नहीं किया है।'

'आप सतही बात कहते हैं। मैं आपको सारी बात नहीं बता सकता हूँ। और बताना आवश्यक भी नहीं है।"

विपत्ति के बादल घन हो रहे थे।

एकान्त किसी काम से पड़ोस में कहीं चला गया तो मैंने अमला को बुलवाया। वह अत्यन्त साधारण वेश में थी। मुख पर विषाद की गहरी रेखायें थीं।

"क्या कर रही थी अमला ?"

मैं मालिकाबूटी और सेमसों[1] के पत्ते तोड़ रही थी। माँ ने कहा था दादा को बहुत पसन्द है।"

'आप उसे बचपन से ही खाते हैं।"

आपने मुझे किसी काम से बुलाया था ?"

'हाँ, एक बात कहनी थी।

'क्या पिताजी ?"

उस दिन बीमारी की अवस्था में तुम से पूरी बात नहीं कर सका। घर के मंगल के लिए मेरा तुम से अनुरोध है

आप क्या कह रहे हैं पिताजी ?

'तुम्हारे अन्दर मैंने रखा था स्मृति क्षमा कर सारी भूल की थी। तुम से ठीक कहा था—मैं निर्भय हूँ, मधुर हूँ।

मानव कोई भूल नहीं की। मैं सज्जन दानी को अभी तक विस्मृत नहीं कर सका हूँ। विवाह हो न हो, परस्पर का स्नेह

---

१ मालिकाबूटी और सेंदला—असम में पाए जाने वाले साग। इनकी चर्चा होती है।

भुलाया नहीं जा सकता है।"

"किन्तु तुम्हें भूलना होगा, अमला। तुम न भूलीं तो इस घर में मेल रहेगा न व्यवस्था। प्रशान्त ईर्ष्या में जला जा रहा है।

"वे ऐसी स्थिति में नहीं हैं कि मुझसे ढंग की बात कर सकें। मैं क्या करूँ ? इस शरीर पर मेरा अधिकार है, उस पर नियन्त्रण कर सकती हूँ। किन्तु मन को कैसे बाँधूँ ? एक क्षण सोचती हूँ कि एक की पत्नी होकर दूसरे की बात सोचना पाप है, तो दूसरे ही क्षण मन सब बंधन तोड़कर भाग निकलता है।'

"अमला, तुम रजत को एकदम भूल जाओ नहीं तो इस घर में कोई भयानक काण्ड हो जाएगा। प्रशान्त सनकी लड़का है। उसका स्वभाव बुद्धि-विवेक से शून्य है।

"मेरे से यह नहीं हो सकेगा पिताजी।'

तुम्हें भूलना होगा, बेटी। इस घर की भलाई के लिए तुम इतना त्याग नहीं कर सकोगी ?'

"चाहती तो हूँ किन्तु अपने को दुर्बल पाती हूँ।"

"क्या तुम प्रशान्त से प्रेम नहीं करती हो ?

'करती हूँ, लेकिन लगता है उनमें कोई अभाव है।

"कैसा अभाव ?'

'उनमें उस वस्तु का अभाव है जिसके होने से स्त्री एक-मन से अपने को पति में खो देती है। उसमें आत्मसात् हो जाती है।"

इस छोटी-सी लड़की ने प्रशान्त के हृदय को कैसी सूक्ष्मता से परख लिया था ? जिस अभाव की अनुभूति मुझे और वेलि को इतने बरसों में हुई थी उसे अमला चन्द दिनों में कैसे सहज

पहचान गई थी ?

"उसमें अन्तरात्मा नहीं है ?"

"आत्मा अन्तरात्मा की बात मैं नहीं जानती। उनका मन उदार नहीं है। उनके हृदय में मेरे लिए कोई संवेदना होती तो वे समझ पाते कि उनके प्रति बिना किसी प्रकार के कपट या अन्याय के मैं पहले व्यक्ति को भी अपने हृदय में स्थान दे सकती हूँ।'

ममता की बात युक्तिसंगत थी किन्तु प्रशान्त के कठोर हृदय में तर्क या युक्ति के लिए कोई स्थान नहीं था। वह एक पशु था।

मैं सब समझता हूँ ममता किन्तु मैं स्वार्थी हूँ। घर के मंगल और शान्ति के लिए मेरी तुमसे माँग है कि जैसे भी हो रजत को भूलकर सम्पूर्ण रूप से प्रशान्त की बन जाओ। तुम्हारा भाग्य खोटा था और हमारा भी। यदि यह मालूम होता कि रजत जीवित है तो यह दुर्घटना कभी न होती।'

मेरी छड़ी की तरह ममता मूक और निष्प्राण खड़ी रही। मैंने एक त्याग की माँग की थी जो उसकी शक्ति के परे था।

इसी समय रणचण्डी का रूप धारण किए प्रमिला ने प्रवेश किया।

'आपका यह कैसा अजब व्यवहार है। घर-बहू से ऐसी बातें करते शर्म नहीं आती ? ऐसी क्या अनहोनी हमारे घर में हो गई है ? क्यों अपने ही घर में खुद उपद्रव व झगड़े की सृष्टि करना चाहते हैं ?'

मैं समझ गया कि यह आने वाले तूफान की पूर्व सूचना

थी। ज्वर का बहाना कर सिर तक कम्बल खींचा और लेट गया। अमला अपने कमरे में चली गई।

प्रमिला शान्त नहीं हुई।

'मैंने भी आप से पहले अग्नि को साक्षी कर, किसी का पल्ला पकड़ा था। आप स्वयं बेसि के साथ घर बसाना चाहते थे। फिर क्या हुआ ? क्या हमारा आपस में मन नहीं मिला ? बेटे-बहू के साथ यह प्रसंग उठा कर आप क्या करना चाहते हैं ? घर का सर्वनाश करने पर तुले हैं ?'

जिस समस्या को मैंने इतना विकट बना लिया था उसका प्रमिला के सहज साधारण ज्ञान द्वारा इतनी सरलता से समाधान होते देखकर पहले तो मन में असन्तोष हुआ, किन्तु जब मैंने देखा कि मेरी भावुकता की अपेक्षा उसकी उपस्थित बुद्धि प्रशान्त-अमला रजत के तिकोने विवाद को निपटाने में अधिक कारगर होगी तो, उसके प्रति तिरस्कार और तर्क के प्रति विरक्ति के स्थान पर, श्रद्धा प्रदर्शित करने पर विवश होना पड़ा।

मैंने कहा—

अगर तुम समझती हो कि मेरे इस मामले में पड़ने से घर के टूटने का डर है तो इसे तुम सम्भालो। मैं निश्चिन्त हो जाऊँगा।'

उसने प्रतिरोध किया।

'अगर आप ही 'घर टूट जायेगा' 'घर टूट जायगा' की रट लगाकर विपत्ति को न्योता देना चाहते हैं तो यह निश्चय टूट जायेगा। आप बीमार हैं निश्चिन्त मन से पौढ़ रहिये।

मेरे लड़के हैं। मैं सम्भाल लूँगी। न जो कौन 'हूडू या फेंगा'[1] मेरे घर पर बैठ गया है।"

मैंने मन में शान्ति अनुभव की।

'इन बातों को तुम मुझ से ज्यादा समझती हो।"

"समझने की क्या बात है। 'जार कन्या तार विवाह'। जिसके भाग्य में जो लड़की लिखी है वह उसे ही मिलेगी।"

मैंने देखा कि प्रमिला का दृष्टिकोण बहिर्मुखी है। उसके लिए अन्तर नाम की वस्तु का कोई महत्त्व नहीं है। मेरा दृष्टि-कोण अन्तर्मुखी होता है। प्रमिला बाहरी रीतियों और मर्यादाओं के अनुकूल उन दोनों के आचरण को नियन्त्रित करना चाहती है। युग-युगान्तर से समाज इन रीतियों और मर्यादाओं का पालन करता आया है। 'जार कन्या तार विवाह' का विधान आज भी पहले जितना ही सही है। समाज के नियम और बंधन स्पष्ट, कठोर और भयानक हैं। यदि कोई यह कहता है कि मुझे मनचाही वधू नहीं मिली या मनचाहा वर नहीं मिला और इसके लिए पश्चात्ताप करता है तो वह भी समाज-विरोधी कर्म है।

मैं चाहता था कि अमला अपने मन के अनुशासन से प्रेम के उस दो-मुँहे साँप का जिसने उसे धर रखा था, एक मुँह विपरीत कर दे। यह एक महान त्याग होगा। प्रकृति का नियम है कि अमृत मंथन करके ही गरल निकाला जा सकता है। इस गरल का पान वही कर सकते हैं जो सच्चा साधना-

१ हूडू और फेंगा—जन्तु के प्रकार।

मान हैं, अधिकारी हैं—अर्थात् नीलकण्ठ हैं। मेरी हार्दिक कामना थी कि विमला नीलकण्ठ की भूमिका धारण करे। किन्तु मैं यह भी जान गया था कि किसी के मद रूपी सर्प को जगाने का परिणाम कितना भयंकर होता है।

विमला कपड़े पहन कर एअरपोर्ट जाने के लिए तैयार हो कर आई। हाथ में एक तार था।

मैंने पूछा—"किसका तार है ?

उनका।'

'किसका—आयेई का ?

'हाँ।"

'क्या लिखा है ?

'अपने देश जा रहे हैं। विदा माँगी है।"

'यह विदा नहीं चिर विदा है। उस देश में जाकर फिर आदमी की खबर नहीं मिलती है।"

'आप ठीक कहते हैं। चीन से कोई खबर मिलना मुश्किल है। उनके इस निर्णय से मुझे बहुत सुख मिला है।

'कैसे ?

'इस देश में उनके लिए कोई स्थान नहीं था।" और फिर कुछ रुककर—"इस हृदय में भी नहीं।

'तेरे सुख में हमारा सुख है बेटी।

'अच्छा मैं जाऊँ रजत को ले आऊँ।"

बाहर एक गाड़ी रुकी। विमला ने खिड़की से झाँक कर

देखा

मिलिट्री की गाड़ी है। कोई उतर रहा है।
फिर हर्ष से चिल्लाई—"रजत, रजत!'
अहाते के फाटक से ही उत्तर आया 'बाबूदेव!'
वह परिचित स्वर धरती और आकाश में गूँज गया।

मैं बिस्तरे से उठ खड़ा हुआ। विमला बाहर दौड़ी। कुछ ही क्षणों में अपने सैनिक बूटों में ठप ठप करता हुआ वह अन्दर आया और मेरी चरणधूलि ले अपने माथे से लगाई।

वही बतख के अण्डे सी आँखें उभरे हुए गाल, मीठा सम सधा हुआ शरीर अजब काल जैसा, असरदार वर्दी।

कैप्टन रजत मजूमदार।

मेरा रजत।

मुझे देखते ही रजत ने कहा—

'पिताजी, आप इतने कमजोर कैसे हो गये?'

मैंने उसे अपनी बाँहों में भर लिया और पीठ थपथपाता रहा।

'दुश्चिन्ताओं ने शरीर को जर्जर बना दिया है। थोड़ा स गाट पकड़ी है। बस तुम्हें देखने की आस में हम पिंजर में प्राण अटके रहे हैं। तुम लौट आओगे यह हमने सपने में भी नहीं सोचा था। हमने समझ लिया था कि तुम हमें छोड़ गये।"

मेरा हृदय भर आया। नेत्र सजल हो गए। इतने में

यान हैं, अधिकारी हैं—अर्थात् नीलकण्ठ हैं। मेरी हार्दिक कामना थी कि बमला नीलकण्ठ की भूमिका धारण करे। किन्तु मैं यह भी जान गया था कि किसी के अहं रूपी सर्प को जगाने का परिणाम कितना भयकर होता है।

विमला कपड़े पहन कर एअरपोर्ट जाने के लिए तैयार हो कर आई। हाथ में एक तार था।

मैंने पूछा—"किसका तार है ?

उनका।

'किसका—आर्थर का ?

'हाँ।"

क्या लिखा है ?

'अपने देश जा रहे हैं। विदा माँगी है।

"यह विदा नहीं, चिर विदा है। उस देश में जाकर फिर आदमी की खबर नहीं मिलती है।

'आप ठीक कहते हैं। चीन से कोई खबर मिलना मुश्किल है। उनके इस निर्णय से मुझे बहुत सुख मिला है।'

'कैसे ?"

'इस देश म उनके लिए कोई स्थान नहीं था।" और फिर कुछ रुककर— 'इस हृदय में भी नहीं।'

'तेरे सुख में हमारा सुख है बेटी।

'अच्छा मैं जाऊँ रजत को ले आऊँ।

बाहर एक गाड़ी रुकी। विमला ने खिड़की से झाँक कर

देखा

मिलिट्री की गाड़ी है। कोई उतर रहा है।
फिर छूप से चिल्लाई—"रजत, रजत !"
महुए के फाटक से ही उत्तर आया "वासुदेव !"
वह परिचित स्वर धरती और आकाश में गूँज गया।

मैं बिस्तरे से उठ खड़ा हुआ। विमला बाहर दौड़ी। कुछ ही क्षणों में अपने सैनिक बूटों में ठप ठप करता हुआ वह अन्दर आया और मेरी चरणधूलि ले अपने माथे से लगाई।

वही सागर के रंग सी आँखें, उभरे हुए गाल, मीठा कद, कसा हुआ शरीर, कजरारे काले केश, कलफदार वर्दी।

कैप्टेन रजत मजुमदार।

मेरा रजत।

मुझे देखते ही रजत ने कहा—
"पिताजी आप इतने कमजोर क्यों हो गये?
मैंने उसे अपनी बाँहों में थाम लिया और [illegible]

प्रमिला आ गई।

"वाह, अभी तो लड़का पहुँचा है और तुम आँखें भर रहे हो! यह तो आनन्द मनाने की घड़ी है।"

मेरी बाँहों से मुक्त हो कर रमत ने माँ का चरण स्पर्श किया।

'बीहू का प्रणाम करने में बहुत विलम्ब हो गया माँ। क्षमा करें।'

उसने अर्दली को सूटकेस लाने का आदेश दिया। जल्दी से उसे खोला और एक सुन्दर पात[1] की चादर और एक महीन धोती निकाली। चादर माँ को और धोती मुझे प्रस्तुत की।

"बड़ी जल्दी में आना हुआ है। और कुछ नहीं ला सका।"

प्रमिला ने कहा—

जो लाये हो वह क्या कम है। तुम आ गये। हमारा परम भाग्य है।

लाल बूँद के एक अमातंग का टुकड़ा उसने विमला को दिया।

बाइदेव यह तेरे लिए है।

'कहाँ खरीदा? बहुत अच्छा है।"

फिर एक रेशमी कुर्ता निकाला।

"यह प्रशान्त का है। बाइदेव तू ही रख ले। ये सब दिल्ली से लाया हूँ।

'तुम दिल्ली होकर आये हो?

1 पात—एक प्रकार का असमिया रेशम।

'हाँ, पिताजी।'

कुर्ते के नीचे एक मैसूरी रेशम की साड़ी थी। वह उसने नहीं निकाली। सूटकेस बंद करते हुए विमला से पूछा—

'नीलहीदेव'[1] के क्या समाचार हैं?'

विमला का चेहरा एकदम काला पड़ गया। मैंने संक्षेप में सारा वृत्तान्त सुनाया। सुनते ही रजत की आकृति कठोर हो गई।

'तूने ठीक किया बाप्पेन। बिल्कुल ठीक।'

फिर मेरी ओर मुख करके बोला—

"उनका जैसा असभ्य और निन्दनीय व्यवहार कहीं देखा न सुना।"

"किसकी बात कर रहा है रजत?"

"चीनियों की। आपको अपना एक अनुभव सुनाता हूँ पिताजी।"

मैं तकिये का सहारा लेकर लेट गया। विमला पाँयते बैठ गई। प्रमिला दरवाजे के पास कान लगाये खड़ी रही। रजत सामने कुर्सी पर बैठ गया।

हम लोग एक पुल की रक्षा कर रहे थे। मेरे जवान जी-जान से लड़ रहे थे। मैं दुख में था। शत्रु की सहायक टुकड़ियाँ चारों ओर से उमड़ी आ रही थीं। जब देखा कि पुल बचाने का कोई उपाय नहीं है तो जवानों को पीछे हटने का आदेश दिया। हम चाहते थे कि लगभग [illegible] पीछे हट

१ नीलहीदेव—बड़ी माँ का नाम।

"तुमने अपना उपहार देखा ?'

"नहीं ।"

विमला ने प्रशान्त को कुर्ता देते हुए कहा—

"यह लाया है रजत तेरे लिए ।'

कुर्ता ले कर प्रशान्त, रजत की आगे कथा सुनने की प्रतीक्षा में एक कुर्सी पर बैठ गया। प्रमिला बोली—"रजत, कुछ जलपान ले आऊँ ?'

'नहीं माँ । अब एक बार ही भात खाऊँगा ।'

कथा में इस व्याघात से मैं अधीर हो उठा ।

'फिर क्या हुआ, बेटे ?

"मेरी बात सुन कर उन चीनियों का पारा आसमान तक पहुँच गया। मुझे ले जाकर एक निर्जन, अंधेरी कोठरी में डाल दिया गया। उस दिन से लेकर लौटने के दिन तक मैंने अपने किसी साथी अफसर या जवान को नहीं देखा।

"इन चीनियों के लिए किसी अन्तर्राष्ट्रीय नियम या संधि का कोई मूल्य या महत्त्व नहीं है। यहाँ की तुलना में हमारी सरकार ने आपई आदि को कितना आराम से रखा था। क्यों न विमला ?"

"हाँ, देवली में सब नजरबन्दों को एक साथ रखा गया। उन्हें हर प्रकार की सुविधा दी गई। खेल-कूद, लिखाई-पढ़ाई, चिट्ठी-पत्री—सब की।

'तू वहाँ गई थी आइदेव ?

"नहीं उन्होंने लिखा था।"

"हमारी स्थिति इसके विपरीत थी। खाने को छोड़ कर सब सुविधायें बंद थीं। अगले दिन सबेरे, फुट मार्च करा कर मुझे ल्हासा की दिशा में एक कस्बे में पहुँचा दिया गया। कस्बे का नाम मुझे याद नहीं आ रहा है। कहीं लिखा हुआ है। अन्त तक मैं वहीं एकान्त कारावास में रहा। मेरी कोठरी में एक रेडियो था। उस पर केवल पेकिंग सुना जा सकता था। दिल्ली या गोहाटी नहीं। कभी-कभी अपने देश के समाचार पाने को मन बेचैन हो उठता था। लेकिन क्या करता?

रोज़ शाम, चाय पीने के बाद एक लड़की आया करती थी। वह हँस-हँस कर बातें करती। एक दिन माओ-त्से-तुंग की वन्दना में उसने एक गीत गाया। अब पूछने पर पता लगा कि माओ-त्से-तुंग ने परम ब्रह्म का पद ले लिया है। मैंने कहा—हम अपने देश में किसी को इस प्रकार नहीं पूजते हैं। वह बोली—क्योंकि वहाँ ऐसा कोई है ही नहीं। मैंने कहा—श्रीमती जी हमारे देश ने गांधी जैसे व्यक्ति को जन्म दिया है। लेकिन हम गणतंत्र में विश्वास करते हैं। हमारे लिए जनता ही राजा है। उसने मेरी गणतन्त्र वाली बात की खिल्ली उड़ाने की चेष्टा की। मुझ से सहन न हुआ। मैंने रिसिया कर कहा—तुम लोग पिंजरे के तोते के समान हो, परकटे और रट्टू। जो रटा दिया वह रट लिया। किसी ने पुचकारा और पूरा पाठ दुहरा दिया। हम मुक्त कपोत के समान हैं। सारे आकाश में अबाध उड़ान भरते हैं और आनन्द मनाते हैं।

"वह नाराज हो गई। मैं उठकर खिड़की के पास गया। उसमें आने वाली नमी ने मेरी बर्फीली हवा को पान किया

और हाथ जोड़ कर प्रकृति देवी से थोड़ी सी धूप के वरदान की याचना की। मैंने देखा, दूर कुछ नौजवानों को परेड करवाई जा रही थी। नये रंगरूट थे। शायद तिब्बती।

"खिड़की के नीचे एक बड़ी सड़क बनाई जा रही थी। पत्थर तोड़ने और डायनामाइट के विस्फोट की आवाज़ आ रही थी। मजदूर सब तिब्बती थे। उनके चेहरे बुझे हुए थे। क्रूर आकृति के चीनी सैनिकों की देखरेख में, सिर झुकाये, बेमन, बेजान से वस काम किये जा रहे थे। समझने में देर नहीं लगी कि सड़क क्या बनवाई जा रही थी।"

'क्यों ?

'सेना और रसद की आवाजाही के लिए। कुछ दिन बाद मैंने वहाँ नई सैनिक टुकड़ियाँ भी जमा होते देखीं। और फिर वहाँ एक हवाई जहाज उड़ने उतरने की पटरी भी बनने लगी।

'क्या वे फिर आक्रमण करने की सोच रहे हैं ?

'मैं नहीं जानता पिताजी किन्तु उनकी तैयारियाँ बराबर चल रही हैं।

सहसा विमला ने प्रश्न किया—

"क्या हम चीनियों का विश्वास कर सकते हैं रजत ?'

रजत ने कहा—

"जहाँ शक्ति का राज्य होता है वहाँ प्रेम करुणा, सभी—य नहीं रहते हैं। शक्ति मनुष्य को अंधा बना देती है। अच्छा बाइदव, तू ही बता आर्येई न किस आधार पर असम को चीनी इलाका समझा था ?'

"कोई युक्ति तो प्रस्तुत नहीं की थी किन्तु ऐसा सोचना उस अच्छा लगता था।

"आश्चर्य की बात है। चीनी सोचते हैं कि यदि भारत पर अपनी विचारधारा लादने के लिए उन्हें युद्ध का भी सहारा लेना पड़े तो वे तयार हैं।

क्या वे खुल्लमखुल्ला ऐसा कहते हैं ?

मुँह से न बोलें तो क्या, पेट में तो यही है।

रजत रुक गया।

एक शंका मेरे मन में मडरा रही थी।

"क्या यह सच है कि चीनियों ने तुम लोगों से अपने नगरों में मार्च करवाया परेड करवाई ?'

जहाँ मैं था वहाँ तो नहीं किन्तु अन्य युद्धबंदी कह रहे थे कि दूर दूर के नगरों में ऐसा हुआ था।

'यह सर्वथा अनुचित है।

'हाँ, जिनीवा की संधि के अनुसार युद्धबंदियों से ऐसा व्यवहार करना अनुचित है। मैंने कैम्प कमाण्डर से कहा था। सुनकर वह हँस दिया। मुझ से कई बार कम्यूनिस्ट बनने को कहा गया। मैंने उन्हें गालियाँ दीं—जी खोल कर।

दिन में दो बार वह मडरा जाती थी। कभी-कभी रात में भी आ जाती। इलाज पोठरी में जवान लड़कों का इस प्रकार आना अच्छा नहीं है, यह कह कर मैं उनसे चारपाई ताल का आग्रह करता। लेकिन वह हँसती—हँसती रहती। यहाँ सारा एग ही हँसते रहते हैं। यह हँसना भी एक दवाई है, पाया है। उनकी यही कोशिश रहती है कि दूसरे का मन-परिवर्तन

कर दें ।

"पिताजी, युद्ध के बीज ने उनके हृदय में गहरी जड़ पकड़ ली है । उसके उन्मूलन मे समय लगेगा । हमने उनका क्या बिगाड़ा था ? हम उनके मित्र थे । वे भी भाई भाई का नारा लगाते थे किन्तु उन्होंने बहाना बना कर हमारी सीमा पर आक्रमण किया । और प्रचार क्या करते हैं ? कि आक्रमणकारी हम हैं । हम जानते हैं सीमारेखा पर हमारी सेना क्यों थी कितनी थी, क्या कर रही थी । हमारी नीति की यह नींव की ईंट थी कि चीन से हमें कभी कोई संकट नहीं आयेगा वह हमारा बंधु है, हमने और उसने मिल कर पंचशील का प्रतिपादन किया है । लेकिन चीनी कुछ और ही सोचते थे ।

मैंने मत प्रकट किया—

' युद्ध बहुत बुरी चीज है बेटा । संसार से जितनी जल्दी युद्ध का अस्तित्व मिटेगा उतना ही मनुष्य जाति का कल्याण होगा । हमारे और उनके क्या कम सनिक मरे हैं ?

' पिताजी, जो युद्ध आरम्भ करता है वह पागल होता है । पागल को बांध रखने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है । इस काम में हमें किसी से सहायता लेने में आपत्ति नहीं होनी चाहिये ।

यह केप्टन रजत का ही मत नहीं है सारे देश की जनता का मत है । दुनिया शान्ति का मार्ग अपना कर प्रगति की दिशा में बढ़ना चाहती है । केवल चीन शान्ति में विश्वास नहीं करता है । युद्ध द्वारा ही मानव जाति का कल्याण हो सकता है इस सिद्धान्त को वह भौतिक बल से मनवाना चाहता है। दुनिया के

देशों को इस चुनौती का उपयुक्त प्रत्युत्तर देना होगा ।

इतनी देर रजत बराबर मेरे मुँह की ओर देखता रहा था । कथा समाप्त कर मन की बात कही ।

"पिताजी आपके रोग का उपचार क्या हो रहा है ?

प्रशान्त ने संक्षेप में उपचार की व्यवस्था बताई । सुन कर रजत बहुत आश्वस्त नहीं हुआ । एक लम्बी साँस खींची ।

आपको अनिवार्य रूप से कुछ दिन विश्राम करना चाहिये।

अब विश्राम तो उस पार के घाट पहुँच कर ही मिलेगा । मेरा समय निकट है । हाँ यह बताओ तुम कितने दिन रहोगे ?

कुछ दिन रहूँगा पिताजी ।

वह कुछ देर के लिए मौन हो गया । मैं भी विचारों में खो गया । विमला समझी मेरे मन कोई नई आशंका उदय हुई है । वह बोली –

"रजत, तू थका-माँदा है । जा, नहा धो ले ।"

वह अपने पुराने कमरे की ओर मुड़ा । विमला ने रोका ।

"अरे, तेरे लिए नया कमरा बनवाया है ।

"अच्छा ?"

प्रशान्त अपने कमरे में चला गया । उसका मन भरा-सा लगा । मैंने मन ही मन भगवान से प्रार्थना की ।

'हे दीनानाथ आज का दिन बिना कोई अमंगल घटे बीत जाये ।

स्नान से निवृत्त हो कर रजत एक महीन धोती कुर्ता पहन

कर दें।

"पिताजी, युद्ध के बीज ने उनके हृदय में गहरी जड़ पकड़ ली है। उसके उन्मूलन में समय लगेगा। हमने उनका क्या बिगाड़ा था? हम उनके मित्र थे। वे भी भाई भाई का नारा लगाते थे किन्तु उन्होंने बहाना बना कर हमारी सीमा पर आक्रमण किया। और प्रचार क्या करते हैं? कि आक्रमणकारी हम हैं। हम जानते हैं सीमारेखा पर हमारी सेना कहाँ थी कितनी थी क्या कर रही थी। हमारी नीति की यह नींव की ईंट थी कि चीन से हमें कभी कोई संकट नहीं आयेगा, वह हमारा बन्धु है, हमने और उसने मिल कर पंचशील का प्रतिपादन किया है। लेकिन चीनी कुछ और ही सोचते थे।

मैंने मत प्रकट किया—

"युद्ध बहुत बुरी चीज है बेटा। संसार से जितनी जल्दी युद्ध का अस्तित्व मिटेगा उतना ही मनुष्य जाति का कल्याण होगा। हमारे और उनके क्या कम सैनिक मरे हैं?

पिताजी जो युद्ध आरम्भ करता है वह पागल होता है। पागल को बाँध रखने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। इस काम में हमें किसी से सहायता लेने में आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

यह केवल रजत का ही मत नहीं है, सारे देश की जनता का मत है। दुनिया शान्ति का मार्ग अपना कर प्रगति की दिशा में बढ़ना चाहती है। केवल चीन शान्ति में विश्वास नहीं करता है। युद्ध द्वारा ही मानव जाति का कल्याण हो सकता है, इस सिद्धान्त को वह भौतिक बल से मनवाना चाहता है। दुनिया न

देशों को इस चुनौती का उपयुक्त प्रत्युत्तर देना होगा ।

इतनी देर रजत बराबर मेरे मुँह की ओर देखता रहा था । कथा समाप्त कर मन की बात कही ।

"पिताजी, आपके रोग का उपचार क्या हो रहा है ?

प्रशान्त ने संक्षेप में उपचार की व्यवस्था बताई । सुन कर रजत बहुत आश्वस्त नहीं हुआ । एक लम्बी साँस छोड़ी ।

"आपको अनिवार्य रूप से कुछ दिन विश्राम करना चाहिये।

"अब विश्राम तो उस पार के घाट पहुँच कर ही मिलेगा । मेरा समय निकट है । हाँ यह बताओ तुम कितने दिन रहोगे ?"

'कुछ दिन रहूँगा पिताजी ।'

वह कुछ देर के लिए मौन हो गया । मैं भी विचारों में खो गया । विमला समझी मेरे मन कोई नई आशंका उदय हुई है । वह बोली —

"रजत तू थका-मांदा है । जा नहा धो ले ।'

वह अपने पुराने कमरे की ओर मुड़ा । विमला ने रोका ।

"अरे, तेरे लिए नया कमरा बनवाया है ।'

"अच्छा ?

प्रशान्त अपने कमरे में चला गया । उसका मन भरा-सा लगा । मैंने मन ही मन भगवान से प्रार्थना की ।

हे दीनानाथ, आज का दिन बिना कोई अनगस घटे बीत जाये ।

स्नान से निवृत्त हो कर रजत एक महीन धोती कुर्ता पहन

मेरे पास आ बैठा ।

"पिताजी, अपनी डायरी लाया हूँ । आप पढ़ें । इसमें पूरी आप-बीती लिखी है ।'

मैंने बड़ी उत्सुकता से डायरी हाथ में ली ।

'उनकी कड़ी हिरासत में भी तुम डायरी रख सके !"

वह हँसा । 'हाँ किसी न किसी तरह रख ली ।"

उसकी हँसी में विजय की ध्वनि थी ।

मैं डायरी के पन्ने पलट रहा था । रजत खिड़की से बाग की ओर झाँक रहा था । इतने में मुझे दवा पिलाने के लिए हाथ में गिलास लिये ममता आई । दरवाजे में प्रवेश करते ही वह खड़ी की खड़ी रह गई । रजत ने मुड़कर ममता को देखा ।

ममता !!

ममता के सिर से चादर हटी हुई थी[1] । माँग में और माथे पर सिंदूर नहीं था । वह विवाहिता है यह स्पष्ट करने के लिए मुख पर कोई चिह्न या संकेत नहीं था ।

'अच्छा हुआ, तुम्हीं आ गईं । मैं तुम्हारे लिए एक उपहार लाया हूँ । आओ लो ।

रजत ने वह मैसूरी रेशम की साड़ी ममता के हाथ में दे दी । बिना रजत की ओर आँख उठाये मेरे हाथ में दवा का गिलास सौंप कर, उसने तत्काल वहाँ से चले जाना चाहा । रजत के मेरे कमरे में होने की उसने अपेक्षा न की थी । उसमें

---

१ असम में अनब्याही लड़कियाँ सिर पर चादर नहीं रखती हैं ।

रजत से आँख मिलाने का साहस न था।

रजत ने पूछा—

"बेसि मौसी अच्छी हैं अमला ?

अमला ने किसी प्रकार आत्म-संवरण की चेष्टा की किन्तु कर न सकी। उसकी आँखों से पानी झरने लगा। मैंने उसे अपने कमरे में जाने का आदेश दिया। वह चली गई। रजत अचरज से भर गया।

क्या हुआ पिताजी ?

मैंने बेसि की हत्या का वृत्तान्त सुनाया। उसने चुपचाप सुना। रजत में असीम धीरज है। इसी गुण के कारण मैं उस पर इतना मोहित हूँ।

उसने सरल भाव से पूछा—

इसीलिए आप लोग अमला को अपने घर ले आये हैं ?

"हाँ किन्तु

किन्तु क्या, पिताजी ?

'रजत'

कहिये पिताजी, रुक क्यों गये ?

'सब उल्टा-पल्टा हो गया, बेटा। यह मान कर कि तुम बेटा रहे हम से एक बड़ा अनचाहा काम हो गया। अदृष्ट में एक लम्बी बात छोड़ा जो हम सबको बेध गया—तुम्हें, हमें, अमला को प्रशान्त को, बेसि को—सब को।

मैंने सुना पास के कमरे में अमला सिसकियाँ भर रही थी।

'पिताजी ?"

'बताता हूँ, रजत। सुनो।"



आठवाँ भाग

मैं दुर्बल बहुत दुर्बल हो गया था। मांस पेशियाँ लटक आई थीं। आँखों की ज्योति क्षीण होने लगी थी। शरीर में ज्वर ऐसा घुस बैठा था कि निकाले नहीं निकल रहा था। नहाते समय जब मैं शरीर पर हाथ फेरता तो उभरी हुई पसलियाँ देखकर डर लगता था। पिताजी होते तो कहते— बबुराम हरि नाम सुमरने का समय आ गया है। किन्तु मैं भव-जंजाल में ऐसा फँसा था कि उद्धार का कोई मार्ग नहीं सूझता था। प्रमिला के साथ एक दिन जो घर बसाया था अदृष्ट के कुटिल आघात से उसके जीर्ण-शीर्ण होने का उपक्रम अपनी आँखों से देख रहा था।

रजत के आने का समाचार सारे नगर में फैल गया था। अनेक स्थानों और अवसरों पर उसका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। व्यक्तिगत रूप से भी लोगों ने घर आकर उसके प्रति आदर सम्मान प्रकट किया। एक साधारण सैनिक की सन्तान के लिए जनता द्वारा ऐसे कृतज्ञता ज्ञापन ने हमारे सारे परिवार को उत्फुल्ल कर दिया।

उस दिन रजत डिब्रूगढ़ गया था। दोपहर को प्रमिला मेरे

पास आकर बैठ गई। बोली—

"इस घर को शनी लग गया है।"

क्या मायने ?'

"दो लड़के हैं। दाना बोलचाल मानो है ही नहीं। एक आता है तो दूसरा आता है। दानों को साथ आना है तो आफ़त। रजत ने भात खाना छोड़ ही दिया है। पहले अमला का नाम सुन कर मुग्धमुग्ध भूल जाता था अब उसकी हवा लग जाये तो तिलमिला उठता है।'

कुछ मन्तव्य व्यक्त करना अनावश्यक मान कर मैं चुप रहा।

कल प्रशान्त से बहुत कह सुन गया है।'

'क्या उनमें कुछ झगड़ा हो गया है ? '

'और कुछ क्या होगा ? वह साड़ी विष की गांठ बन गई है।"

"कौन सी, वह मसूरी रेशम की ? '

"हाँ, प्रशान्त कहता है, अमला को वह साड़ी नहीं लेनी चाहिये थी।"

मैं विक्षुब्ध हो गया। मानव जाति में, विशेष कर पुरुषों में, अधिकारत्व की भावना अभी तक इतनी प्रबल है कि व पशु के वर्ग से ऊपर नहीं पाये हैं। नहीं तो एक साधारण साड़ी को लेकर दो सगे भाइयों के आपसी सम्बन्ध में कैसे इतना व्याघात हो सकता था।

प्रमिला, मुझ में कुछ करने की शक्ति शेष नहीं रह गई है। जीवन का अध्याय समाप्त हो रहा है। बस, कुछ शान्ति चाहिये।'

प्रमिला खीज गई।

'ऐसे कहने से कसे काम चलेगा ?"

रजत के आने के पहले प्रमिला को अपने आत्म-विश्वास पर बड़ा गुमान था। वह मेरे सामने डींग मारती थी कि अपने ऊपर अनुशासन रखो, सब मामला अपने आप सुलट जायेगा। आज उसके मनोबल की जड़ें हिल गई हैं। वह मान गई है कि मनुष्य के अन्तर की समस्या बड़ी जटिल होती है—आज के युग में तो वह जटिलतर हो गई है।

'जब तुमने हाथ-पैर डाल दिये हैं तो मैं क्या कर सकता हूं ?

'क्या करूँ मामले को जितना सरल समझी थी उतना सरल नहीं है। पानी को ऊपर से देखकर उसकी गहराई आँकना कठिन है।"

'प्रशान्त से तुमने कुछ कहा है ?

'हाँ, कि वह बेकार सन्देह न करे।'

"उसने क्या कहा ?"

'वह कहता है, उसका सन्देह दृढ़ होता जा रहा है। रजत के आने के बाद उसके प्रति ममता में संकोच बढ़ गया है।"

'उस पर भूत सवार है।"

"मैं भी ऐसा ही सोचती हूँ। आजकल ममता उससे बात करते हुए डरती है।

"मेरे पास कोई उपाय नहीं है प्रमिला। तुम्हीं ममता को समझाओ।"

"ममता और क्या कर सकती है ? उसने रजत के सामने निकलना बंद कर दिया है। वह बराबर प्रशान्त की टहल में

लगी रहती है। फिर भी उसे चैन नहीं है।

प्रशान्त के कमरे से उसका प्रलाप सुनाई दिया। शायद ममता भी वहीं थी। हम दोनों चुप हो गए। प्रशान्त कपड़े बदल कर हमारे सामने से निकल गया। वह जब कभी बाहर जाता था मेरी बीमारी के बारे में दो बात कर लेता था। आज उसने हमारी ओर देखा तक नहीं। प्रमिला किसी काम से रसोई में चली गई।

मैं रमन की डायरी के पन्ने पलटने लगा।

अधिकांश भाग में उसके बंदी जीवन की कहानी थी। इसके अतिरिक्त कहीं नगाधिराज की शुभ्र हिम-मंडित पर्वत शृंखला का सुन्दर वर्णन था कहीं तिब्बतियों के धार्मिक जीवन का मार्मिक चित्रण कहीं चीनियों के असभ्य व्यवहार के विरुद्ध विष भरे उद्‌गार, और कहीं अपने देश के प्रति स्नेह सिक्त, मनोरम आत्म-प्रकाश।

एक पृष्ठ पर लिखा था—

'आज बहुत घर की याद आ रही है। घर का वह मेरा अपना कमरा। विवाह के लिए पिताजी आदि ने कैसी धूम धाम से तैयारियाँ की होंगी। सब गुड़-गोबर हो गया। न जाने कब घर लौटना होगा। न जाने फिर कब ममता का स्नेह पाऊँगा'''

मैंने डायरी बंद कर दी।

ममता दवा पिलाने आई। मैंने कहा—

'मुझे और दवा नहीं चाहिये। जितने दिन रहना है, बिना उसके रह जाऊँगा।'

"नहीं पिताजी, ऐसे काम नहीं चलेगा। यह लीजिये। लीजिये न।'

उसने दवा का गिलास मेरे आगे बढ़ा दिया। मुझे स्मरण नहीं है कि जीवन में मैंने कभी दवा से इनकार करके रोग को बढ़ावा दिया हो। किन्तु उस दिन एक अजीब नादानी की हठ मैंने पकड़ ली।

"नहीं मैं दवा नहीं लूँगा। तुम इसे ले जाओ।'

अमला गई नहीं। गिलास आगे बढ़ाये वैसे ही खड़ी रही। उसकी दृष्टि में कातर अनुरोध था। वह एक गम्भीर आत्म-द्वन्द्व में उलझी हुई थी। उसमें नारी का अबला रूप साक्षात् मूर्तिमान देखकर मेरा मन विपण्ण हो गया। किन्तु क्या इस अबला की सहायता करने की मुझ सामर्थ्य थी ? मैं एक पिता था। पितृत्व के हित का रक्षा करना मेरा पहला धर्म था। आप कह सकते हैं मैंने स्वार्थ को धर्म मान लिया था। मैं यह भूल गया था कि दूसरे घर की लड़की लाकर मुझे उसके मानसिक सुख की भी कोई व्यवस्था करनी चाहिये।

मैंने पूछा—"क्या हुआ अमला ?

दबी, दुखी आवाज में उसने कहा—

"इस घर में अगर मैं किसी से कोई बात कह सकती हूँ तो वे आप हैं। यदि आप भी मेरी उपेक्षा करेंगे तो मैं क्या करूँगी।

'मैंने क्या किया, अमला ?"

"दवा न लेकर आप मुझे अपनी सेवा से वंचित कर रहे हैं। क्यों ? क्या इस घर में मैं किसी की सेवा नहीं कर सकती हूँ ?'

'तुम इस घर का काम करते-करते मरी जा रही हो। सबकी लगन प्राण से सेवा करती हो। व्यथ में अपने को क्यों दुखी करती हो ?"

"न जाने किस बुरी घड़ी में आप लोगों के घर में बहू बन कर आई हूँ। मेरा ही भाग्य खोटा है। किसी के काम न आ सकी।'

मैंने अनुभव किया कि अमला अपना आत्म-विश्वास बिल्कुल खो चुकी है। मन को पश्चात्ताप की टीस बेध गई।

"लाओ बेटी, दवा दो। मैं पीऊँगा।

मुँह में दवा डाल कर वह जाने को उद्यत हुई।

'ठहरो अमला, सुनो।

"कहिये।'

'प्रशान्त कहाँ गया है ?"

'कल आ रहे हैं। सवारी की पूछताछ करने गए हैं।'

'अच्छा ! कल आ रहा है ? हमें भी सूचना दे देता तो कुछ अनुचित न होता।

'किस के मन की कौन जानता है।'

'क्या मतलब ?'

'एक दिन आपने मुझे खुलकर बात करने का अधिकार दिया था। इसीलिए कह रही हूँ। उन्हें मैं अब सन्तुष्ट नहीं

कर सकती। इतने सन्देह में मेरा रहना कठिन है। मैंने कह दिया है कि मैं भी हाड़-मांस की बनी हूँ।'

'उसने क्या कहा ?'

"कहा तुम्हारे मन में जो आये करो। मैं कस आ रहा हूँ।'

"अमला, तुम भी उसके साथ चली जाओ।"

'नहीं, मैं नहीं जाऊँगी।

"क्यों, क्या तुम उसकी विवाहिता पत्नी नहीं हो ?'

'हाँ, हूँ। किन्तु अब मेरे वश की बात नहीं है। इतनी अवहेलना इतना सन्देह, इतना कटु व्यवहार मैं नहीं सह सकती। इससे तो पथ की भिखारिन होना स्वीकार है।'

"अमला यदि तुम ने थोड़ा और धीरज न रखा तो यह घर छिन्न-भिन्न हो जायगा।"

अब असम्भव है पिताजी। रजत दा से साड़ी लेने के कारण जो यातना मुझे सहनी पड़ी है वह मेरा परमात्मा ही जानता है।'

"अच्छा। मैं ही प्रद्युम्न से कहूँगा।'

"आप न कहें पिताजी। जिस व्यक्ति को अपनी पत्नी पर इतना सन्देह है उसे कर्तव्य का उपदेश देने से कोई लाभ न होगा।'

"तुम निश्चय ऐसा समझती हो ?"

'हाँ पिताजी।"

मैंने देखा यह अमला अबला नहीं है। उसमें दृढ़ता है और प्रकम्प है।

"वह तुमसे प्रेम करता है।'

मेरे बाहरी रूप से। मेरी आत्मा से नहीं।

"क्या तुम यह विवाह से पहले नहीं जानती थीं?"

"नहीं। रजत दा के आने के बाद ही इसका पहली बार परिचय मिला। यदि वे मुझे मेरे समस्त गुण दोष सहित स्वीकार कर लेते तो यह दुर्भाग्य न होता।"

मैंने और आगे प्रश्न नहीं किया। ममता चली गई।

भरी दुपहरी में मैंने अपने को गहन अंधकार से घिरा पाया।

मेरी धारणा हुई कि इस ढहते घर को अब सहारा देने से कोई लाभ न होगा। ममता का अहं और स्वार्थ का भाव इतना जागृत है कि उसे वश में करना उसका नियंत्रण, दमन करना मेरी सामर्थ्य से बाहर है। हमारा—मेरा और प्रतीक्षा का—युग बीत गया। प्रशान्त और ममता आदि की अपेक्षा कदाचित् हम में विवेक और सहिष्णुता की मात्रा अधिक थी। हम घर बसाने पर अधिक बल देते थे। ये लोग अपनी नाक ऊँची रखने में व्यस्त हैं।

धर्मात्मा प्रशान्त मेरा ज्वर देखने आया। मैं कुछ न बोला। उसके 'जा रहा हूँ' कहने पर भी कोई प्रतिवाद नहीं किया। रजत ने आकर दिन में बलराम द्वारा अपने अभिनन्दन का हाल सुनाया। उसका उत्साह बढ़ाने के लिए मैंने दो चार शब्द कह दिये। प्रशान्त के जाने के बारे में कोई उद्गार प्रकट नहीं किया। हो सकता है कि रजत ने जा मान लिया था कि नियमित अवकाश की समाप्ति पर प्रशान्त अपने काम पर लौट

रहा था। प्रमिला ने अवश्य आपत्ति की। मैंने स्पष्ट कह दिया—'प्रशान्त राम है न प्रमिला कौशल्या।'

अगले दिन सबेरे वह चला गया। ठीक सात बजे गाड़ी आई। मुझ से और प्रमिला से यथाविधि विदा ली। रजत को भी सादर नमस्कार किया। किन्तु अमला से बोला न चलते समय एक बार मुड़ कर भी देखा। वेबि के शब्द मेरे कानों में गूँज गये—'प्रशान्त पशु है।' मुझे वेबि पर क्रोध आया। जब वह जानती थी कि प्रशान्त पशु है तो अमला के साथ विवाह के लिए उसने सहमति क्यों दी? कदाचित् उसने ऐसे भविष्य की कल्पना नहीं की थी।

गाड़ी के चले जाने के बाद प्रमिला मेरे पास आई। वह बहुत उदास थी।

'वह चला गया है, अब फिर कभी घर नहीं आयेगा।

'कभी घर नहीं आयेगा?'

'हाँ।

प्रशान्त सनकी है। एक बार हठ पकड़ लो तो उसे नहीं छोड़ेगा। वह अब घर नहीं आयेगा। उसके इस युक्तिहीन निर्णय पर मुझे क्रोध आ गया। मैंने कहा—

"न आना है तो न आये।"

"सन्तान की मूर्खता पर माँ-बाप भी धीरज खो बैठें तो परिवार नष्ट हो जाता है।"

"वह पशु है नहीं तो भला बहू को यों छोड़ जाता।"

अपने प्रशान्त के पक्ष में दो शब्द कहने का नैतिक साहस

अब प्रमिला में नहीं था। ममता के लिए भी उसने कुछ नहीं कहा। प्रकट में ममता पर उसका कोई विशेष अभियोग नहीं था।

दोपहर के खाने के समय मैंने रजत में अद्भुत परिवर्तन देखा। वह बहुत प्रफुल्ल था। उसका विनोदी स्वभाव अकस्मात् फिर लौट आया था। वह हर व्यंजन को चटखारे के साथ खा रहा था और प्रशंसा करता जाता था। वह बार-बार पाकघर में छिपी ममता को पुकार कर खाने की मेज पर बुला रहा था। मैं भी वहीं अपना पथ्य—भात की कांजी—ले रहा था। ममता सावधानी से सिर ढके आई। उसकी माँग भरी थी। रजत को सब्जी परोस कर वह उल्टे पैरों पाकघर में लौट गई। अपनी प्रशंसा के आभार स्वरूप रजत एक दो शब्द की अपेक्षा करता था। न पाकर खिन्न हो गया। मैंने बात बनाने के लिए कहा—

"आज ममता बहुत उदास है।"

उस दिन रजत कहीं नहीं गया। अपने कमरे में एक असमिया उपन्यास पढ़ता रहा। शाम की चाय भी प्रमिला वहीं दे आई। रात को फिर खाने की मेज पर बैठकर उसने ममता के साथ बातचीत कर मन का संयोग स्थापित करने का अवसर ढूँढना चाहा। ममता ने कोई मौका नहीं दिया। मैं ममता के मनोबल पर मुग्ध हो गया।

रात बहुत बीत गई थी, किन्तु ममता के कमरे में बत्ती जल रही थी। मैंने सोचा दिन भर की घटनाओं के बाद अकेले कमरे में नींद नहीं आ रही होगी। उठकर गया और [illegible]

से कहा—

"अमला, सो जाओ, बेटी।

वह दरवाजा खोल कर बाहर आई। बोली—

'रजत वा कुछ उपन्यास लाये हैं। पढ़ने को भेज दिये हैं। उन्हें देख रही थी।"

"कब भेजे?"

अभी कुछ देर पहले।

मैंने ठण्डी हवा की आवश्यकता अनुभव की। दरवाजा खोल कर बराण्डे में आया।

बराण्डे के एक अँधेरे कोने में आरामकुर्सी पर बैठा हुआ रजत एकचित्त से अमला के कमरे की ओर आँखें गड़ाये था।

'सोये नहीं, रजत?'

"नहीं पिताजी, बहुत गर्मी है। यहाँ मैं ठण्डक की जगह विश्राम कर रहा हूँ।"

'तुम्हारे कमरे में पंखा नहीं है?

"है, बाहदेव दे गई है, किन्तु मुझ पंख में नींद नहीं आती है।

मैंने अनिष्ट की कल्पना की।

मैं अपने कमरे में लौट आया। थोड़ी देर बाद मैंने सुना कि अमला ने रजत के कमरे की तरफ खुलने वाली अपनी खिड़की बंद कर ली। गहरी चिन्ता की ऊब डूब में मुझे बहुत देर तक नींद नहीं आई।

सबेरे मैंने देखा रजत मुझ से कहीं पहले उठ गया था।

ममता भी रात का सब काम निपटा चुकी थी। व बाग के बारे में बात कर रहे थे। रजत ने कभी रातरानी का एक पेड़ लगाया था। वह मर गया था। रजत दुख प्रकट कर रहा था। ममता 'हाँ' 'हूँ' के अतिरिक्त और कुछ नहीं बोल रही थी। मैं बाहर निकला। पिछली[1] की सफ़ाई समाप्त कर ममता भीतर चली गई।

रजत ने पूछा— 'कैसे हैं पिताजी?'

"अच्छा नहीं है।"

और आगे बात नहीं हुई।

लौटने पर मैंने प्रमिला से कहा—

"ममता को आज से अपने कमरे में सुलाओ नहीं तो तुम्हीं उसके कमरे में जा कर सो रहना।"

"क्यों?"

मैंने अपना सन्देह प्रकट किया। प्रमिला ने हँसी में उड़ा दिया।

"इन बेकार की बातों में अपना सिर खपाते रहते हैं। ममता वैसी लड़की नहीं है।'

मैं चुप रह गया।

अगले दिन प्रमिला कहीं बाहर गई थी। रजत ने अपने अर्दली से एक किलो मारवाड़ी मिठाई[2] मँगवाई और ममता

---

१ पिछली—घर के पीछे या दीवार के बाहर निकला हुआ भाग।

२ मारवाड़ी मिठाई—असल में इसका अर्थ है बढ़िया मिठाई जैसे कलाकन्द, दूध की बर्फी, पेड़ा आदि।

के पास भिजवा कर कहलाया—एक प्याला चाय और एक प्लेट मिठाई ले आये। थोड़ी देर बाद मैंने ममता को चाय और मिठाई लेकर रजत के कमरे की ओर जाते देखा। सूरज ढलने लगा था। पास के कटहल के पेड़ पर एक कौवा एक पके हुए कटहल को कॉव कॉव करता हुआ चाव से खा रहा था। पेड़ पर और कई कौवे कटहल पर चोंच मारने की ताक में बैठे थे। ममता कमरे में बड़ी देर कर रही थी। मेरी उद्विग्नता बढ़ती गई। कटहल खाने वाले कौवे को देखने के बहाने मैं पेड़ के नीचे पहुँचा। वहाँ से मैंने देखा ममता कमरे की चीजों को सहेज रही है रजत का बिस्तरा ठीक कर रही है। प्रसंग में आपत्ति करने की कोई बात नहीं थी, किन्तु प्रशान्त के साथ मनोमालिन्य के बाद ममता को रजत की इस प्रकार सेवा करते हुए देखकर मेरे विवेक को आघात पहुँचा। उसके कमरे से बाहर आने तक मैं पेड़ के नीचे रुककर कटहल से कौवे को उड़ाता रहा। ममता सहज भाव से रसोई में चली गई। थोड़ी देर में रजत टहलने चला गया।

उस रात मेरा ज्वर तेज हो गया। सारी देह में पीड़ा हो रही थी। प्रमिला ने रजत से डाक्टर बुलाने को कहा। इतने में ममता आई। मेरी दशा देखकर बोली—

पिताजी के पेट के दर्द की दवा दे गये हैं। मुझे समझा गए हैं कि किस हालत में देनी चाहिये।

दर्द से विवश होकर मैंने कहा—

"लाओ बेटी।'

गरम पानी के साथ उसने दो गोलियाँ दीं। दस मिनट में आराम मालूम देने लगा। फिर मुझे घुमेर आ गई।

आँख खुली तो बाहर दूधिया जुन्हाई छिटकी हुई थी। खिड़की के पास खड़ा हुआ रजत उसकी अपूर्व शोभा देख रहा था। ममता मेरे पाँव दबा रही थी। प्रमिला वहाँ नहीं थी।

मैंने कहा—

"रजत जाओ, सो जाओ। बहुत रात हो गई।'

उसने मेरे माथे पर हाथ रखा। ज्वर कम हो गया था।

मैंने ममता से भी कहा—

"तुम भी सोने जा सकती हो।

वे अपने-अपने कमरे में चले गये। ममता के कमरे में बत्ती जली तो जलती ही रही। मैंने भभकाते हुए आवाज लगाई।

"ममता बत्ती बंद करके सो जाओ।"

कोई प्रतिक्रिया न हुई। मैंने फिर आवाज लगाई। बत्ती जलती रही। मैंने उठना चाहा। मुझ में सकत नहीं थी। प्रमिला को पुकारा। उससे भी कोई उत्तर नहीं मिला। बिस्तरे पर लेटा तो ऐसा लगा कि हवा के साथ कानाफूसी के शब्द तैरते आ रहे हैं। पत्ते हिलते तो ऐसा आभास होता कि रजत और ममता बातें कर रहे हैं। सारी रात मैं सो न सका। तड़के उठकर मैं बाहर आया। रजत का अर्दली टहल रहा था। उसे हाथ के इशारे से बुला कर पूछा—

"साहब को रात कैसी नींद आई ? '

मेरे प्रश्न से उसे विस्मय हुआ।

"साहब रात को बहुत देर में सोया।"

मैंने अर्दली से कहना उचित न समझा कि यह रतजगे का अभ्यास साहब के लिए नई चीज है।

उस शाम रजत के कई मित्र आए। ममता ने बड़े निःसंकोच भाव से उनकी आवभगत की। घंटों चाय का दौर चलता रहा। रात को जब ममता मेरे लिए दवा और पथ्य लाई तो मैंने देखा उसमें आनन्द समा नहीं रहा था। उसकी आँखें हँस रही थीं। उसके ललाट पर थिरकन थी। उसके ओठ फड़फड़ा उठते थे मानो मुक्ति की अव्यक्त भाषा का उच्चारण कर रहे हों।

अगला दिन बृहस्पतिवार था। गोधूली के समय प्रमिला ने लक्ष्मी पूजन किया। पूजा के समाप्त होते ही ममता नैवेद्य और निर्माल्य लेकर सीधी रजत के कमरे में चली गई। घर के बड़े होने के नाते नैवेद्य और निर्माल्य का भोग पहले मुझे मिलता था। आज ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरा स्थान रजत ने ले लिया है। मैं निम्न पंक्ति में आ गया हूँ। कदाचित् यही संसार का नियम है।

थोड़ी देर बाद जब नैवेद्य और निर्माल्य लेकर ममता मेरे कमरे में आई तो वह रजत की दी हुई मैसूरी रेशम की साड़ी पहने थी। वह बहुत सुन्दर लग रही थी। मैंने प्रसाद को माथे से लगा कर ग्रहण किया।

"प्रशान्त का कोई समाचार मिला ?

"नहीं।'

तुम से पत्र मिला है ?

"नहीं।"

"एक लिख दो।"

वह बिना कुछ कहे चली गई। दो दिन मेरा ज्वर तेज रहा। अंग प्रत्यंग निष्प्राण हो गया। जीवन एक अनिवार्य बोझ बन गया जिसे ठेलने या हल्का करने के लिए कोई भागीदार न था। अपनी असार और दुर्बल देह को लिये मैं बिस्तरे पर पड़ा रहता। पुराना रोगी मान कर घर के लोगों में सेवा के लिए जो पहला उत्साह था, वह कम होने लगा था। कई बार ऐसा होता कि मैं कराहता रहता और प्रमिला मेरी ओर मुड़ कर भी न देखती। अमला भी पहले की तरह नियमित विधि से दवा देने का आग्रह न करती थी। हाल पूछना तक भूल जाती थी। रजत का आलस्य बढ़ गया था। वह खाने तक के लिए अपने कमरे से नहीं निकलना चाहता था। कमरे में ही जाकर अमला को उसका कामकाज देखना पड़ता था।

मुझे प्रशान्त की याद आने लगी। यदि वह होता तो मेरे पथ्य और दवा की व्यवस्था भंग न होती। उस दिन दोपहर को अमला दवा पिलाने आई तो मैंने फिर पूछा—

"तुमने प्रशान्त को पत्र लिखा ?

नहीं।

"मेरे कहने पर भी तुम दो दिन में उसे एक छोटा सा पत्र नहीं लिख सकीं।"

आज भी बिना उत्तर दिये वह भीतर चली गई।

शाम को एक टैक्सी आई। उसमें रजत, प्रमिला और

अमला बैठ कर गये । नौकर से पूछने पर ज्ञात हुआ, विमला बाइदेव अस्वस्थ हैं । उन्हें देखने गये हैं । पास का घड़ियाल कई बार बजा । नौकर पथ्य लेकर आया । मन में तीव्र विक्षोभ था । इनकार कर दिया । उस नीरव निर्जन एकान्त में भगवान् से प्रार्थना की कि इस उपेक्षा और अत्याचार से मेरा शीघ्र उद्धार करे ।

रात को दस बजे रजत और अमला टक्सी म लौटे । प्रमिला वहीं रह गई । मैं क्या जानता क्यों ? अमला ने आकर पथ्य के लिए पूछा । मैंने उत्तर नहीं दिया । कपड़े से मुंह ढक, करवट लेकर पड़ा रहा । उस रात न जाने कब तक वे दोनों जागते रहे ।

सवेरे आकाश में बदली छाई थी । दो बार छींटे भी पड़ चुके थे । मेरा पुराना दमे का विकार भड़क गया । सांस नहीं समा रही थी । बार-बार खांसी झिझोड़ रही थी । रजत आकर मेरे पास बैठ गया ।

"यह कब से हो गया पिताजी ?'

"सबेरे से ।'

"डाक्टर बुलाऊं ?"

"नहीं । प्रशान्त को तार भेज दो । वह आ जाये ।"

"वह अभी ड्यूटी पर लौटा है । मैं डिब्रूगढ़ से डाक्टर ले आऊँगा ।"

मैंने बड़ी रुखाई से कहा—

डिब्रूगढ़ से डाक्टर नहीं चाहिये । मेरा अपना लड़का है ।

मैं किसी और को क्यों बुलाऊँ ?'

"किन्तु पिताजी, वह कह गया है, अब घर नहीं लौटेगा।"

'वह घर क्यों नहीं आना चाहता, इसका कारण मैं जानता हूँ। अभी उसका अवकाश शेष था। तुम लोगों के उत्पात के कारण ही वह घर से दूर चला गया है।"

रजत को चोट लगी।

"तुमने, यानी मैंने क्या किया है ?"

जिस अर्थ में मैंने उत्पात शब्द का प्रयोग किया था उसका रहस्य रजत समझ गया। वह देर तक मेरा मुँह ताकता रहा, फिर धीरे से उठा और भारी कदमों से अपने कमरे में चला गया। मुझे दुख हुआ और सन्तोष भी कि उसने मेरा संकेत ग्रहण कर लिया।

दोपहर को जब अमला चाय लेकर आई तो मैंने फिर पूछा—

'तुमने प्रशान्त को पत्र लिखा ?"

' नहीं।

मैं अपने को रोक नहीं सका। चिल्लाया—

"इतने दिन सोचता था कि सारा दोष उसी का है, लेकिन देखता हूँ कि तुम भी कम नहीं हो।"

वह पाकघर में चली गई और वहीं जाकर आत्म-गोपन कर लिया। रजत के बुलाने पर भी नहीं निकली। पाकघर की चारदीवारी में अपने को बन्द कर के वह अपना सामान्य काम करती रही। उसने भात पकाया, समय पर परोस कर

भेजा, नौकर द्वारा मेरी दवा और पथ्य की व्यवस्था की। परिचर्या में कोई त्रुटि या असावधानी नहीं की।

अगले दिन सुना, रजत अकेला मारवरीटा गया है। लगभग चार घंटे बाद वह प्रमिला के साथ लौटा। मुझ में इतना साहस नहीं था कि मैं उससे पूछता कि इतने दिन बिना कहे क्यों घर से दूर रही। घर में मेरा प्रभाव मिट चुका था। यात्रा के कपड़े बदल कर वह मेरे पास आई।

"सुनती हूँ आपकी बीमारी बढ़ गई है ?'

"ओ तुम आ गई प्रमिला ? मैं अच्छा हूँ।"

'विमला को देखने गई थी। उसे एकदम घोर का बुखार हो आया और हालत नाजुक हो गई।

'क्या हो गया है उसे ?"

'पीलिया।'

"अच्छा ? अब कैसी है ?

'कुछ अच्छी है।

'फिर तुम क्यों आ गई ?

'आपके कारण।"

"मेरे" मुझे हँसी आ गई। और कोई कारण नहीं है ? तुम्हारे विचार से इस घर में सब ठीकठाक चल रहा है ?"

'मैं पहले भी कह चुकी हूँ आप व्यर्थ का सन्देह करते हैं।'

'व्यर्थ है या अर्थ यह मैं जानता हूँ।'

"और आप यह भी जानते हैं कि इस तरह बिस्तर पर लेटे-लेटे बेटे-बहू पर सन्देह करने का क्या परिणाम हुआ है।

"क्या ?"

"रजत बस जा रहा है।"

इस समाचार से मैं अनमना हो गया। किन्तु जो मैंने स्वप्न देखा जाना था उसे असमान्य कैसे कर सकता था।

मैंने कहा—

'यदि वह इतना समझदार होते हुए भी इस प्रकार का व्यवहार करना चाहता है तो करे। मुझे कुछ नहीं कहना है।

रजत ने अपनी धमकी पूरी की। अगले दिन वह प्रस्थान के लिए तैयार हो गया। दोपहर में एक मिलिट्री की जीप आई और हमें प्रणाम कर और अमला से विदा ले वह उस पर सवार हो गया।

मैंने कहा—

"अभी छुट्टी भी। और दो चार दिन क्यों नहीं रुक जाते ?"

वह हँस कर बोला— आप सब जानते हैं पिताजी।"

प्रमिला ने रुआसी होकर पूछा—

'अब फिर कब आयेगा रजत ?'

'भगवान् जानें माँ। आया भी तो अतिथि बनकर आऊँगा। क्या इस घर में मेरे लिए कोई स्थान होगा ? और हाँ पिताजी, मैंने प्रशान्त को आने के लिए तार दे दिया है।"

यह कहकर वह चला गया।

प्रमिला देर तक क्रन्दन करती रही। एक और लड़का,

भेजा, नौकर द्वारा मेरी दवा और पथ्य की व्यवस्था की। परिचर्या में कोई त्रुटि या असावधानी नहीं की।

अगले दिन सुना, रजत अकेला मारगरीटा गया है। लगभग चार घंटे बाद वह प्रमिला के साथ लौटा। मुझ में इतना साहस नहीं था कि मैं उससे पूछता कि इतने दिन बिना कहे क्यों घर से दूर रही। घर में मेरा प्रभाव मिट चुका था। यात्रा के कपड़े बदल कर वह मेरे पास आई।

"सुनती हूँ आपकी बीमारी बढ़ गई है ?

"ओ तुम आ गई प्रमिला ? मैं अच्छा हूँ।'

'विमला को देखने गई थी। उसे एकदम जोर का बुखार हो आया और हालत नाजुक हो गई।

"क्या हो गया है उस ?

'पीलिया।'

"अच्छा ? अब कैसी है ?'

'कुछ अच्छी है।'

'फिर तुम क्यों आ गई ?

'आपके कारण।"

'ओ" मुझे हँसी आ गई। 'और कोई कारण नहीं है ? तुम्हारे विचार से इस घर में सब ठीकठाक चल रहा है ?

"मैं पहले भी कह चुकी हूँ आप व्यर्थ का सन्देह करते हैं।"

"व्यर्थ है या सार्थ यह मैं जानता हूँ।'

"और आप यह भी जानते हैं कि इस तरह बिस्तर पर लेटे बेटे-बहू पर सन्देह करने का क्या परिणाम हुआ है।

अपने अहंकार में, घर छोड़कर चला गया। मन में यह कसक थी। सब दिशाएँ अंधकारमय थीं। किन्तु मैं समझ न पा रहा था कि मैंने भूल कहाँ की थी।

उस दिन से अमला का आत्मसंगोपन और बढ़ गया प्रमिला ने अपना रोष प्रकट करने का नया ढंग अपनाया उसने घर में रहना कम कर दिया। बस, बाहर घूमती फिरती मैंने भी अपनी देह के प्रति अत्यधिक अवहेलना आरम्भ की।

दो दिन बाद प्रशान्त का तार आया। वह शीघ्र ही आ रहा था। मैंने अमला को बुलाया। उसे देखे दो दिन हो गये थे। कैसा परिवर्तन हो गया था उसमें? वह विवर्ण, कुरूप और भयावह हो गई थी।

"आपने बुलाया है?

"हाँ यह तार आया है—प्रशान्त का।"

उसने तार नहीं लिया।

"वह आजकल में आ रहा है।

'आयें।'

उसका स्वर अत्यन्त भावहीन था। चेहरे पर अकथनीय उदासी थी।

"इस बार मैं उससे आग्रह करूँगा कि वह तुम्हें ले जाये

"इसकी कोई आवश्यकता नहीं है पिताजी।

"क्यों?"

"आप से अपनी बात क्या कहूँ? अब तो भगवान् से कहूँगी।'

प्रमिला ने भी तार देखकर कोई उत्साह नहीं दिखाया। वह एक टैक्सी पकड़ कर विमला को देखने अकेली मारपगीटा चली गई।

मैंने अमला को फिर बुलाया। उसने कहला दिया कि पोखर कपड़े धोने गई है। आने में देर हो जायेगी।

मैं सारा दिन बिस्तर पर पड़ा छटपटाता रहा। परिवार में मेरी कोई मान-मर्यादा नहीं रह गई थी। कोई मेरी सुनने-मानने को तैयार नहीं था। मैं स्वयं बाहर जाने में असमर्थ था।

डाकिया आया। मेरे नाम रमेश का पत्र था। बड़ी बेसब्री से उसे खोल कर पढ़ा।

पूज्य पिताजी

मैं आज फ्रन्ट पर जा रहा हूँ। जाने से पहले आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। चीनी फिर सैन्य संग्रह करके आक्रमण की योजना बना रहे हैं। इस बार युद्ध हुआ तो पहले से कहीं अधिक भयंकर होगा। आशीर्वाद दीजिये कि मैं देश के सुहाग की रक्षा कर सकूँ। सुना है हमें नई पद्धति से युद्ध करने की, विशेष कर पहाड़ों में, ट्रेनिंग दी जायेगी।

प्रशान्त आया होगा। उससे कह दीजिएगा कि मैंने सदा के लिए अमला पर अपना अधिकार त्याग दिया है। यदि मैं कहूँ कि मैंने अमला को विस्मृत कर दिया है तो झूठ ही होगा। यह सम्भव नहीं है। मेरी स्मृति भी अमला के मन से बिल्कुल नहीं मिट सकेगी। जिसे आपने उत्पात समझा

था, यह उत्पात नहीं था। हम यह चेष्टा कर रहे थे कि नई परिस्थितियों के अनुकूल अपने को किस तरह ढालें। हृदय के सम्बन्धों को नया आधार देना बड़ा कठिन काम होता है। हम उसमें असफल रहे।

प्रशान्त ने ममता को ग़लत समझा है और आपने भी। बाहरी नियमों से अन्तर का शासन नहीं हो सकता। यह मानकर कि घर के मंगल के लिए मेरा वहाँ से चला आना ही उचित होगा

मैं पत्र और आगे नहीं पढ़ सका।

अपने चरम त्याग से रजत हम सबको पराजित कर गया।

इस त्याग के अधिकारी प्रशान्त और ममता भी हो सकते थे। किन्तु उनका हृदय इतना उदार नहीं था।

ममता अभी तक पोस्टर से नहीं लौटी थी। नौकर के हाथ पत्र मैंने वहाँ भिजवा दिया।

दिन का अवसान हो रहा था। मेरी काया बिल्कुल बिखर चुकी थी। मुझ में पलकों तक के मारने की शक्ति नहीं थी। बाहर बूँदें पड़ रही थीं। ऐसा प्रतीत होता था मानो धरती आकाश सब उदास हैं।

मैंने अनुभव किया कि मैं एक छोटे शिशु के समान हूँ। मेरा भ्रान्ति भामाध के उस पार से मेरी माँ टेर रही है—

'आओ बंधुराम अपने वासे लौट आओ।

अपनी चिकित्सा की अब कोई चाह नहीं थी। घर की करुण अवनति देखकर मन से दुख का भाव मिट गया था। यह सब उस अदृश्य का परिणाम था जो अवश्य घटता है, घट कर रहता है। कदाचित् अदृश्य की कल्पना मानव मन की उपज है। जो भी है, हमारा जीवन अपनी निश्चित परिणति की ओर अग्रसर हो रहा था।

रजत गया। मैं जानता हूँ वह कितना दृढ़-प्रतिज्ञ है। वह अब नहीं लौटेगा। प्रशान्त दो दिन के लिए आ रहा है। हो सकता है प्रमिला भी मारपसीटा से लौट आयेगी। इस परिवार के लिए उसमें कोई आसक्ति नहीं है। मुझे केवल ममता से आशा थी किन्तु अब मैं उसे भी समझने में अपने को असमर्थ पा रहा था।

प्रशान्त आया। उसका सुन्दर शरीर पर्वत की जलवायु से और निखर आया था। उसे देखकर सुख की अनुभूति हुई, किन्तु साथ ही एक अभाव के कारण वेदना की कसक भी। जब वह आया तो किसी ने बढ़ाव के फाटक पर उसका स्वागत नहीं किया। प्रकृति साक्षी है, वह फाटक सूना था।

वह अपने कमरे में नहीं गया। सामान रजत के कमरे में भेजकर सीधा मेरे पास आया। मुझे प्रणाम कर मेरी परीक्षा की। मुझे आश्वासन देने के लिए बराबर मुस्कराता रहा। कुछ प्रश्न पूछे। थैले से दवा निकाल कर मुझे दी। फिर भी मेरे पास ही रुका रहा। मैंने ममता को पुकारा। उसे संदेशा भेजा। वह अपने आत्म-गोपन में ही रही। प्रशान्त के लिए जलपान की भी चिन्ता नहीं की। मैं खीज गया। नौकर पर चिल्लाया—

"ममता बाईदेव कहाँ है ? उन्हें बुलाओ।"

नौकर हक्का-बक्का-सा खड़ा रहा।

"खड़ा क्या है? अमला वासुदेव को बुलाने क्यों नहीं जाता?"

अपनी सारी शक्ति बटोरकर उसने कहा—

"वे बाहर गई हैं।"

"बाहर कहाँ?"

"मुझे नहीं मालूम। कुछ कह नहीं गईं।"

मेरा सिर चकराने लगा। मैंने कहा—

"प्रशान्त मुझे पकड़ो। अरे मुझे क्या हो रहा है?

मुझे इतना स्मरण है कि प्रशान्त ने मुझे अपनी मजबूत बाँहों में थाम लिया था। उसके बाद क्या हुआ, मैं कह नहीं सकता।